सलिला संस्कृत

कक्षा – 9

सत्र 2021–22

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

1 पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

2 मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

3 सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

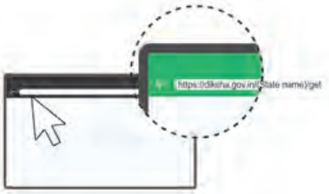

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

QYPZA1

प्रकाशन वर्ष : 2021

© संचालक, एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

मार्गदर्शक : डॉ. पूर्वा भारद्वाज, दिल्ली, डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री, दिल्ली

सहयोग : त्रिपुरारि कुमार ठाकुर

समन्वयक : डॉ. विद्यावती चन्द्राकर, एस.सी.ई.आर.टी. छ.ग.

विषय समन्वयक : बी.पी. तिवारी, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

लेखन समूह : बी.पी. तिवारी, ललित कुमार शर्मा, स्वरूपनारायण मिश्र, योगेश्वर उपाध्याय, रतिराम पटेल, पुरुषोत्तम लाल देशमुख, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

चित्रांकन : राजेंद्र ठाकुर

ले आउट : रेखराज चौरागड़े, सुरेश कुमार साहू

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

आमुख

माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों में संस्कृत भाषा के प्रति अनुराग उत्पन्न करना है। संस्कृत शिक्षण के माध्यम से छात्रों में सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना व मानवीय मूल्यों का सतत विकास करना है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के अनुरूप छात्रों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग एवं विभिन्न कौशलों के विकास पर बल दिया गया है। नवीन पाठ्यपुस्तक में छत्तीसगढ़ प्रदेश के वनों, छत्तीसगढ़ की विभूतियों, पौराणिक एवं अर्वाचीन कथाओं, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए ब्रेललिपि और पर्यावरण आदि से संबंधित पाठों का समावेश किया गया है, जैसे–छत्तीसगढस्य वनानि, श्रीगहिरागुरुः, ब्रेललिपिः आदि। पाठों में सरल संस्कृत अभ्यास प्रश्न व गतिविधियों को अधिकाधिक महत्त्व दिया गया है। छात्र संस्कृत को व्यवहारगत बनाकर संस्कृत में वार्तालाप कर सकें, ऐसा प्रयास किया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में राष्ट्रीय स्तर के महत्त्वपूर्ण शिक्षा मंडलों की पाठ्यपुस्तकों का सहयोग व मार्गदर्शन लिया गया है।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पाठ्य पुस्तक को स्वरूप प्रदान करने में जिन विशेषज्ञों की सहभागिता रही है, परिषद् उनके प्रति आभार प्रकट करती है। निश्चय ही यह पुस्तक छात्रोपयोगी सिद्ध होगी। नवीन पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने में विज्ञजनों के बहुमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

भूमिका

भाषाई इतिहास की दृष्टि से संस्कृत का इतिहास अत्यंत प्राचीन है – हजारों वर्षों का। संस्कृत यूरेशिया यानी यूरोप और एशिया भूखंड के भारोपीय भाषा परिवार की भाषा है। इसे भौगोलिक रूप से सबसे अधिक व्यापक और साहित्यिक उत्कर्ष की दृष्टि से सर्वोपरि माना जाता है।

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। इसका साहित्यिक प्रवाह वैदिक युग से आज तक अबाध गति से चल रहा है। इसकी महिमा को देखकर इसे देवभाषा कहा गया है। यह अधिसंख्यक भारतीय भाषाओं की जननी तथा सम्पोषिका मानी जाती है।

संस्कृत भाषा के प्राचीनतम ग्रंथ हैं वेद। कहा जा सकता है कि वेद आर्यों की सभ्यता और संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के एकमात्र साधन हैं। भारतवर्ष में क्षेत्रीय विषमताओं के होने पर भी जिन तत्त्वों ने इस देश को एक सूत्र में बाँध रखा है, उनमें संस्कृत भाषा तथा इसके साहित्य का योगदान रहा है। मानवीय मूल्यों के विकास की दृष्टि से भी इनका अद्वितीय महत्त्व है।

संस्कृत शिक्षण के सामान्य उद्देश्य हैं –

1. संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान कराना जिससे संस्कृत के सरलांशों को सुनकर या पढ़कर छात्र समझ सकें एवं मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति दे सकें।
2. संस्कृत साहित्य के प्रति छात्रों में अभिरुचि उत्पन्न करना।
3. संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाओं, प्राचीन और नवीन रचनाओं से छात्रों को परिचित कराना।
4. छात्रों में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए नवमी कक्षा की 'सलिला' नामक पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इसमें प्राचीन रचनाओं के साथ आधुनिक संस्कृत रचनाओं का भी समावेश किया गया है। कुछ पाठों के आरंभ में पाठ के संदर्भ दिए गए हैं ताकि छात्रों को पाठ–प्रवेश में आसानी हो। छात्रों की सुविधा के लिए 'शब्दार्थाः' शीर्षक के अंतर्गत पाठ में आए नवीन शब्दों के हिन्दी में अर्थ दिए गए हैं।

कुछ पाठों के अंत में पाठ की विषयवस्तु को पूरी तरह खोलने के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार की सामग्री दी गई है। जैसे 'भारतीवसन्तगीतिः' के अंत में सारे श्लोकों का अन्वय और अर्थ बताया गया है। वहीं 'प्रत्यभिज्ञानम्' पाठ में केवल एक श्लोक है जिसका अर्थ अंत में दिया गया है। इसी तरह 'भ्रान्तो बालः' पाठ के अंत में 'पाठयामास' या 'बोधयामास' जैसे अपेक्षाकृत रूप से कम प्रचलित शब्दों के बारे में बताया गया है।

पाठों के साथ आनेवाले चित्र न केवल रोचकता बढ़ाते हैं बल्कि विषयवस्तु को नया आयाम देते हैं। छत्तीसगढ़ की लोक शैली के पुट और चटक रंगों ने इन चित्रों को और अधिक सुंदर बना दिया है।

पाठ्यपुस्तक के अंत में व्याकरण खंड है। उसमें छात्रों की आवश्यकतानुसार संक्षेप में व्याकरण के नियमों को प्रस्तुत किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में वर्तनी से संबंधित परसवर्ण के नियमों को कहीं–कहीं शिथिल किया गया है। सामान्यतः भाषा की प्रवृत्ति सरलीकरण की होती है। इस लिए वर्तनी के सरलीकृत रूप को हमने मान्यता दी है। जैसे – 'गङ्गा' के स्थान पर 'गंगा' और 'चञ्चल' के स्थान पर 'चंचल'।

हम जानते हैं कि कक्षा में बच्चे विविध भाषाओं की संपदा लेकर आते हैं और यह बहुभाषिकता संसाधन है। इसलिए शिक्षक कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता को आधार बनाकर पाठों का अध्यापन करें।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक को छात्रों के अनुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है तथापि इसको और अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का स्वागत है।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

संस्करणम्

कक्षा – 9वीं

पाठ्यक्रम

कुल कालखण्ड – 180

पूर्णांक – 100
सैद्धांतिक – 75
प्रायोगिक / प्रायोजना कार्य – 25

पाठ्यक्रम संरचना

क्र.	इकाई का नाम	विषय वस्तु	कालखण्ड	अंक
1.	**प्रथम**		–	–
	वर्ण एवं वर्तनी	वर्ण परिचय एवं उच्चारण स्थान	15	01
2.	**द्वितीय**			
	शब्दरूप (i) स्वरान्त (ii) व्यञ्जनान्त (iii) सर्वनाम (iv) संख्या	बालक, हरि, गुरू, पितृ, रमा, मति, नदी, धेनु, मातृ, फल, वारि, मधु राजन् भवत्, आत्मन्, चन्द्रमस्,गच्छत् सर्व, यत्, इदम्, एतद्, तद्, किम् (सभी तीनों लिङ्गों में) और अस्मद्, युष्मद् 51 से 100 तक	15	03
3.	**तृतीय**			
	धातु रूप	भू, पा, पच्, खेल्, लिख्, स्था, दृश्, अस्, लभ्, सेव् (लट्,लङ्,लृट्,लोट्,विधिलिङ् लकारों में)	15	03
4.	**चतुर्थ**			
	सन्धि–परिचय एवं भेद	1. स्वर सन्धि (दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि, पूर्वरूप, पररूप, प्रकृतिभाव) 2. व्यञ्जन एवं विर्सग सन्धियों का सामान्य परिचय	15	02

क्र.	इकाई का नाम	विषय वस्तु	कालखण्ड	अंक
5.	**पञ्चम्**			
	समास–परिचय एवं भेद	तत्पुरूष, द्वन्द्व, द्विगु, अव्ययीभाव, कर्मधारय एवं बहुब्रीहि समास का परिचय	15	02
6.	**षष्ठ**			
	प्रत्यय, अव्यय एवं उपसर्ग	(क) कृदन्त – क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर् (ख) तद्धित – मतुप्, इनि, ढक्, त्व, त्रल्, तमप्, तरप्, धा, ठञ्, मयट् (ग) अव्यय व उनका अनुप्रयोग (घ) उपसर्ग	15	2+2+1+1=6
7.	**सप्तम**			
	कारक	कारकों का सामान्य परिचय, शुद्ध प्रयोग एवं उस पर आधारित अनुवाद	10	03
8.	**अष्टम**			
	रचना (i) निबन्ध (ii)वाक्य एवं अनुच्छेद	सरल संस्कृत वाक्यों में निबन्ध रचना वाक्य एवं अनुच्छेद लेखन	10	5 + 4
9.	**नवम**		10	4 + 4
	अपठित गद्यांश एवं पत्र लेखनम्	(i) पाठ्येतर गद्यांश का अभ्यास (ii) संस्कृत भाषा में पारिवारिक एवं प्रार्थना पत्रों का लेखन		
			120	**कुल अंक 37**

पाठ्यक्रम– सरंचना (पाठ्यपुस्तक खण्ड)

क्रमांक	इकाई का नाम	पाठ	पाठ्यवस्तु	कालखण्ड	अंक
	पाठ्यपुस्तक		(i) गद्यांश आधारित प्रश्न (ii) संवाद आधारित प्रश्न (iii) श्लोक आधारित प्रश्न (iv) कंठस्थ श्लोक (v) भावार्थ लेखन (vi) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (vii) संस्कृत में प्रश्नोत्तर	60	06 06 06 05 03 07 05
				60	38
			महायोग	**180**	**कुल अंक 75**
1.	प्रथम इकाई	प्रथमः पाठः द्वितीयः पाठः	वन्दना सम्भाषणम् न त्यक्तव्यः अभ्यासः		
2.	द्वितीय इकाई	तृतीयः पाठः चतुर्थः पाठः	छत्तीसगढस्य वनानि सुभाषितानि		
3.	तृतीय इकाई	पञ्चमः पाठः षष्ठः पाठः	प्रत्यभिज्ञानम् सन्तश्रीगहिरागुरूः		
4.	चतुर्थ इकाई	सप्तमः पाठः अष्टमः पाठः	ब्रेललिपिः सिकतासेतुः		
5.	पञ्चम् इकाई	नवमः पाठः	रघुवंशम्		
6.	षष्ठम् इकाई	दशमः पाठः	विश्वबन्धुत्वम्		
7.	सप्तम् इकाई	एकादशः पाठः	भारतीवसन्तगीतिः		
8.	अष्टम् इकाई	द्वादशः पाठः	लौहतुला		
9.	नवम् इकाई	त्रयोदशः पाठः	भ्रान्तो बालकः		

पाठ्यक्रम–प्रायोगिक/प्रायोजन कार्य

प्रायोगिक कार्य :–

(क) मौखिक कार्य : (कोई 2) 3×2 = 06

(i) संस्कृत में परिचय

(ii) समाचार पत्र

(iii) वार्तालाप

(iv) किसी पात्र/चरित्र पर अभिव्यक्ति

अंक विभाजन

(i) मौखिक – 06 अंक

(ii) अभिलेख –03 अंक

(iii) लिखित – 16 अंक

योग – 25 अंक

(ख) लिखित कार्य – (कोई 4) 4×4 = 16

(i) दैनिक जीवन में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों का चयन

(ii) जीवनवृत्त लेखन

(iii) नीति/सुभाषित श्लोक संकलन

(iv) चुटकलों का संग्रह

(v) ध्येय वाक्यों का संग्रह

(vi) अनुच्छेद लेखन

(vii) संयुक्ताक्षर संग्रह

(viii) दैनिक उपयोगी वस्तुओं का संस्कृत नाम

(xi) रचनाओं एवं रचनाकारों की जानकारी

(ग) प्रायोगिक अभिलेख – **03 अंक**

उपर्युक्त का लिखित प्रायोगिक पुस्तिका तैयार करना।

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ		पृष्ठ क्रमांक
	वन्दना		01
1	सम्भाषणम्	संवादपाठः	02—05
2	न त्यक्तव्यः अभ्यासः	गद्यपाठः	06—09
3	छत्तीसगढस्य वनानि	गद्यपाठः	10—13
4	सुभाषितानि	पद्यपाठः	14—17
5	प्रत्यभिज्ञानम्	गद्यपाठः	18—23
6	सन्तश्रीगहिरागुरुः	गद्यपाठः	24—27
7	ब्रेललिपिः	गद्यपाठः	28—31
8	सिकतासेतुः	गद्यपाठः	32—38
9	रघुवंशम्	पद्यपाठः	39—44
10	विश्वबन्धुत्वम्	गद्यपाठः	45—48
11	भारतीवसन्तगीतिः	पद्यपाठः	49—53
12	लौहतुला	गद्यपाठः	54—58
13	भ्रान्तो बालकः	गद्यपाठः	59—64
	व्याकरणखण्डम्		65—134

QHHIVU

वन्दना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

जो कुन्द के फूल, चन्द्रमा, बर्फ और हार के समान श्वेत हैं, जो शुभ्र वस्त्र पहनती हैं, जिनके हाथ उत्तम वीणा से सुशोभित हैं, जो श्वेत कमल के आसन पर बैठती हैं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देव जिनकी सदा स्तुति करते हैं और जो सब प्रकार की जड़ता हर लेती हैं, वे भगवती सरस्वती मेरी रक्षा करें।

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।।

शरद काल में उत्पन्न कमल के समान मुखवाली और सब मनोरथ को देनेवाली शारदा सब सम्पत्तियों के साथ हमारे मुख कमल में सदा निवास करें।

सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने।
विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तुते।।

हे महाभाग्यवती, ज्ञानस्वरूपा, कमल के समान विशाल नेत्रवाली, ज्ञानदात्री सरस्वति! मुझको विद्या दो, मैं तुमको प्रणाम करता हूँ।

QN6EXH

प्रथमः पाठः

सम्भाषणम्

यह एक सम्भाषण पाठ है जिसमें दो सम्वाद हैं। पहले सम्वाद में पीलाराम एक शिक्षक की भूमिका में हैं। इस पाठ में गोपाल,उमेश तथा पियासी छात्र–छात्रा की भूमिका में हैं। दूसरे सम्वाद में फ्लोरा और विद्यावती दो सहेलियाँ हैं।

1.

पीलारामः – भो छात्राः! अद्य किं पठितुम् इच्छा अस्ति ?

छात्राः समवेतः – श्रीमन् ! अद्य वयं विवेकानन्दविषये ज्ञातुम् इच्छामः।

पीलारामः – उत्तमम्! वयं विवेकानन्दस्य बाल्यकालविषये ज्ञास्यामः।

गोपालः – विवेकानन्दः बाल्यकाले कीदृशः आसीत् ? सः किं किं करोति स्म ?

पीलारामः – विवेकानन्दः बाल्यकाले साहसी आसीत्। तस्मै क्रीडा अतीव रोचते स्म।

गोपालः – सः कथं प्रसिद्धः जातः?

पीलारामः – सः जिज्ञासुः आसीत्। धर्मविषये तस्य जिज्ञासा कालक्रमेण बलवती जाता। भाषाध्ययनं तस्य ज्ञानवृद्धिम् अकरोत्। सः महान् वक्तारूपेणापि ख्यातिं प्राप्तवान्। :

पियासी – श्रीमन्! मम माता वदति स्म यत् बाल्यकाले विवेकान्दस्य नाम नरेन्द्रः आसीत्। किमिदं सत्यम् ?

पीलारामः – आम् सत्यम्। कालान्तरे सः विवेकानन्दनाम्ना विश्वविख्यातः अभवत्।

उमेशः – तस्य विषये अन्यः कोऽपि विशेषः?

पीलारामः – तस्य विचारः उत्तमः आसीत् यत् मानवसेवा एव ईश्वरसेवा अस्ति। तस्य प्रभावेण जनाः संघटिताः भवन्ति स्म। सः देशे विदेशे च भारतीयसंस्कृतिम् उपदिशति स्म।

पियासी – महोदय! रायपुरनगरस्य विमानपत्तनं कथं विवेकानन्दनाम्ना प्रख्यातम् ?

पीलारामः – किशोरावस्थायां विवेकानन्दः रायपुरनगरे कालं व्यतीतवान्। श्रूयते यत् सः शकटेन नागपुरतः रायपुरम् आगच्छत्। अत्र सः संगीतशिक्षाम् अगृह्णात्। तस्य स्मरणार्थमेव विमानपत्तनस्य नाम विवेकानन्द इति दत्तम्।

उमेशः – श्रीमन्! पाककलायां च विवेकानन्दस्य रुचिः आसीत्। इदमपि तथ्यम्।

पीलारामः – आम्।

2.

फ्लोरा – विद्यावति! विद्यावति!

विद्यावती – आम्।

फ्लोरा – अत्रागच्छतु। भवती किं करोति ?

विद्यावती – इदानीम् अहं स्नानं करोमि।

फ्लोरा – भवती शीघ्रं स्नात्वा आगच्छतु।

विद्यावती – किमर्थं शीघ्रम् ?

फ्लोरा – गृहे शाकं नास्ति। भवती आपणं गत्वा शाकम् आनयतु।

विद्यावती – फ्लोरे! अहं वस्त्रं धृत्वा गच्छामि।

फ्लोरा – शीघ्रं द्विचक्रिकया गच्छतु।

विद्यावती – द्विचक्रिका सम्यक् नास्ति।

फ्लोरा – किं घटितम् ?

विद्यावती – इयं भग्ना जाता। अहं धावित्वा गच्छामि।

फ्लोरा – धावित्वा मा गच्छतु। आपणे यातायातं सघनं भवति। त्वया सर्तकतापेक्षिता। शृणोतु ! सूरणस्य मूल्यम् अपि ज्ञातव्यम्।

विद्यावती – अस्तु। यावत् अहम् आगच्छामि तावत् भवती कक्षं प्रक्षालयतु।

फ्लोरा – आम्। अहं कक्षसज्जां करोमि।

शब्दार्थाः

ख्यातिम्	–	प्रसिद्धि	कालान्तरे	–	बाद में
संघटिताः	–	संगठित	विमानपत्तनस्य	–	हवाई अड्डे का
व्यतीतवान्	–	बिताया	श्रूयते	–	सुना जाता है
शकटेन	–	बैलगाड़ी से	दत्तम्	–	दिया गया
आपणम्	–	मंडी, दुकान	द्विचक्रिकया	–	साइकिल से
भग्ना	–	टूटी हुई	सूरणस्य	–	जिमिकंद का
यावत्	–	जब तक	तावत्	–	तब तक

अभ्यासः

1. रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) भो छात्राः .... किम् इच्छति ?

श्रीमन्! अद्य वयं .... विषये ज्ञातुम् इच्छामः।

विवेकानन्दः .... साहसी आसीत्।

तस्य बाल्यनाम .... आसीत्।

(ख) भवती किं ....।

.... शीघ्रं स्नात्वा आगच्छतु।

गृहे .... नास्ति।

.... भग्ना जाता।

2. सन्धिविच्छेदं कुरुत –

अतीव –

वक्तारूपेणापि –

अत्रागच्छतु –

नास्ति –

सर्तकतापेक्षिता –

3. **उदाहरणमनुसृत्य निम्नलिखितेषु क्रियापदेषु 'तुमुन्' प्रत्ययं योजयित्वा पदनिर्माणं कुरुत –**

यथा–	पठ्	+	तुमुन्	=	पठितुम्
	गम्	+	तुमुन्	=	....
	दृश्	+	तुमुन्	=	....
	दा	+	तुमुन्	=	....
	कृ	+	तुमुन्	=	....

4. **पाठे प्रयुक्तान् अव्ययपदान् चिनुत –**

यथा – अत्र

....

....

....

....

QNFAZ5

5. **स्वसहपाठिनां नामानि संस्कृते लिखत –**

यथा – गोपालः, पियासी, उमेशः

6. **तव क्षेत्रे गृहे वा कानि कानि शाकानि उपलब्धानि ?**

7. **द्विचक्रिकायाः विषये मातृभाषया पञ्चवाक्यानि लिखत।**

QNP71S

द्वितीयः पाठः

न त्यक्तव्यः अभ्यासः

कस्मिंश्चित् ग्रामे बहुकालपर्यन्तम् अनावृष्टिः आसीत्। भूमिः शुष्का जाता। पानजलस्य अपि अभावः जातः। तदा जनाः दैवज्ञस्य समीपं गत्वा विचारितवन्तः। दैवज्ञः ग्रहगतिं परिशील्य उक्तवान् "न केवलम् अस्मिन् वर्षे अपि तु आगामिवर्षत्रयपर्यन्तमत्र वृष्टिः न भविष्यति" इति।

तत् श्रुत्वा ग्रामवासिनः सर्वे जीवनार्थं यत्र कुत्रापि गतवन्तः। स ग्रामः एव निर्जनः जातः। परन्तु तस्मिन् अपि काले तस्य ग्रामस्य एकः कृषकः तत्र स्थितवान्। जलाभावेऽपि सः प्रतिदिनं स्वशुष्कक्षेत्रं कर्षन् आसीत्।

एकदा आकाशे एकः मेघः **सञ्चरन्** आसीत्। सः कृषकं दृष्ट्वा आश्चर्यचकितः सन् तम् अपृच्छत्– हे कृषक! अत्र त्रिवर्षपर्यन्तं वृष्टिः न भविष्यति इति किं भवता न श्रुतम्? तत्कारणेनैव सर्वे जनाः ग्रामं परित्यज्य यत्र कुत्रापि गताः। तथापि भवान् किमर्थम् इदं शुष्कं क्षेत्रं वृथा कर्षति" इति।

तदा कृषकः अवदत्– ''सर्वे विषयाः मया ज्ञाताः एव। किन्तु त्रिवर्षं यावत् यदि अहं कृषिकार्यं न करोमि तर्हि त्रिवर्षानन्तरं यदा वृष्टिः भविष्यति तदा मम कृषिकार्यं विस्मृतं भवेत्। तावता मम क्षेत्रकर्षणस्य अभ्यासः एव नष्टं भवेत्। अतएव अस्य कार्यस्य विस्मरणपरिहारार्थम् अहम् इदानीमपि कर्षामि'' इति।

तत् श्रुत्वा मेघः ''साधु, साधु'' इति वदन् चिन्तितवान्– ''यदि अहमपि त्रिवर्षं यावत् न वर्षामि तर्हि मया अपि वर्षणं विस्मृतं भवेत्। अतः अहम् अधुना एव वर्षामि'' इति।

ततः सः झटिति सर्वान् मेघान् आहूय ''कृपया वर्षन्तु'' इति प्रार्थितवान्। तदा तत्र सुवृष्टिः अभवत्। सर्वेऽपि ग्रामवासिनः आनन्देन स्वक्षेत्रे कृषिकार्यम् आरब्धवन्तः।

एतस्मिन् सन्दर्भे वयम् इदं पद्यं स्मरामः –

अभ्यासो न हि त्यक्तव्यः अभ्यासो हि परं बलम्।
अनभ्यासे विषं विद्या अजीर्णे भोजनं विषम्।।

शब्दार्थाः

करिमंश्चित् ग्रामे	–	किसी ग्राम में
अनावृष्टिः	–	अकाल
तदा	–	तब
दैवज्ञः	–	दैव को जाननेवाला
स्थितवान्	–	रहता था
कृषकः	–	किसान (कृषिकः व कर्षकः का अर्थ भी किसान होता है)
कर्षामि	–	जुताई करता हूँ
वदन्	–	बोलता हुआ
चिन्तितवान्	–	सोचा
वर्षन्तु	–	बरसें
प्रार्थितवान्	–	प्रार्थना की
ग्रामवासिनः	–	गाँववाले
साधु साधु	–	अच्छा अच्छा
सुवृष्टिः	–	अच्छी बारिश

अभ्यासः

1. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत –

क) भूमिः कथं शुष्का अभवत् ?

ख) दैवज्ञः ग्रहगतिं परिशील्य किम् उक्तवान् ?

ग) अनावृष्टौ ग्रामवासिनः किम् अकुर्वन् ?

घ) कृषकः शुष्कं क्षेत्रं किमर्थं कर्षति ?

ड) मेघः सर्वान् मेघान् आहूय किं प्रार्थनाम् अकरोत् ?

2. पाठं दृष्ट्वा रिक्तस्थानानि पूर्तिं कुरुत –

क) आगामिवर्षत्रयपर्यन्तमत्र .... न भविष्यति।

ख) तस्य ग्रामस्य एकः .... तत्र स्थितवान् ।

ग) इदं शुष्कं क्षेत्रं .... कर्षति ।

घ) यदा वृष्टिः भविष्यति तदा मम कृषिकार्यं .... भवेत्।

ड.) आनन्देन स्वक्षेत्रे कृषिकार्यं ....।

3. अधोलिखितानि कथनानि कः कं च कथयन्ति –

कथनानि	कः	कम्/कान्
क) अत्र त्रिवर्षपर्यन्तं वृष्टिः न भविष्यति	....	....
ख) सर्वे विषयाः मया ज्ञाताः एव	....	....
ग) साधु, साधु	....	....
घ) अहम् अधुना एव वर्षामि	....	....
ड.) कृपया वर्षन्तु	....	....

4. स्तम्भमेलनं कुरुत –

1) सुवृष्टिः	–	परं बलम्
2) पानजलस्य	–	अभवत्
3) शुष्कं क्षेत्रम्	–	विचारितवन्तः
4) ग्रामवासिनः	–	कर्षति
5) अभ्यासो हि	–	अभावः

5. अधोलिखितेषु पदेषु ल्यप् प्रत्ययान्त–पदान् चिनुत –

अभ्यासः, परिशील्य, गत्वा, उक्तवान्, दृष्ट्वा, परित्यज्य, आहूय

6. अधोलिखितेषु वाक्येषु क्रियापदानि लोट्लकारे परिवर्तयत–

यथा – अनावृष्टिः न भविष्यति।	–	अनावृष्टिः न भवतु।
क) कृषकः शुष्कं क्षेत्रं कर्षति ।	–	....
ख) मेघाः अत्र वर्षन्ति।	–	....
ग) कदापि वर्षणं न विस्मरति।	–	....
घ) कृषिकार्यम् आरभते।	–	....
ङ.) वयम् पद्यं स्मरामः।	–	....

QNY33F

7. अधोलिखिते श्लोके पदपूर्तिं कुरुत –

अभ्यासो न हि ....अभ्यासो .... परं बलम्।

................विषं विद्या अजीर्णे ....।।

QP7Y53

तृतीयः पाठः

छत्तीसगढप्रदेशस्य वनानि

छत्तीसगढप्रदेशः वनानां दृष्ट्या समृद्धः वर्तते। छत्तीसगढस्य सकलक्षेत्रफलस्य 44.2 प्रतिशतानि क्षेत्राणि वनाच्छादितानि सन्ति। एतानि वनक्षेत्राणि राष्ट्रस्य वनक्षेत्राणां अनुमानितम् 12.26 प्रतिशतानि।

वनम् अस्माकं महान् निधिः अस्ति। न केवलं वनानां रमणीयता मनांसि रञ्जयति, अपितु अनेन पर्यावरणमपि सुरक्षितं भवति। ये घटकाः पारिस्थितिकितन्त्रं प्रभावयन्ति, तेषु घटकेषु वनं सर्वप्रमुखमस्ति। वस्तुतः वनं वसुन्धरायाः सुरक्षावलयमस्ति। वृष्टेः मुख्यं कारणं वनमेव अस्ति। इदं शुद्धं वायुं प्रददाति। मृत्तिकायाः अपर्दनं न्यूनीकरोति। जगतः तापमानस्य नियन्त्रणं करोति। अतएव वनसंरक्षणम् अत्यावश्यकमस्ति।

विविधाभिः वनसम्पद्भिः सम्पन्नानि वनानि प्रदेशे विद्यन्ते। विधिकप्रबन्धदृष्ट्या वनानि त्रिवर्गेषु विभक्तानि – आरक्षितं वनं, संरक्षितं वनम् अवर्गीकृतं वनं च।

आरक्षितं वनम् – आरक्षितवनस्य प्रबन्धनं सुव्यवस्थितं भवति। अस्य सुरक्षायाः विकासस्य च निश्चिताः योजनाः भवन्ति। राष्ट्रियोद्यानम् अभयारण्यं च आरक्षितं वनम् एव स्तः।

संरक्षितं वनम् – संरक्षितवने संरक्षणेन सह उत्पादनाय गतिविधयः क्रियान्विताः भवन्ति। वनविभागः योजनानुसारं वैज्ञानिकविधिना वनोत्पादं प्राप्नोति। अत्र उत्पादनेन सह वनसंरक्षणं प्रथमं लक्ष्यमस्ति।

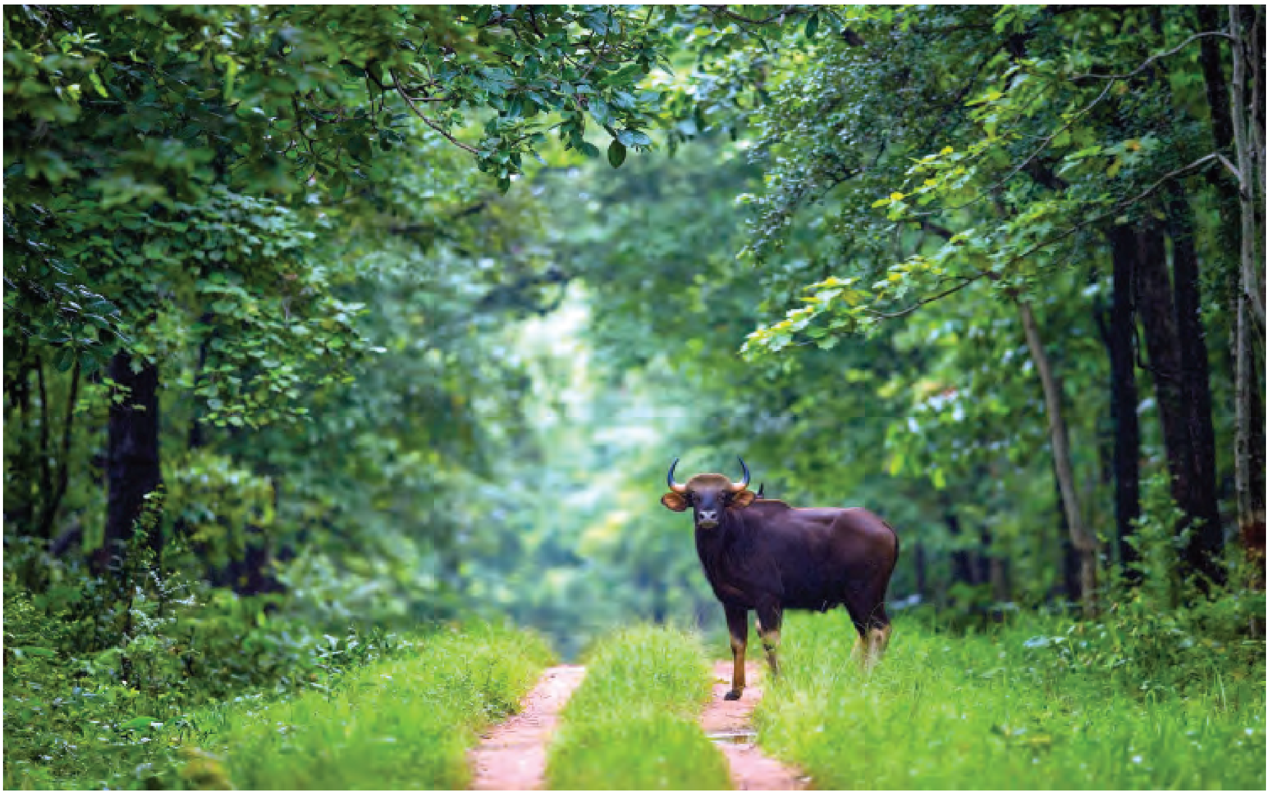

अवर्गीकृतं वनम् – वनभूमेः व्यवस्थापनसमये यस्य वनक्षेत्रस्य वर्गीकरणं नाभवत् तदेव अवर्गीकृतवनम्। अत्र सर्वकारेण नास्ति कोऽपि प्रतिबन्धः। अस्मिन् वनक्षेत्रे जनार्थं काष्ठसंग्रहणस्य पशुचारणस्य च स्वतन्त्रता अस्ति।

छत्तीसगढप्रदेशस्य वनानि उष्णकटिबन्धीयश्रेण्यां वर्तन्ते। एतानि वनानि अति गहनानि सन्ति। वनानां गहनादेव कानिचित् क्षेत्राणि तु दुर्गमानि। प्रदेशस्य उत्तरदक्षिणभागयोः सघनानि वनानि सन्ति, परन्तु मध्यभागे विरलानि। एतेषां विशेषता अस्ति यत् तानि सर्वाणि पर्णपातिवनानि सन्ति। तत्र मुख्यतः वृक्षाणां द्वे प्रजाती स्तः – सालः सागौनश्च। अन्याः प्रजातयः अपि सन्ति – खदिरः, तेन्दुः, वंशः, आमलकी, साजा, बीजा, धवरा, कर्रा, हल्दुः मधुकश्चेति।

उपलब्धासु वनस्पतिषु ओषधिपादपाः प्रचुरमात्रायाम् उपलभ्यन्ते। प्रदेशस्य बहवः उद्योगाः वनोत्पादने एव अवलम्बिताः, यथा काष्ठं, कर्गदं, हरीतिकी, वंशं खदिरः च। वनानि एतानि जनेभ्यः आजीविकायाः साधनानि सन्ति।

वन्यजीवानां बहुलता विविधता च प्रदेशस्य गौरवम्। एतेषाम् उपलब्धता तत्क्षेत्रे वनानां सुस्थितिः द्योतते। एतेषु वन्यजीवेषु प्रमुखतः व्याघ्रः, तरक्षुः, वनमहिषः, हरिणः, साम्भरः, गौरः, वनवराहः, भल्लूकः, पर्वतसारिका, नीलगौः चिंकारादयः चेति। वनमहिषः राजकीयपशुः पर्वतसारिका राजकीयपक्षी च घोषितौ। वन्यजीवानां रक्षणार्थमपि वनसंरक्षणं आवश्यकम्।

नूनं वनं जीवानाम् आश्रयस्थलमस्ति। तस्मात् कारणात् प्रदेशे राष्ट्रियोद्यानानि अभयारण्यानि च संस्थापितानि सन्ति।

शब्दार्थाः

दृष्ट्या	–	दृष्टि से	वनाच्छादितानि	–	वन से ढँका हुआ
रमणीयता	–	सुन्दरता	रञ्जयति	–	प्रसन्न करती है
पारिस्थितिकितन्त्रम्	–	पर्यावरण तन्त्र को	घटकाः	–	कारक
वसुन्धरायाः	–	पृथ्वी का	सुरक्षावलयम्	–	सुरक्षा कवच
मृत्तिकायाः	–	मिट्टी का	अपर्दनम्	–	कटाव
न्यूनीकरोति	–	कम करता है	जगतः	–	संसार का
वनसम्पद्भिः	–	वन सम्पत्तियों से	विधिकप्रबन्धदृष्ट्या	–	व्यवस्था की दृष्टि से
प्रतिबन्धः	–	रोक	उष्णकटिबन्धीय–श्रेण्याम्	–	उष्णकटिबन्ध की श्रेणी में
आमलकी	–	आँवला	मधुकः	–	महुआ
कर्गदम्	–	कागज	हरीतिकी	–	हर्रा
वंशः	–	बाँस	खदिरः	–	खैर
उपलभ्यन्ते	–	उपलब्ध होते हैं	तरक्षुः	–	तेंदुआ
वनमहिषः	–	वनभैंसा	भल्लूकः	–	भालू

पर्वतसारिका	–	पहाड़ी मैना	नीलगौः	–	नीलगाय
सुस्थितिः	–	अच्छी स्थिति	द्योतते	–	प्रतीत होता है
नूनम्	–	निश्चय ही			

अभ्यासः

1. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत –

क) छत्तीसगढप्रदेशः केन समृद्धः ?

ख) अत्र वनानि कति वर्गेषु विभक्तानि ?

ग) अवर्गीकृतवनस्य का विशेषता ?

घ) एतानि वनानि कस्यां श्रेण्यां वर्तन्ते ?

ड.) वनस्य महत्त्वं किम् ?

2. हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत –

क) वनम् अस्माकं महान् निधिः अस्ति।

ख) जगतः तापमानस्य नियन्त्रणं करोति।

ग) मुख्यतः वृक्षाणां द्वे प्रजाती स्तः।

घ) वनानि जनेभ्यः आजीविकायाः साधनानि सन्ति।

ड.) अत्र गहनानां वनानां प्रचुरता अस्ति।

3. एतेषां शब्दानां विभक्तिं वचनं च लिखत –

	विभक्तिः	**वचनम्**
प्रतिशतानि	....	....
वर्गीकरणम्	....	....
अपर्दनम्	....	....
एतानि	....	....
आजीविकायाः	....	....
	....	....

4. रेखांकित–पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –

क) छत्तीसगढप्रदेशः वनानां दृष्ट्या समृद्धः वर्तते।

ख) अत्र सर्वकारेण नास्ति कोऽपि प्रतिबन्धः।

ग) वनानि उष्णकटिबन्धीयश्रेण्यां वर्तन्ते।

घ) वन्यजीवानाम् बहुलता विविधता च प्रदेशस्य गौरवम्।

ड.) नूनं वनं जीवानाम् आश्रयस्थलमस्ति।

5. रिक्तस्थानानि पूरयत –

उदन्ती अभ्यारण्यम् .... मण्डले स्थितम्।

धमतरीमण्डले .... अभ्यारण्यम् अस्ति।

पामेड अभ्यारण्यम् .... मण्डले अस्ति।

कवर्धामण्डले .... अभ्यारण्यम् अस्ति।

QPGU6Q

6. छात्र छत्तीसगढ़ के मानचित्र में वनक्षेत्रों की पहचान करें।

7. अपने इलाके में पाए जाने वाले वन्य पशु–पक्षियों के नामों को सूचीबद्ध करें।

छत्तीसगढप्रदेशस्य प्रमुखानि अभयारण्यानि

उदन्ती अभयारण्य	–	*गरियाबंद मण्डल*
सीतानदी अभयारण्य	–	*धमतरी मण्डल*
बारनवापारा अभयारण्य	–	*महासमुन्द मण्डल*
भैरमगढ़ अभयारण्य	–	*बीजापुर मण्डल*
पामेड़ अभयारण्य	–	*बीजापुर मण्डल*
अचानकमार अभयारण्य	–	*मुंगेली मण्डल*
सारंगढगोमरदा अभयारण्य	–	*रायगढ मण्डल*
बादलखोल अभयारण्य	–	*जशपुर मण्डल*
सेमरसोत अभयारण्य	–	*सरगुजा मण्डल*
तमोरपिंगला अभयारण्य	–	*सरगुजा मण्डल*
भोरमदेव अभयारण्य	–	*कवर्धा मण्डल*

QPQQ8D

चतुर्थः पाठः

सुभाषितानि

तपो बलं तापसानां ब्रह्म ब्रह्मविदां बलम्।
हिंसा बलमसाधूनां क्षमा गुणवतां बलम्।।1।।

उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं जपतो नास्ति पातकम्।
मौने च कलहो नास्ति नास्ति जागरिते भयम्।। 2।।

विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतद्, ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ।। 3।।

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।। 4।।

सुखार्थिनः कुतो विद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्।। 5।।

छिन्नोऽपि रोहति तरुः क्षीणोऽप्युपचीयते पुनश्चन्द्रः।
इति विमृशन्तः सन्तः संतप्यन्ते न लोकेषु।। 6।।

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते निघर्षणच्छेदनतापताडनैः।
तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा।। 7।।
न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा न ते वृद्धा ये न वदन्ति धर्मम्।
नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति, न तत् सत्यं यच्छलेनाभ्युपेतम्।। 8।।

पुष्पे गन्धं तिले तैलं काष्ठेऽग्निं पयसि घृतम्।
इक्षौ गुडं तथा देहे पश्याऽऽत्मानं विवेकतः।। 9।।

सत्येन धार्यते पृथिवी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।। 10।।

शब्दार्थाः

ब्रह्मविदां	–	ब्रह्मज्ञानियों का
पातकम्	–	पाप
परेषां	–	दूसरों के
परिपीडनाय	–	दूसरों को दुख देने के लिए
खलस्य	–	दुष्ट का
भुवि	–	पृथ्वी पर
रोहति	–	चढ़ता है, बढ़ता है
उपचीयते	–	बढ़ता है
विमृशन्तः	–	विचार करते हुए
मृगाः	–	पशु (हिरण आदि)
अभ्युपेतम्	–	युक्त
इक्षौ	–	ईंख में
धार्यते	–	धारण किया जाता है

अभ्यासः

1. अधोलिखितेषु शब्देषु उचितं सन्धिं चिनुत –

छिन्नोऽपि	=	छिन्नः+अपि / छिन्ना+अपि
क्षीणोऽप्युपचीयते	=	क्षीणः+अप्युपचीयते / क्षीणः+अपि+उपचीयते
पुनश्चन्द्रः	=	पुनः+चन्द्रः / पुनश्+चन्द्रः
मृगाश्चरन्ति	=	मृगाः+चरन्ति / मृगाः+च+रन्ति
नासौ	=	ना+सौ / न+असौ
यच्छलेनाभ्युपेतम्	=	यत्+छलेन+अभि+उपेतम् / यच्+छलेना+अभि+उपेतम्

काष्ठेऽग्निम् = काष्ठे+अग्निम् / काष्ठ+अग्निम्

वायुश्च = वायुः+च / वायु+च

पश्याऽऽत्मानम् = पश्याऽऽत्मा+नम् / पश्य+आत्मानम्

2. निम्नाङ्कितप्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –

क) तापसानां बलं किम् अस्ति ?

ख) कस्मिन् कलहो नास्ति?

ग) छिन्नोऽपि कः रोहति ?

घ) सभायाः का परिभाषा ?

ङ.) केन धार्यते पृथिवी ?

3. अधोप्रदत्तानां प्रश्नानाम् उत्तराणि हिन्दीभाषया लिखत –

क) खलस्य शक्तिः किमर्थं भवति?

ख) विद्यार्थिनः किं त्यजेत् ?

ग) चन्द्रः कथम् उपचीयते ?

घ) कनकं कैः परीक्ष्यते?

ङ.) विवेकतः आत्मानं कुत्र पश्य ?

4. शुद्धं विकल्पं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

क) खलस्य धनं .... भवति। (मदाय, मदेन, मदम्)

ख) विद्यार्थिनः सुखम्............................ । (अस्ति, नास्ति, सन्ति)

ग) .... पुरुषः परीक्ष्यते। (चत्वारः, चतसृभिः, चतुर्भिः)

घ) यत्र वृद्धाः न सन्ति .... सभा नास्ति। (सः, सा, तत्)

क) सर्वं सत्ये .... । (प्रतिष्ठितम्, प्रतिष्ठितः, प्रतिष्ठितानि)

5.तालिकामनुसृत्य पदानि रचयत –

शब्दः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	विभक्तिः
क्षमा	क्षमा	क्षमे	क्षमाः	प्रथमा
तरु	…………	…………	…………	द्वितीया
सभा	…………	…………	…………	तृतीया
सत्य	…………	…………	…………	चतुर्थी
बन्धु	…………	…………	…………	पंचमी
चतुर् (चार)	…………	…………	…………	षष्ठी
अदस् (नपु.)	…………	…………	…………	सप्तमी

6.'क' वर्गं 'ख' इति वर्गेन सह योजयत।

'क' वर्ग		'ख' वर्ग
सत्येन तपति	–	दारिद्र्यम्
जागरिते नास्ति	–	धनक्षयम्
परद्वेषात् भवति	–	भयम्
रक्षणाय भवति	–	रविः
उद्योगे नास्ति	–	शक्तिः

QPZLA1

7. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितपदेषु प्रकृतिप्रत्ययविभागं/संयोगं कुरुत –

यथा	– जागरितम्	=	जागृ + क्त
कृ	+ क्त	=	………………
………	+ क्त	=	छिन्नः
क्षि	+ क्त	=	………………
वृध्	+ ……	=	वृद्धः
प्रति	+ ……… + क्त	=	प्रतिष्ठितम्

पञ्चमः पाठः

प्रत्यभिज्ञानम्

प्रस्तुत पाठ भासरचित 'पञ्चरात्रम्' नामक नाटक का अंश है। इसमें महाभारत के विराट पर्व की कथा है। अपने अज्ञातवास में पाण्डव वेष बदलकर राजा विराट के राज्य में रह रहे थे। दुर्योधन आदि कौरव वीरों ने राजा विराट की गायों का अपहरण कर लिया। राजा विराट का पुत्र उत्तर है। वह बृहन्नला के छद्मवेष में रहनेवाले अर्जुन को अपना सारथि बनाता है और कौरवों से युद्ध करने जाता है। कौरवों की ओर से अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु भी युद्ध करता है। युद्ध में कौरवों की पराजय होती है। इसी बीच विराट को सूचना मिलती है कि वल्लभ के छद्मवेष में रहनेवाले भीम ने रणभूमि में अभिमन्यु को पकड़ लिया है। अभिमन्यु भीम तथा अर्जुन को नहीं पहचान पाता और उनसे उग्र होकर बातचीत करता है। दोनों अभिमन्यु को महाराज विराट के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। अभिमन्यु उन्हें प्रणाम नहीं करता। उसी समय राजकुमार उत्तर वहाँ पहुँचता है। वह अर्जुन तथा भीम आदि पाण्डवों के छद्मवेष का रहस्योद्घाटन करता है।

भटः – जयतु महाराजः।

राजा – अपूर्व इव ते हर्षो ब्रूहि केनासि विस्मितः ?

भटः – अश्रद्धेयं प्रियं प्राप्तं सौभद्रो ग्रहणं गतः।।

राजा – कथमिदानीं गृहीतः ?

भटः – रथमासाद्य निश्शङ्कं बाहुभ्यामवतारितः।

(प्रकाशम्) इत इतः कुमारः।

अभिमन्युः – भोः को नु खल्वेषः? येन भुजैकनियन्त्रितो बलाधिकेनापि न पीडितः अस्मि।

बृहन्नला – इत इतः कुमारः।

अभिमन्युः – अये! अयमपरः कः विभात्युमावेषमिवाश्रितो हरः।

बृहन्नला – आर्य, अभिभाषणकौतूहलं मे महत्। वाचालयत्वेनमार्यः।

भीमसेनः – (अपवार्य) बाढम् (प्रकाशम्) अभिमन्यो!

अभिमन्युः – अभिमन्युर्नाम ?

भीमसेनः – रुष्यत्येष मया त्वमेवैनमभिभाषय।

बृहन्नला – अभिमन्यो!

अभिमन्युः – कथं ? कथम्? अभिमन्युर्नामाहम्। भोः! किमत्र विराटनगरे क्षत्रियवंशोद्भूताः नीचैः अपि नामभिः अभिभाष्यन्ते अथवा अहं शत्रुवशं गतः। अतएव तिरस्क्रियते।

बृहन्नला – अभिमन्यो! सुखमास्ते ते जननी ?

अभिमन्युः – कथं कथम् ? जननी नाम ? किं भवान् मे पिता अथवा पितृव्यः ? कथं मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां कथां पृच्छसे ?

बृहन्नला – अभिमन्यो! अपि कुशली देवकीपुत्रः केशवः ?

अभिमन्युः – कथं कथम्? तत्रभवन्तमपि नाम्ना। अथ किम् अथ किम् ?

(उभौ परस्परमवलोकयतः)

अभिमन्युः – कथमिदानीं सावज्ञमिव मां हस्यते ?

बृहन्नला – न खलु किञ्चित्।

पार्थं पितरमुद्दिश्य मातुलं च जनार्दनम्।
तरुणस्य कृतास्त्रस्य युक्तो युद्धपराजयः।।

अभिमन्युः – अलं स्वच्छन्दप्रलापेन! अस्माकं कुले आत्मस्तवं कर्तुमनुचितम्। रणभूमौ हतेषु शरान् पश्य, मदृते अन्यत् नाम न भविष्यति।

बृहन्नला – एवं वाक्यशौण्डीर्यम्। किमर्थं तेन पदातिना गृहीतः ?

अभिमन्युः – अशस्त्रं मामभिगतः। पितरम् अर्जुनं स्मरन् अहं कथं हन्याम्। अशस्त्रेषु मादृशाः न प्रहरन्ति। अतः अशस्त्रोऽयं मां वञ्चयित्वा गृहीतवान्।

राजा – त्वर्यतां त्वर्यतामभिमन्युः।

बृहन्नला – इत इतः कुमारः। एष महाराजः। उपसर्पतु कुमारः।

अभिमन्युः – आः। कस्य महाराजः ?

राजा – एह्येहि पुत्र! कथं न मामभिवादयसि ? (आत्मगतम्) अहो! उत्सिक्तः खल्वयं क्षत्रियकुमारः। अहमस्य दर्पप्रशमनं करोमि। (प्रकाशम्) अथ केनायं गृहीतः ?

भीमसेनः – महाराज! मया।

अभिमन्युः – अशस्त्रेणेत्यभिधीयताम्।

भीमसेनः	–	शान्तं पापम्। धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते। मम तु भुजौ एव प्रहरणम्।
अभिमन्युः	–	मा तावद् भोः! किं भवान् मध्यमः तातः, यः तस्य सदृशं वचः वदति। (ततः प्रविशत्युत्तरः)
उत्तरः	–	तात! अभिवादये!
राजा	–	आयुष्मान् भव पुत्र। पूजिताः कृतकर्माणो योधपुरुषाः।
उत्तरः	–	पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा।
राजा	–	पुत्र! कस्मै ?
उत्तरः	–	इहात्रभवते धनञ्जयाय। .... व्यपनयतु भवाञ्छङ्.काम्। अयमेव अस्ति धनुर्धरः धनञ्जयः।
बृहन्नला	–	यद्यहं अर्जुनः तर्हि अयं भीमसेनः अयं च राजा युधिष्ठिरः।
अभिमन्युः	–	इहात्रभवन्तो मे पितरः। तेन खलु .... (इति क्रमेण सर्वान् प्रणमति, सर्वे च तम् आलिङ्गन्ति।)

शब्दार्थाः

प्रत्यभिज्ञानम्	–	पहिचान
अपूर्वः	–	जो पहले न हुआ हो
अश्रद्धेयम्	–	श्रद्धा के अयोग्य
सौभद्रः	–	अभिमन्यु
आसाद्य	–	पाकर, पहुँचकर
निश्शङ्कम्	–	बिना किसी हिचक के
भुजैकनियन्त्रितः	–	एक ही हाथ से पकड़ा गया
विभाति	–	सुशोभित होता है
कौतूहलम्	–	जानने की उत्कण्ठा
अपवार्य	–	हटाकर
रुष्यति	–	क्रोधित होता है
वाचालयतु	–	बोलने को प्रेरित करें

तिरस्क्रियते	–	उपेक्षा की जाती है
पितृव्यः	–	चाचा
अवलोकयतः	–	देखते हैं (द्विवचन)
कृतास्त्रस्य	–	अस्त्रविद्या से संपन्न व्यक्ति का
अलम्	–	निषेधार्थ में तृतीया विभक्ति के साथ
आत्मस्तवम्	–	आत्मप्रशंसा
सावज्ञम्	–	उपेक्षा करते हुए
वाक्शौण्डीर्यम्	–	वाणी की वीरता
पदातिः	–	पैदल चलनेवाला
उपसर्पतु	–	पास जाओ
एहि	–	आओ
उत्सिक्तः	–	गर्व से युक्त
दर्प–प्रशमनम्	–	घमंड को शान्त करना
गृहीतः	–	पकड़ा गया
मध्यमः	–	बीच का, यहाँ भीम के लिए
तातः	–	पिता
प्रहरणम्	–	हथियार
व्यपनयतु	–	दूर करें

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –

(क) भीमसेनेन कः गृहीतः ?

(ख) अभिमन्युः कथं गृहीतः आसीत् ?

(ग) भीमसेनेन बृहन्नलया च पृष्टः अभिमन्युः किमर्थम् उत्तरं न ददाति ?

2. अधोलिखितवाक्येषु प्रकटितभावं चिनुत –

(क) भोः को नु खल्वेषः ? येन भुजैकनियन्त्रितो बलाधिकेनापि न पीडितः अस्मि।

(विस्मयः, भयम्, जिज्ञासा)

(ख) कथं कथं! अभिमन्युर्नामाहम्। (आत्मप्रशंसा, स्वाभिमानः, दैन्यम्)

(ग) कथं मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां कथां पृच्छसे ? (लज्जा, क्रोधः प्रसन्नता)

(घ) धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते मम तु भुजौ एवं प्रहरणम्। (अन्धविश्वासः, शौर्यम्, उत्साहः)

3. यथास्थानं रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत –

(क) खलु	+ एषः	=	....
(ख) विभाति	+	=	विभात्युमावेषम्
(ग)	+ एनम्	=	वाचालयत्वेनम्
(घ) त्वमेव	+ एनम्	=	....
(ङ) यातु	+	=	यात्विति
(च)	+ इति	=	धनञ्जयायेति

4. अधोलिखितानि वचनानि कः कं प्रति कथयति –

	कः	कं प्रति
यथा – आर्य, अभिभाषणकौतुहलं मे महत्।	बृहन्नला	भीमसेनम्
(क) कथमिदानीं सावज्ञमिव मां हस्यते?	....	....
(ख) अशस्त्रेणेत्यभिधीयताम्।	....	....
(ग) पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा।	....	....
(घ) शान्तं पापम्! धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते।	....	....

5. अधोलिखितानि स्थूलानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि –

(क) वाचालयतु एनम् आर्यः।

(ख) किमर्थं तेन पदातिना गृहीतः ?

(ग) कथं न माम् अभिवादयसि।

(घ) मम तु भुजौ एव प्रहरणम्।

(ङ) अपूर्व इव ते हर्षो ब्रूहि केन विस्मितः ?

6. (क) अधोलिखितेभ्यः पदेभ्यः उपसर्गान् विचित्य लिखत –

	पदानि		उपसर्गः
यथा –	आसाद्य	–	आ
	अवतारितः	–	....
	विभाति	–	....

अभिभाषय	–	....
उद्भूताः	–	....
तिरस्क्रियते	–	....
प्रहरन्ति	–	....
उपसर्पतु	–	....
परिरक्षिताः	–	....
प्रणमति	–	....

(ख) उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकदत्तपदेषु पञ्चमीविभक्तिं प्रयुज्य वाक्यानि पूरयत –

यथा – श्मशानाद् धनुरादाय अर्जुनः आगतः। (श्मशान)

पाठान् पठित्वा सः .... आगतः। (विद्यालय)

.... पत्राणि पतन्ति। (वृक्ष)

गङ्गा .... निर्गच्छति। (हिमालय)

क्षमा .... फलानि आनयति। (आपणम्)

.... बुद्धिनाशो भवति। (स्मृतिनाश)

योग्यताविस्तारः

अन्वय और हिन्दी भावार्थ

पार्थं पितरमुद्दिश्य मातुलं च जनार्दनम् ।
तरुणस्य कृतास्त्रास्य युक्तो युद्धपराजयः।।

अज्ञातवास में बृहन्नला के रूप में अर्जुन को बहुत समय के बाद पुत्र–मिलन का अवसर प्राप्त हुआ। वह अपने पुत्र से बात करना चाहता है, परन्तु अपने अपहरण से क्षुब्ध अभिमन्यु उनके साथ बात करना ही नहीं चाहता। तब अर्जुन उसे उत्तेजित करने की भावना से इस प्रकार के व्यंग्यात्मक वचन कहते हैं –

तुम्हारे पिता अर्जुन हैं, मामा श्री कृष्ण हैं तथा तुम अस्त्रशस्त्रविद्या से सम्पन्न होने के साथ ही साथ तरुण भी हो, तुम्हारे लिए युद्ध में परास्त होना उचित है।

षष्ठः पाठः

सन्तश्रीगहिरागुरुः

श्रीगहिरागुरुः महान् समाजसुधारकः दार्शनिकः तपस्वी च आसीत्। तस्य जन्म पञ्चाधिकएकोनविंशतिशततमे (1905) खीस्ताब्दे रायगढ़मण्डलान्तर्गते गहिराग्रामेऽभवत्। तत्रभवतः पिता श्री बुडकीकँवरमहोदयः सम्पन्नो कृषकः जनजातीयसमूहस्य ग्रामप्रमुखः च आसीत्। मातुर्नाम् श्रीमती सुमित्रा देवी आसीत्। गहिरागुरोः वास्तविकं नाम श्री रामेश्वरकँवरः आसीत्। अन्येषां बालकानां सदृशः तस्य बाल्यकालः प्रकृत्याः सान्निध्ये व्यतीतः।

किशोरावस्थायां रामेश्वरकँवरः गंभीरप्रवृत्तिं प्राप्तवान्। जनजातीयसमूहस्य दुरवस्थां विलोक्य सः भृशं दुःखी आसीत्। तत्रभवान् तान् आत्मनिर्भरकरणार्थं भगीरथप्रयत्नं कृतवान्। एकदा रामेश्वरकँवरः टीपाझरननाम्नि स्थाने अष्टदिनात्मकं अहर्निशं साधनामकरोत्। सः जनान् उपदिशति स्म। गहिराग्रामे सः शिवमन्दिरस्य निर्माणमपि कारयितवान्। मन्दिरस्य प्राङ्गणे च प्रतिदिनं कीर्तनं करोति स्म। सः रात्रौ भगवद्चिन्तनं कुर्वन् वने इतस्ततश्च भ्रमति स्म। यदा कदा सः समाधिमपि अधिगच्छति स्म। शनैः शनैः तस्य सम्बोधनं गहिरागुरुः अभवत्। सः जनजातीयसमूहस्य नेतृत्वम् अकरोत्। स्वभावतः जनेषु लोकप्रियः अभवत्।

गृहस्थजीवनं व्यतीतं कुर्वन् गहिरागुरुः लोककल्याणे अनवरतं संलग्नः जातः। अनेकेषु स्थानेषु तेन शिक्षासंस्थानानि संस्थापितानि। तेषु संस्कृतपाठशालाः, आश्रमविद्यालयाः महाविद्यालयाःच सन्ति। जीवने शिक्षायाः महत्त्वं निर्विवादम्। तस्मात् कारणात् कालान्तरे सः वंचितसमुदायस्य छात्रेभ्यः अनेकान् छात्रावासान् चापि प्रारभयामास। बहवः जनाः संस्थाश्च तस्य कल्याणकारीकार्यक्रमेषु सहयोगं दत्तवन्तः। तदनन्तरं शासकीयानुदानेन तानि शिक्षासंस्थानानि गतिं प्राप्तानि।

निजसमुदायस्य विकासाय त्रिचत्वारिंशतधिकैकोनविंशतिशततमे (1943) खीष्ताब्दे सः गहिराग्रामे सनातनसन्तसमाजनाम संस्थां स्थापयत्। सः वाञ्छति स्म यत् जनाः वैयक्तिकं महत्त्वं विहाय संगठने योजयेयुः।

गुरुमहोदयस्य शिक्षायाः सारः अस्ति – सत्यं, शान्तिः, दया क्षमा च। ततः सः सात्विकजीवनयापनाय उपदेशं दत्तवान्। जनान् स्वच्छतायाः महत्त्वम् अबोधयत्। तस्य व्यक्तित्वे ईदृशं आकर्षणमासीत् यत् जनाः सहजैव प्रभाविताः संजाताः। उत्तरोत्तरं अनुयायीनाम् अभिवर्धनम् अभवत्। गहिरागुरोः ते अनुयायिनः ग्रामे ग्रामे भ्रमन् तस्य विचारस्य प्रसारं प्रचारञ्च कृतवन्तः।

सप्तचत्वारिंशतधिकिकैकोनविंशतिशततमे (1947) खीस्ताब्दे भारतस्य स्वतंत्रतायाः समये यदा नौवाखलीस्थाने भीषणोपद्रवः अभवत् तदा गहिरागुरुः गान्धिमहोदयेन सह जनान् शांतिव्यवस्थायै न्यवेदयत्। समाजसेवायां तस्य उल्लेखनीययोगदानं नूनं पुरस्करणीयम्।

षडशीत्यधिकसप्ताशीत्यधि कैकोनविंशतिशततमे (1986–87) खीस्ताब्दे सः'इन्दिरागाँधीराष्ट्रियसमाजसेवा' इति पुरस्कारेण सम्मानितः जातः। नवम्बरमासे एकविंशत्यां दिनाङ्के षण्णवत्याधिकैकोनविंशतिशततमे (21नवंबर,1996) खीस्ताब्दे गहिरागुरोः देहावसानभवत्। मरणोपरान्ते गुरुमहोदयः मध्यप्रदेशशासनेन 'बिरसामुण्डाआदिवासीसेवा' इत्यनेन पुरस्कारेण सम्मानितः जातः। तत्पश्चात् शहीदवीरनारायणसिंहपुरस्कारं च लब्धवान्। तस्य स्मृतौ छत्तीसगढशासनेन गहिरागुरुपर्यावरणं पुरस्कारं उद्घोषितम्।

तथ्यमिदमस्ति यत् जनानां प्रेम स्नेहं च गहिरागुरवे वास्तविकः पुरस्कारः वर्तते। अद्यापि जनाः तम् आदरपूर्वकं स्मरन्ति।

शब्दार्थाः

एकोनविंशतिः	=	उन्नीस
मण्डलान्तर्गते	=	जिला में
दुरवस्थाम्	=	खराब स्थिति को
विलोक्य	=	देखकर
परिभ्रमति स्म	=	घूमते थे
अहर्निशम्	=	दिन–रात
अवबोधयत्	=	समझाया, बताया
षण्णवतिः	=	छियान्बे

अभ्यासः

1. संस्कृतभाषया उत्तरं लिखत –

(क) गहिरागुरोः जन्म कदा अभवत्?

(ख) गहिरागुरुः कस्य स्थापनामकरोत्?

(ग) केषां दुरवस्थां विलोक्य गुरुः दुःखी आसीत्?

(घ) गुरुः जनान् कस्य महत्त्वं अबोधयत्?

(ड.) छत्तीसगढशासनेन गुरोः स्मृतौ किम् उद्घोषितम् ?

2 रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) तस्य मातुर्नाम .... आसीत्।

(ख) सः .... नेतृत्वम् अकरोत्।

(ग) गुरुः .... अनवरतं संलग्नः जातः।

(घ) तेन .... संस्थापितानि।

(ड.) अद्यापि जनाः तम् .... स्मरन्ति।

3. अधोलिखितानां पदानां पर्यायपदं पाठात् चित्वा लिखत –

(क) आचार्यः – ....

(ख) अम्बा – ....

(ग) गणः – ....

(घ) पारितोषिकः – ....

(ङ) अवदानम् – ....

4. उदाहरणमनुसृत्य वाक्यानि रचयत –

यथा– अहं लोककल्याणार्थं कार्यं कर्त्तुम् इच्छामि।

क) .... श्रृणोमि।

ख) .... नमामि।

ग) .... आप्नोमि।

घ) .... गृह्णामि।

ड.) .... यामि।

5. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –

क) किशोरावस्थायां रामेश्वरकँवरः गंभीरप्रवृत्तिं प्राप्तवान्।

ख) जीवने शिक्षायाः महत्त्वं निर्विवादम्।

ग) गहिरागुरुः गान्धिमहोदयेन सह जनान् शांतिव्यवस्थायै न्यवेदयत्।

घ) सः जनजातीयसमूहस्य नेतृत्वम् अकरोत्।

ड.) अद्यापि जनाः तम् आदरपूर्वकं स्मरन्ति।

6. पाठस्य सारांशं पञ्चवाक्यैः लिखत।

शिक्षक संदर्शिका

शिक्षक छात्रों को छत्तीसगढ़ की अन्य विभूतियों के जीवन से परिचित कराएँ।

QR25GL

QRB1I9

सप्तमः पाठः

ब्रेललिपिः

ब्रेललिपि का आविष्कार लुई ब्रेल ने किया था। फ्रांस देश के कूपरवे शहर में 4 जनवरी, 1809 को उनका जन्म हुआ था। शुरुआती तीन सालों तक लुई देख सकते थे। एक दिन उनके पिता बाहर गए थे। वे घोड़ों पर बैठने की चमड़े की जीन बनाते थे। उनका चमड़े को काटने–छेदने का औजार घर पर था। उसी में एक नुकीला सूजा था। खेल–खेल में लुई उससे चमड़े पर छेद करने की कोशिश कर रहे थे। सूजा फिसला और लुई की एक आँख में जा लगा। फिर चोट का असर दूसरी आँख तक फैल गया। लुई के पिता ने लुई के लिए एक पतली छड़ी बना दी। धीरे–धीरे लुई ने छड़ी की मदद से टटोलकर चलना सीख लिया। वे छूकर, सूँघकर, सुनकर चीजों को पहचान लेते थे। थोड़े दिनों बाद उन्हें पेरिस शहर के नेत्रहीन बच्चों के एक स्कूल में दाखिला मिल गया। शाम को लुई ने संगीत और पियानो बजाना सीखना शुरू किया। उन दिनों नेत्रहीन बच्चों के लिए किताब बनाने के कई प्रयास हो रहे थे। कागज की पट्टी पर छेद करके एक अनोखी लिपि खोजी गई। कागज को पलटकर उभरी हुई बिंदियों को छूकर पढ़ा जा सकता था। उसको बेहतर बनाने के काम में लुई जुट गए। लुई ने फ्रेंच भाषा की रोमन लिपि के सभी 26 अक्षरों के उभरी हुई 6 बिंदियोंवाले नमूने बना डाले। उन बिंदियों को छूकर पढ़ना–लिखना संभव था। यही लिपि ब्रेललिपि नाम से प्रसिद्ध हुई। 6 जनवरी, 1852 को लुई ब्रेल का देहांत हुआ, लेकिन आज तक ब्रेललिपि काम में आती है। ब्रेललिपि में किताबें छपती हैं। कम्प्यूटर आने के बाद से उस पर पढ़ना–लिखना और अधिक आसान हो गया है। प्रस्तुत पाठ में आए नीलेश जैसे बच्चों की विशेष आवश्यकता है। वह देख नहीं सकता है। उसको पढ़ने–लिखने के लिए खास उपकरणों की जरूरत होती है। यह उसका अधिकार है। इस पाठ में नीलेश और उसके मित्र धनुष का संवाद है।

धनुषः – नमस्कारः! अत्र भवतः स्वागतम्।

नीलेशः – नमस्कारः।

धनुषः – आगच्छतु। उपविशतु। भवतः परिचयः कः ?

नीलेश : – मम नाम नीलेशः अस्ति। अहं नवम्यां कक्षायां पठितुमागच्छामि। मम मातुः स्थानान्तरणम् अस्मिन् नगरे अभवत्। भवतः परिचयः कः ?

धनुषः – मम नाम धनुषः। अहमपि नवम्यां कक्षायां पठामि, किन्तु महदाश्चर्यं भवान् कथं पठति!

नीलेशः – अहं ब्रेललिपिमाध्यमेन पठनं लेखनं च करोमि। इयं विशिष्टा लिपिः अस्ति।

धनुषः – अतीव शोभनमस्ति।

नीलेशः – मित्र!मम पूर्वविद्यालये मम कृते सर्वाणि साधनानि सुलभानि आसन्।

धनुषः – कानि कानि साधनानि ?

नीलेशः – विद्यालयं परितः दृष्टिबाधितमित्राणां कृते विशेषः मार्गः निर्मितः।

धनुषः	–	अयं मार्गः कथं लाभप्रदः ?
नीलेशः	–	मित्र! अहं स्वकीयेन दण्डसाहाय्येन संस्पृश्य सर्वत्र गमनागमनं करोमि।

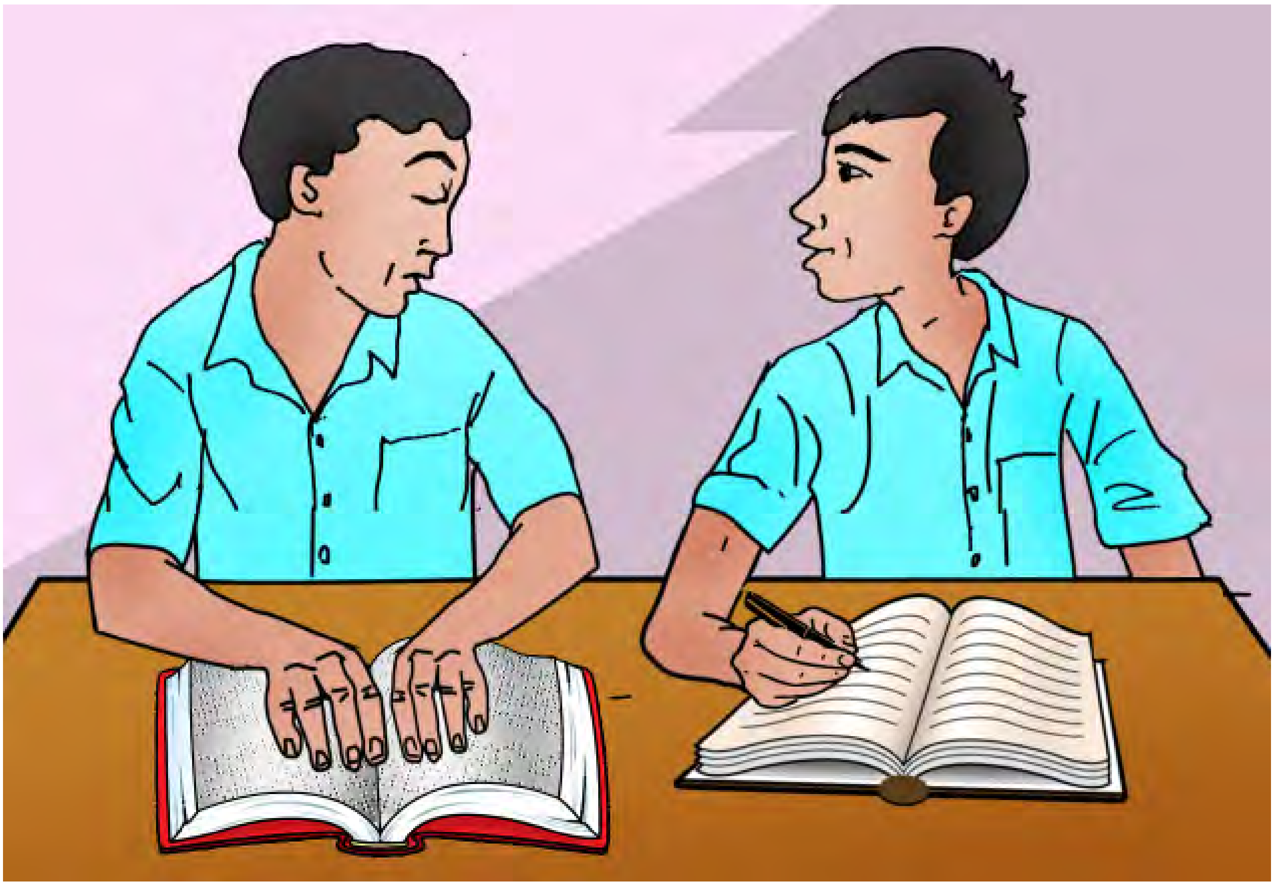

धनुषः	–	मित्र! स्वकीयां कक्षां भवान् कथं जानाति ?
नीलेशः	–	द्वारमध्ये ब्रेललिप्या कक्षायाः संख्या लिखिता।
धनुषः	–	तेन किं भवति ?
नीलेशः	–	तां स्पर्शं कृत्वा जानाम्यहम्।
धनुषः	–	किं भवतः पुस्तकानि अपि ब्रेललिप्याम् उपलब्धानि सन्ति ?
नीलेशः	–	आम्। विद्यालये एकः सङ्गणकः अपि मम मित्रम् आसीत्।
धनुषः	–	तेन किम् भवति ?
नीलेशः	–	सङ्.गणके एका विशिष्टा सुविधा वर्तते। मम वचनं श्रुत्वा सङ्गणकः लिखितुं शक्नोति।

धनुषः – भवतः वृत्तान्तं श्रुत्वा दृष्ट्वा च अहमपि स्फूर्तिम् अनुभवामि। एतादृशानि साधनानि सर्वेभ्यः दृष्टिबाधितेभ्यः सुलभानि भवेयुः।

नीलेशः – आम्! धनुष !

धनुषः – अस्माकं विद्यालये विविधोपकरणानि न सन्ति।

नीलेशः – ततः किं कर्त्तव्यम् ?

धनुषः – वयं सर्वे छात्राः आवेदनं कुर्याम यत् अस्माकं विद्यालये समुचिता व्यवस्था भवेत्। तदैव अस्माकं मित्राणां विशेषावश्यकतायाः पूर्तिः भविष्यति।

नीलेशः – उत्तमः विचारः भवतः।

अभ्यासः

1. रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) मम .... स्थानान्तरणम् अस्मिन् नगरे अभवत्।

(ख) विद्यालयं .... विशेषः मार्गः निर्मितः।

(ग) द्वारमध्ये .... कक्षायाः संख्या लिखिता।

(घ) .... अपि मम मित्रम् ।

(ङ.) विद्यालये समुचिता .... भवेत्।

2. संस्कृतभाषया उत्तरत –

(क) नीलेशः केन माध्यमेन पठति ?

(ख) सङ्गणकः किं कर्तुं शक्नोति ?

(ग) धनुषः कथं मित्रस्य सहायतां करोति ?

(घ) किं तव विद्यालये नीलेशस्य शिक्षार्थं व्यवस्था अस्ति ?

(ङ.) ततः किं कर्त्तव्यम् ?

3. स्तम्भमेलनं कुरुत –

'अ'		'ब'
पठितुम्	–	क्त
स्पृष्ट्वा	–	तुमुन्
पठनम्	–	क्त्वा
कृतवान्	–	ल्युट्
गतः	–	क्तवतु

4. पाठात् चित्वा उपसर्गयुक्तपदानि लिखत –

यथा – आगच्छतु ....

....

....

5. अधोलिखितानां शब्दानां विलोमपदं लिखत –

(क) शोभनम् – ....

(ख) उपलब्धानि – ....

(ग) मित्रम् – ....

(घ) सुलभानि – ....

(ङ.) स्फूर्तिम् – ....

QRJHJH

6. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि मातृभाषया लिखत –

(क) ब्रेललिपिः कीदृशी भवति ?

(ख) तव दृष्टिबाधितं मित्रम् अस्ति ?

(ग) ब्रेललिप्याम् पुस्तकानि कुत्र उपलब्धानि भवन्ति ?

(घ) त्वं सङ्गणकं जानासि ?

(ङ.) विद्यालये कीदृशी व्यवस्था भवेत् ?

QRTSLJ

अष्टमः पाठः

सिकतासेतुः

प्रस्तुत नाट्यांश सोमदेव द्वारा रचित कथासरित्सागर के सप्तम लम्बक (अध्याय) पर आधारित है। यहाँ तपोबल से विद्या पाने के लिए प्रयत्नशील तपोदत्त नामक एक बालक की कथा का वर्णन है। उसके समुचित मार्गदर्शन के लिए वेष बदलकर इंद्र उसके पास आते हैं और पास ही गंगा में बालू से सेतुनिर्माण के कार्य में लग जाते हैं। उन्हें वैसा करते देख तपोदत्त उनका उपहास करता हुआ कहता है– 'अरे'! किसलिए गंगा के जल में व्यर्थ ही बालू से पुल बनाने का प्रयत्न कर रहे हो ?' इंद्र उन्हें उत्तर देते हैं – यदि पढ़ने, सुनने और अक्षरों की लिपि के अभ्यास के बिना तुम विद्या पा सकते हो तो बालू से पुल बनाना भी संभव है। इंद्र के अभिप्राय को जानकर तपोदत्त तपस्या करना छोड़कर गुरुजनों के मार्गदर्शन में विद्या का ठीक–ठीक अभ्यास करने के लिए गुरुकुल चला जाता है।

(ततः प्रविशति तपस्यारतः तपोदत्तः)

तपोदत्तः – अहमस्मि तपोदत्तः। बाल्ये पितृचरणैः क्लेश्यमानोऽपि विद्यां नाधीतवानस्मि।

तस्मात् सर्वैः कुटुम्बिभिः मित्रैः ज्ञातिजनैश्च गर्हितोऽभवम्। (ऊर्ध्वं निःश्वस्य)

हा विधे! किमिदम्मया कृतम् ? कीदृशी दुर्बुद्धिरासीत्तदा! एतदपि न चिन्तितं

यत् – **परिधानैरलङ्कारैर्भूषितोऽपि न शोभते।**
नरो निर्मणिभोगीव सभायां यदि वा गृहे।।1।।

(किञ्चिद् विमृश्य)

भवतु, किमेतेन ? दिवसे मार्गभ्रान्तः सन्ध्यां यावद् यदि गृहमुपैति तदपि वरम्। नाऽसौ भ्रान्तो मन्यते। एष इदानीं तपश्चर्यया विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽस्मि।

(जलोच्छलनध्वनिः श्रूयते)

अये कुतोऽयं कल्लोलोच्छलनध्वनिः? महामत्स्यो मकरो वा भवेत्। पश्यामि तावत्।

(पुरुषमेकं सिकताभिः सेतुनिर्माण–प्रयासं कुर्वाणं दृष्ट्वा सहासम्)

हन्त! नास्त्यभावो जगति मूर्खाणाम्! तीव्रप्रवाहायां नद्यां मूढोऽयं सिकताभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते! (साट्टहासं पार्श्वमुपेत्य)

भो महाशय! किमिदं विधीयते! अलमलं तव श्रमेण। पश्य,

रामो बबन्ध यं सेतुं शिलाभिर्मकरालये।
विदधद् बालुकाभिस्तं यासि त्वमतिरामताम् ।।2।।

चिन्तय तावत्। सिकताभिः क्वचित्सेतुः कर्तुं युज्यते ?

पुरुषः – भोस्तपस्विन्! कथं मामुपरुणत्सि। प्रयत्नेन किं न सिद्धं भवति ? कावश्यकता शिलानाम् ? सिकताभिरेव सेतुं करिष्यामि स्वसंकल्पदृढतया।

तपोदत्तः – आश्चर्यम्! सिकताभिरेव सेतुं करिष्यसि ? सिकता जलप्रवाहे स्थास्यन्ति किम् ? भवता चिन्तितं न वा ?

पुरुषः – (सोत्प्रासम्) चिन्तितं चिन्तितम्। सम्यक् चिन्तितम्। नाहं सोपानमार्गैरट्टमधिरोढुं विश्वसिमि। समुत्प्लुत्यैव गन्तुं क्षमोऽस्मि।

तपोदत्तः	–	(सव्यंग्यम्) साधु साधु! आञ्जनेयमप्यतिक्रामसि!
पुरुषः	–	(सविमर्शम्) कोऽत्र सन्देहः ? किञ्च, **विना लिप्यक्षरज्ञानं तपोभिरेव केवलम्।** **यदि विद्या वशे स्युस्ते, सेतुरेष तथा मम।।3।।**
तपोदत्तः	–	(सवैलक्ष्यम् आत्मगतम्) अये! मामेवोद्दिश्य भद्रपुरुषोऽयम् अधिक्षिपति! नूनं सत्यमत्र पश्यामि। अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यमवाप्तुम् अभिलषामि! तदियं भगवत्याः शारदाया अवमानना। गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो मया करणीयः। पुरुषार्थैरेव लक्ष्यं प्राप्यते। (प्रकाशम्) भो नरोत्तम! नाऽहं जाने यत् कोऽस्ति भवान्। परन्तु भवद्भिः उन्मीलितं मे नयनयुगलम्। तपोमात्रेण विद्यामवाप्तुं प्रयतमानोऽहमपि सिकताभिरेव सेतुनिर्माणप्रयासं करोमि। तदिदानीं विद्याध्ययनाय गुरुकुलमेव गच्छामि। (सप्रणामं गच्छति)

शब्दार्थाः

सिकता	–	रेत
सेतुः	–	पुल
तपस्यारतः	–	तपस्या में लीन
पितृचरणैः	–	पिताजी के द्वारा
क्लेश्यमानः	–	व्याकुल किया जाता हुआ
अधीतवान्	–	पढ़ा
कुटुम्बिभिः	–	कुटुम्बियों द्वारा
ज्ञातिजनैः	–	बन्धु–बान्धवों द्वारा

गर्हितः	–	अपमानित
निःश्वस्य	–	लम्बी साँस लेकर
दुर्बुद्धिः	–	दुष्ट बुद्धिवाला
परिधानैः	–	कपड़ों से, पहनावों से
मार्गभ्रान्तः	–	राह से भटका हुआ
उपैति	–	जाता है, समीप जाता है
तपश्चर्यया	–	तपस्या के द्वारा
जलोच्छलनध्वनिः	–	पानी के उछलने की आवाज
कल्लोलोच्छलनध्वनिः	–	तरंगों के उछलने की ध्वनि
कुर्वाणम्	–	करते हुए
सहासम्	–	हँसते हुए
सोत्प्रासम्	–	खिल्ली उड़ाते हुए, चुटकी लेते हुए
साट्टहासम्	–	जोर से हँसकर
अट्टम्	–	अटारी को
अधिरोढुम्	–	चढ़ने के लिए
उपरुणत्सि	–	रोकते हो
आञ्जनेयम्	–	अञ्जनिपुत्र हनुमान् को
सविमर्शम्	–	सोच विचार कर
सवैलक्ष्यम्	–	लज्जापूर्वक
वैदुष्यम्	–	विद्वत्ता
उन्मीलितम्	–	खोल दी

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –

(क) अनधीतः तपोदत्तः कैः गर्हितोऽभवत् ?

(ख) तपोदत्तः केन प्रकारेण विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽभवत् ?

(ग) तपोदत्तः पुरुषस्य कां चेष्टां दृष्ट्वा अहसत् ?

(घ) तपोमात्रेण विद्यां प्राप्तुं तस्य प्रयासः कीदृशः कथितः ?

(ङ.) अन्ते तपोदत्तः विद्याग्रहणाय कुत्र गतः ?

2. भिन्नवर्गीयं पदं चिनुत –

यथा – अधिरोढुम्, गन्तुम्, सेतुम्, निर्मातुम् = सेतुम्

(क) निःश्वस्य, चिन्तय, विमृश्य, उपेत्य = ...

(ख) विश्वसिमि, पश्यामि, करिष्यामि, अभिलषामि = ...

(ग) तपोभिः, दुर्बुद्धिः, सिकताभिः, कुटुम्बिभिः = ...

3. (क) अधोलिखितानि कथनानि कः कं प्रति कथयति ?

कथनानि		कः	कम्
(1) हा विधे! किमिदं मया कृतम् ?	–	....	....
(2) भो महाशय! किमिदं विधीयते ?	–	....	....
(3) भोस्तपस्विन्! कथं माम् उपरुणत्सि ?	–	....	....
(4) सिकताः जलप्रवाहे स्थास्यन्ति किम् ?	–	....	....
(5) नाहं जाने कोऽस्ति भवान् ?	–	....	....

(ख) रेखांकितानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि ?

(1) अलमलं तव श्रमेण।

(2) न अहं सोपानमार्गैरट्टमधिरोढुं विश्वसिमि।

(3) चिन्तितं भवता न वा।

(4) गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो मया करणीयः।

(5) भवद्भिः उन्मीलितं मे नयनयुगलम्।

4. रेखाङ्कितपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –

(क) तपोदत्तः तपश्चर्यया विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽस्ति।

(ख) तपोदत्तः कुटुम्बिभिः मित्रैः गर्हितः अभवत्।

(ग) पुरुषः नद्यां सिकताभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते।

(घ) तपोदत्तः अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यमवाप्तुम् अभिलषति।

(ङ.) तपोदत्तः विद्याध्ययनाय गुरुकुलम् अगच्छत्।

(च) गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासः करणीयः।

5. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितविग्रहपदानां समस्तपदानि लिखत –

विग्रहपदानि	**समस्तपदानि**
यथा – संकल्पस्य सातत्येन	संकल्पसातत्येन
(क) अक्षराणां ज्ञानम्	....
(ख) सिकतायाः सेतुः	....
(ग) पितुः चरणैः	....
(घ) गुरोः गृहम्	....
(ङ) विद्यायाः अभ्यासः	....

6. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं कुरुत–

समस्तपदानि	**विग्रहपदानि**
यथा – नयनयुगलम्	नयनयोः युगलम्
(क) जलप्रवाहे	....
(ख) तपश्चर्या	....

(ग) जलोच्छलनध्वनिः ....

(ङ) सेतुनिर्माणप्रयासः ....

7. उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकात् पदम् आदाय नूतनवाक्यद्वयं रचयत –

(क) **यथा** – अलं चिन्तया ('अलम्' योगे तृतीया)

(1) .... (भय)

(2) .... (कोलाहल)

(ख) **यथा** – माम् अनु सः गच्छति।

(1) .... (गृह)

(2) .... (पर्वत)

QS3NN7

नवमः पाठः

रघुवंशम्

QSCJPU

महाकवि कालिदासकृत महाकाव्य 'रघुवंशम्' के प्रथम सर्ग से यह पाठ लिया गया है। इस काव्य में राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक इक्ष्वाकुवंशीय राजाओं का वर्णन किया गया है।

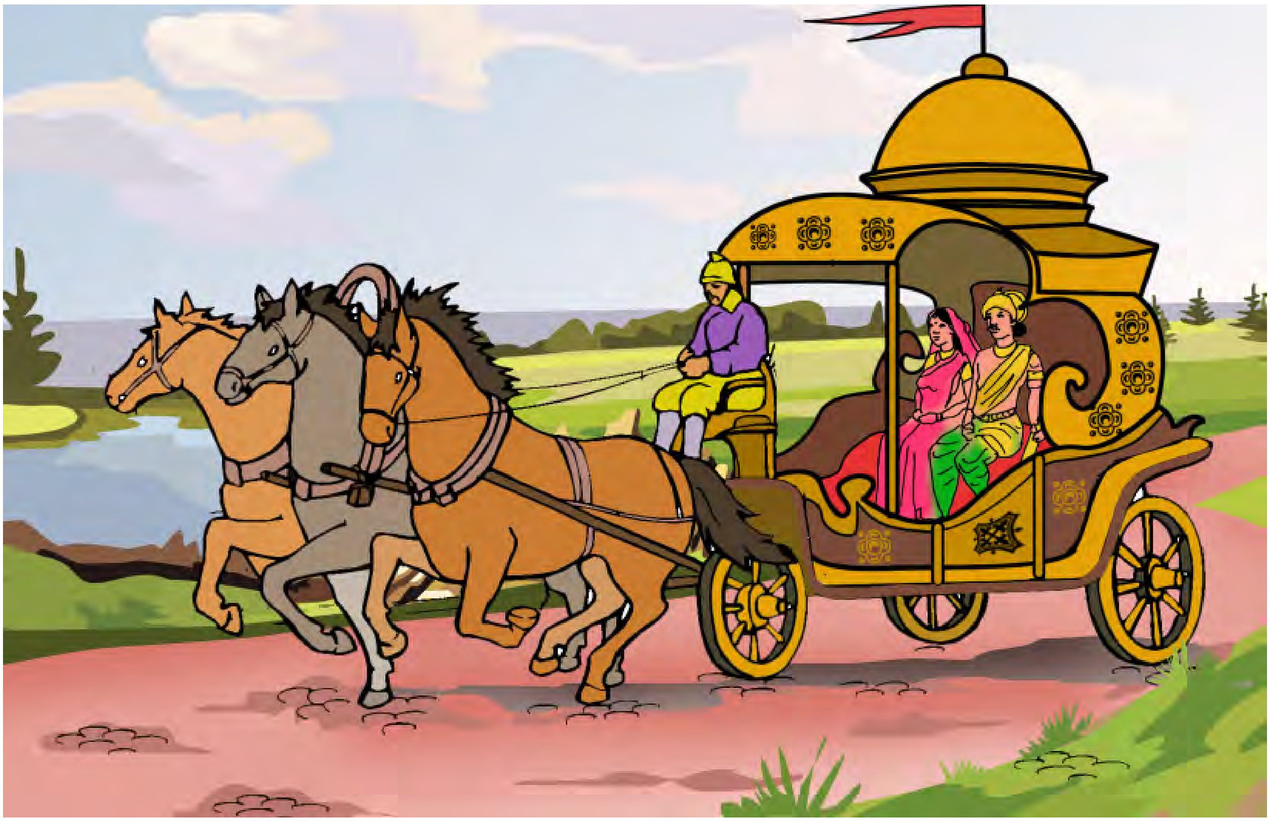

वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्।
आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव।। 1।।

तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।
दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव।। 2।।

आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।
आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः ।। 3।।

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।। 4।।

प्रजानां विनयाधानाद् रक्षणाद् भरणादपि।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः।। 5।।

द्वेष्योपि सम्मतः शिष्टस्तस्यार्तस्य यथौषधम्।
त्याज्यो दुष्टः प्रियोऽप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षता ।। 6।।

तस्य दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना मगधवंशजा।
पत्नी सुदक्षिणेत्यासीदध्वरस्येव दक्षिणा।। 7।।

अथाभ्यर्च्य विधातारं प्रयतौ पुत्रकाम्यया।
तौ दम्पती वशिष्ठस्य गुरोर्जग्मतुराश्रमम्।। 8।।

हैयङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान्।
नामधेयानि पृच्छन्तौ वन्यानां मार्गशाखिनाम्।। 9।।

शब्दार्थाः

वैवस्वतः	–	वैवस्वत (सूर्य पुत्र)
मनीषिणाम्	–	विद्वानों का, विद्वानों में
महीक्षिताम्	–	राजाओं का, राजाओं में
प्रणवः	–	ओंकार

छन्दसाम्	–	वेदमन्त्रों का, वेदमन्त्रों में
तदन्वये	–	उसके वंश में
शुद्धिमति	–	पवित्र बुद्धिवाले में
प्रसूतः	–	उत्पन्न हुआ
राजेन्दुः	–	राजाओं में चन्द्रमा
क्षीरनिधौ	–	समुद्र में
आकारसदृशप्रज्ञः	–	आकार के अनुरूप बुद्धिवाला
आगमः	–	शास्त्रज्ञान
भूत्यर्थम्	–	सुखसमृद्धि के लिए
बलिम्	–	कर
उत्स्रष्टुम्	–	देने के लिए, छोड़ने के लिए (उत् + सृज् + तुमुन्)
विनयाधानात्	=	शिक्षा देने के कारण
द्वेष्यः	–	द्वेष करने योग्य, शत्रु
उरगक्षता	–	साँप द्वारा काटी गई
दाक्षिण्यरुढेन	–	अधिक निपुण होने के कारण
अध्वरस्य	–	यज्ञ की
अभ्यर्च्य	–	पूजा करके
विधातारम्	–	ब्रह्म को
प्रयतौ	–	पवित्र
जग्मतुः	=	चले गए
हैयङ्गवीनम्	–	मक्खन को
घोषवृद्धान्	–	वृद्ध ग्वालों से
शाखिनाम्	–	वृक्षों का (शाखिन्, षष्ठी बहु.)

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –

(क) महीक्षिताम् आद्यः कः आसीत् ?

(ख) वैवस्वतस्य मनोः वंशे कः प्रसूतः ?

(ग) स प्रजाभ्यो बलिं किमर्थं गृहीतवान् ?

(घ) दिलीपस्य पत्नी का आसीत् ?

(ङ) तौ दम्पती कुत्र जग्मतुः ?

2. उपयुक्तं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) आकारदृशप्रज्ञः ....सदृशागमः । (विद्यया, शीलेन, प्रज्ञया)

(ख) सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं.............................. । (रविः कविः हविः)

(ग) अथाभ्यर्च्य.............................. प्रयतौ पुत्रकाम्यया। (विधातारम्, गणाधीशम्)

(घ) .... धेयानि पृच्छन्तौ वन्यानां मार्गशाखिनाम् (नाम, भाग)

3. उदाहरणमनुसृत्य वाक्यानि रचयत ।

यथा – दीपायै केवलं फलं रोचते।

दुष्टः, आदाय, त्याज्य, दम्पती, प्रजानाम्

4. सन्धिं/विच्छेदं कुरुत ।

मनुर्नाम	=
राजेन्दुरिन्दुः	=
सुदक्षिणेत्यासीत्	=
पितरस्तासाम्	=
शिष्टः + तस्य + आर्तस्य	=
अध्वरस्य + एव	=
गुरोः +जग्मतुः + आश्रमम्	=

5. अधोलिखितानां पदानां पर्यायपदं लिखत ।

(क) इन्दुः ....

(ख) प्रज्ञा ....

(ग) दुष्टः ....

(घ) पत्नी ....

(ङ.) अध्वरः ....

(च) विधाता ....

6. श्लोकानां भावार्थं मातृभाषया लिखत।

योग्यताविस्तारः

अन्वय और हिन्दी भावार्थ

1. मनीषिणां माननीयः वैवस्वतः नाम मनुः छन्दसां प्रणवः इव महीक्षिताम् आद्यः आसीत्।

विद्वानों के सम्माननीय वैवस्वत मनु वेदों में ऊँकार के समान राजाओं में प्रथम थे।

2. शुद्धिमति तदन्वये शुद्धिमत्तरः दिलीप इति राजेन्दुः क्षीरनिधौ इन्दुः इव प्रसूतः।

(वैवस्वत मनु के) उसके पवित्र वंश में उससे भी पवित्र राजाओं में चन्द्रमा दिलीप क्षीरसागर में चन्द्रमा के समान उत्पन्न हुए।

3. आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः आगमैः सदृशारम्भः आरम्भसदृशोदयः।

वे आकार के अनुरूप बुद्धिवाले, बुद्धि के समान शास्त्र का अभ्यास करनेवाले, शास्त्राभ्यास के अनुसार उद्योग करने वाले और उद्योग के अनुसार फल को प्राप्त करनेवाले थे।

4. स प्रज्ञानाम् एवं भूत्यर्थं ताभ्यः बलिम् अग्रहीत्, हि रविः सहस्र गुणम् उत्स्रष्टुं रसम् आदत्ते।

प्रजा के कल्याण के लिए ही उनसे कर लेते थे जैसे सूर्य हजार गुणा जल बरसाने के लिए (पृथ्वी से) जल खींचता है।

5. **विनयाधानात् रक्षणात् भरणात् अपि सः प्रजानां पिता (अभूत्) तासां पितरः केवलं जन्महेतवः।**

शिक्षा देने से, रक्षा करने से, पालन–पोषण करने से वे प्रजा के पिता थे। उनके पिता तो केवल जन्मदाता थे।

6. **शिष्टः द्वेष्यः अपि आर्तस्य औषधं यथा तस्य सम्मतः। दुष्टः प्रियः अपि उरगक्षता अंगुलि इव त्याज्य आसीत्।**

सज्जन शत्रु भी रोगी को औषधि के समान उनको प्रिय था और दुष्ट प्रिय होने पर भी साँप से डँसी हुई अंगुलि की तरह त्याज्य था।

7. **तस्य मगधवंशजा दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना सुदक्षिणा इति अध्वरस्य दक्षिणा इव पत्नी आसीत्।**

मगध वंश में उत्पन्न, अधिक निपुण होने के कारण सुदक्षिणा नाम वाली 'दक्षिणा' नाम की यज्ञ की स्त्री के समान दिलीप की स्त्री थी।

8. **अथ पुत्रकाम्यया विधातारम् अभ्यर्च्य प्रयतौ तौ दंपती गुरोः वसिष्ठस्य आश्रमं जग्मतुः।**

उसके बाद पुत्र की इच्छा से ब्रह्मा की पूजा करके वे दोनों पवित्र पति–पत्नी कुलगुरु वसिष्ठ की आश्रम की ओर चले।

9. **हैयंगवीनम् आदाय उपस्थितान् घोषवृद्धान् वन्यानां मार्गशाखिनां नामधेयानि पृच्छन्तौ (तौ जग्मतुः)।**

गाय का ताजा मक्खन लेकर उपस्थित हुए वृद्ध गोपों से जंगली वृक्षों के नाम आदि पूछते हुए (वे चले)।

QSLFRH

दशमः पाठः

विश्वबन्धुत्वम्

विश्वस्य सर्वान् जनान् प्रति बन्धुत्वस्य भावः एव विश्वबन्धुत्वम् इति कथ्यते। शान्तिमयाय जीवनाय विश्वबन्धुत्वस्य भावना नितरां महत्त्वं भजते। सर्वजनहितं सर्वजनसुखं च बन्धुत्वं विना न सम्भवति। विश्वबन्धुत्वम् एव दृष्टौ निधाय केनापि मनीषिणा निर्दिष्टम् –

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

साम्प्रतम् अखिले संसारे अशान्तेः हिंसायाः च साम्राज्यं व्याप्तम् अस्ति। येन साधनसम्पन्नः अपि मानवः सुखस्य स्थाने दुःखमेव अनुभवति। यद्यपि ज्ञानबलेन मानवः इदानीं आकाशे विचरितुं, सागरान् सन्तर्तुं, विश्वभ्रमणं कर्तुं चन्द्रादिग्रहेषु च गन्तुं समर्थः अस्ति, तथापि परस्परं सम्बन्धानां कटुता अशान्तिः चैव दृश्यते। विगतयोः द्वयोः

विश्वयुद्धयोः विनाशलीलां सर्वे जानन्ति एव। इदानीं तृतीयस्य युद्धस्य सम्भावना सर्वदा मानवजातिम् आक्रान्तं करोति। आयुधानाम् अविवेकपूर्णः संग्रहः, नाभिकीयशक्तेः परीक्षणम् देशानां प्रतिद्वंद्विता च विश्वं नाशं प्रति नयन्ति। अतएव विश्वबन्धुत्वम् अपरिहार्यम्। मानवः मानवं प्रति बन्धुवत् आचरणं कुर्यात्। एकः देशः अन्येन देशेन सह बन्धुतायाः व्यवहारं कुर्यात्। सबलाः देशाः दुर्बलेषु देशेषु आक्रमणं न कुर्युः। स्वार्थस्य लोलुपतायाः महत्वाकाङ्क्षायाः च स्थाने परस्परं सहयोगस्य प्रसारो भवेत्।

अधुना संसारस्य कतिपयेषु महाद्वीपेषु परस्परं शत्रुतायाः हिंसायाश्च साम्राज्यं व्याप्तमस्ति। अखिलं विश्वं विविधाभिः समस्याभिः पीडितम् अस्ति। जीवने शान्तिः दुर्लभा जाता। कुत्रचित् श्वेताश्वेतयोः कारणात् कलहो वर्तते। कुत्रचित् धर्मभेदः विद्वेषस्य कारणमस्ति। कुत्रचित् तु वर्गभेदः, लिंगभेदः जातिभेदः वा। स्वार्थाय, अहंकाराय, शक्तिवर्धनाय चापि देशाः संघर्षरताः सन्ति। अनेन मानवः एव मानवहन्ता सञ्जातः।

तथापि शान्तिस्थापनार्थम् अनेके देशाः अनेकाः संस्थाः च प्रयासरताः सन्ति। यथा संयुक्तराष्ट्रसंघः, गुटनिरपेक्षान्दोलनं जनान्दोलनं च विश्वबन्धुत्वं स्थापयितुं सततं प्रयत्नं कुर्वन्ति। इदम् अस्माकमपि दायित्वम् इति स्मरणीयम्। संसारे सर्वेषु मानवेषु समानं रक्तं प्रवहति। सर्वे समानाः सन्ति। अस्माकं कामना अस्ति –

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

शब्दार्थाः

भद्राणि	=	कल्याण
मनीषिणा	=	विद्वान द्वारा
प्रेम्णः	=	प्रेम का
साम्प्रतम्	=	इस समय
सन्तर्तुम्	=	पार करने के लिए
भ्रान्ता	=	भटके हुए
हन्ता	=	मारने वाला
सञ्जातः	=	हो गया
निरामयाः	=	रोग रहित

अभ्यासः

1. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत –

(क) साम्प्रतं संसारे किं व्याप्तम् अस्ति ?

(ख) आयुधानां संग्रहः विश्वं कुत्र नयति ?

(ग) विद्वेषस्य कारणानि कानि कानि सन्ति ?

(घ) संसारे किमर्थं विश्वबन्धुत्वस्य आवश्यकता अस्ति ?

(ङ.) शान्तये के प्रयत्नशीलाः सन्ति ?

2. निम्नलिखितानां पदानां लिङ्गं विभक्तिं वचनं च लिखत ।

(क) शान्तिमयाय

(ख) सम्बन्धानाम्

(ग) समस्याभिः

(घ) कुटुम्बकम्

(ङ.) सुखिनः

3. निम्नलिखितानां पदानां धातुं लकारं पुरुषं वचनं च लिखत ।

(क) सम्भवति

(ख) दृश्यते

(ग) वर्तते

(घ) कुर्यात्

(ङ.) प्रवहति

4. वर्गेषु भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत । **उत्तराणि**

(क) भावः, भवति, लाभः, संघः, उद्योगः । = ...

(ख) प्रति, विश्वस्मिन्, देशे, अखिले, संसारे । = ...

(ग) रक्तम्, रुधिरम्, जलम्, शोणितम्, लोहितम्। = ...

(घ) वसुधा, वसुन्धरा, धरा, जरा, पृथ्वी। = ...

(ङ) स्मरणीयम्, पठनीयम्, करणीयम्, आदरणीयम्, जयम्। = ...

5. कोष्ठान्तर्गतानां पदानाम् उपयुक्तविभक्तिप्रयोगेन अनुच्छेदं पूरयत ।

समाजे ....(अनुशासन) उल्लंघनं विकासस्य प्रक्रियां बाधते। न केवलं समाजस्य ....(कल्याण), अपितु निजहिताय अपि अस्य आवश्यकता अस्ति। यदा कोऽपि ....(देश) अनुशासनस्य अवमाननां करोति तदा व्यवस्थायां ....(दुष्प्रभाव) परिलक्ष्यते। परिणामस्वरूपं सर्वत्र अराजकतायाः अव्यवस्थायाश्च ....(राज्य) भवति। कुत्रापि न शान्तिः भवति न च ....(प्रगति) अनुशासनं विना। इदमेव अस्माकं ....(जीवन) केन्द्रस्थमस्ति। इदं सहयोगस्य ....(भावना) जनयति। ....(एकता) स्थापयति। निस्संदेहम् ....(इदम्) सर्वत्र पालयितव्यम्।

6. संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत –

(क) अहिंसा परम धर्म है।

(ख) सब लोग समान हैं।

(ग) भेदभाव करना गलत है।

(घ) बन्धुत्व सुख का कारण है।

(घ) हम सबको शान्ति के लिए प्रयास करना चाहिए।

3HM6A4

एकादशः पाठः

भारतीवसन्तगीतिः

3HH2BR

प्रस्तुत गीत आधुनिक संस्कृत–साहित्य के प्रख्यात कवि पं. जानकी वल्लभ शास्त्री की रचना 'काकली' नामक गीतसंग्रह से संकलित है। इसमें सरस्वती की वन्दना करते हुए कामना की गई है कि हे सरस्वती! ऐसी वीणा बजाओ, जिससे मधुर मंजरियों से पीत पंक्तिवाले आम के वृक्ष, कोयल का कूजन, वायु का धीरे–धीरे बहना, अमराइयों में काले भ्रमरों का गुञ्जार और नदियों का (लीला के साथ बहता हुआ) जल, वसन्त ऋतु में मोहक हो उठे। स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि में लिखी गई यह गीतिका एक नवीन चेतना का आवाहन करती है तथा ऐसे वीणास्वर की परिकल्पना करती है जो स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जनसमुदाय को प्रेरित करे ।

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्
मृदुं गाय गीतिं ललित–नीति–लीनाम्।
मधुर–मञ्जरी–पिञ्जरी–भूत–मालाः
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः
कलापाः ललित–कोकिला–काकलीनाम् ।।1।।
निनादय ......।।

वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे
कलिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे,
नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम् ।।2।।
निनादय ......।।

ललित–पल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे
मलयमारुतोच्चुम्बिते मञ्जुकुञ्जे,
स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम् ।।3।।
निनादय ......।।

लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम्

चलेदुच्छलेत्कान्तसलिलं सलीलम्,

तवाकर्ण्य वीणामदीनां नदीनाम् ।।4।।

निनादय ......।।

शब्दार्थाः

निनादय	–	गुंजित करो,बजाओ
मृदुम्	–	कोमल
गाय	–	गााओ
ललित–नीति–लीनाम्	–	सुन्दर नीति में लीन
मञ्जरी	–	आम्रपुष्प
पिञ्जरीभूतमालाः	–	पीले वर्ण से युक्त पंक्तियाँ
लसन्ति	–	सुशोभित हो रही हैं
इह	–	यहाँ
सरसाः	–	मधुर
रसालाः	–	आम के पेड़
कलापाः	–	समूह
काकली	–	कोयल की आवाज
सनीरे	–	जल से पूर्ण
समीरे	–	हवा में
कलिन्दात्मजायाः	–	यमुना नदी के
सवानीरतीरे	–	बेंत की लता से युक्त तट पर
नताम्	–	झुकी हुई
मधुमाधवीनाम्	–	मधुर मालती लताओं का

ललितपल्लवे	–	सुंदर, मन को आकर्षित करनेवाले पत्ते
पुष्पपुञ्जे	–	पुष्पों के समूह पर
मलयमारुतोच्चुम्बिते	–	चन्दन वृक्ष की सुगन्धित वायु से स्पर्श किए गए
मञ्जुकुञ्जे	–	सुन्दर लताओं से आच्छादित स्थान
स्वनन्तीम्	–	ध्वनि करती हुई
ततिम्	–	पंक्ति को, समूह को
प्रेक्ष्य	–	देखकर
मलिनाम्	–	मलिन
अलीनाम्	–	भ्रमरों के
सुमम्	–	पुष्प को
शान्तिशीलम्	–	शान्ति से युक्त
उच्छलेत्	–	उच्छलित हो उठे
कान्तसलिलम्	–	स्वच्छ जल
सलीलम्	–	खेल–खेल के साथ
आकर्ण्य	–	सुनकर

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –

(क) कविः वीणापाणिं किं कथयति ?

(ख) वसन्ते के लसन्ति ?

(ग) मधुमाधवीनां पंक्तिः कीदृशी अस्ति ?

(घ) अलीनां ततिः कीदृशी अस्ति ?

2.'क' स्तम्भे पदानि, 'ख' स्तम्भे तेषां पर्यायपदानि दत्तानि। तानि चित्वा पदानां समक्षे लिखत–

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः		'ग' उत्तराणि
(क) सरस्वती	(1) तीरे	=	....
(ख) आम्रम्	(2) अलीनाम्	=	....
(ग) पवनः	(3) समीरः	=	....
(घ) तटे	(4) वाणी	=	....
(ङ.) भ्रमराणाम्	(5) रसालः	=	....

3. अधोलिखतानि पदानि प्रयुज्य संस्कृतभाषया वाक्यरचनां कुरुत –

(क) निनादय

(ख) मन्दमन्दम्

(ग) मारुतः

(घ) सलिलम्

(ङ.) सुमनः

4. प्रथमश्लोकस्य आशयं मातृभाषया लिखत –

5. अधोलिखितपदानां विलोमपदानि लिखत –

(क) कठोरम् – ....

(ख) कटु – ....

(ग) शीघ्रम् – ....

(घ) प्राचीनम् – ....

(ङ्. नीरसः – ....

7. पाठेऽस्मिन् वीणायाः चर्चा अस्ति। अन्येषां पञ्चवाद्ययन्त्राणां चित्रं रचयित्वा तेषां नामानि लिखत।

योग्यताविस्तारः

अन्वय और हिन्दी भावार्थ

अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय। ललितनीतिलीनां गीतिं मृदुं गाय।

हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ, सुन्दर नीतियों से परिपूर्ण गीत का मधुर गान करो।

इहवसन्ते मधुरमञ्जरीपिञ्जरीभूतमालाः सरसाः रसालाः लसन्ति। ललित–कोकिलाकाकलीनां कलापाः (विलसन्ति)। अये वाणि ! नवीनां वीणां निनादय।

इस वसन्त में मधुर मंजरियों से पीली हो गई सरस आम के वृक्षों की माला सुशोभित हो रही है। मनोहर काकली (बोली, कूक) वाली कोकिलों के समूह सुन्दर लग रहे हैं। हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

कलिन्दात्मजायाः सवानीरतीरे सनीरे समीरे मन्दमन्दं वहति (सति) माधुमाधवीनां नतां

पङ्क्तिम् अवलोक्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

यमुना के वेतस लताओं से घिरे तट पर जल बिन्दुओं से पूरित वायु के मन्द मन्द बहने पर फूलों से झुकी हुई मधुमाधवी लता को देखकर, हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

ललितपल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे मञ्जुकुञ्जे मलय–मारुतोच्चुम्बिते स्वनन्तीम् अलीनां मलिनां ततिं प्रेक्ष्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

मलयपवन से स्पृष्ट ललित पल्लवों वाले वृक्षों, पुष्पपुंजों तथा सुन्दर कुंजों पर काले भौंरों की गुंजार करती हुई पंक्ति को देखकर, हे वाणी नवीन वीणा को बजाओ।

तव अदीनां वीणाम् आकर्ण्य लतानां नितान्तं शान्तिशीलं सुमं चलेत् नदीनां कान्तसलिलं सलीलम् उच्छलेत्। अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

तुम्हारी ओजस्विनी वीणा को सुनकर लताओं के नितान्त शान्त सुमन हिल उठें, नदियों का

मनोहर जल क्रीडा करता हुआ उछल पड़े। हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

3I5XDE

3IETF2

द्वादशः पाठः

लौहतुला

प्रस्तुत पाठ विष्णुशर्मा द्वारा रचित 'पञ्चतन्त्रम्' नामक कथाग्रन्थ के 'मित्रभेद' नामक तन्त्र से संकलित है। इसमें विदेश से लौटकर जीर्णधन नामक व्यापारी अपनी धरोहर (तराजू) को सेठ से माँगता है। 'तराजू चूहे खा गए हैं' ऐसा सुनकर जीर्णधन उसके पुत्र को स्नान के बहाने नदी तट पर ले जाकर गुफा में छिपा देता है। सेठ द्वारा अपने पुत्र के विषय में पूछने पर जीर्णधन कहता है कि 'पुत्र को बाज उठा ले गया है।' इस प्रकार विवाद करते हुए दोनों न्यायालय पहुँचते हैं जहाँ धर्माधिकारी उन्हें समुचित न्याय प्रदान करते हैं।

आसीत् कस्मिंश्चिद् अधिष्ठाने जीर्णधनो नाम वणिक्पुत्रः। स च विभवक्षयाद्देशान्तर गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्। "यत्रदेशेऽथवा स्थाने भोगाः भुक्ताः स्थीयतेः। तस्मिन्विभवहीनो यो वसेत्स पुरुषाधमः"।। तस्य च गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुलासीत्। तां च कस्यचित् श्रेष्ठिनो गृहे निक्षेपभूतां कृत्वा देशान्तरं प्रस्थितः। ततः सुचिरं कालं देशान्तरं यथेच्छया भ्रान्त्वा पुनःस्वपुरमागत्य तं श्रेष्ठिनमुवाच–"भोः श्रेष्ठिन्! दीयतां मे सा निक्षेपतुला।"

स आह–"भोः! नास्ति सा, त्वदीया तुला मूषकैर्भक्षिता" इति।

जीर्णधन आह–"भोः श्रेष्ठिन्! नास्ति दोषस्ते, यदि मूषकैर्भक्षितेति। ईदृगेवायं संसारः। न किञ्चिदत्र शाश्वतमस्ति। परमहं नद्यां स्नानार्थं गमिष्यामि। तत् त्वमात्मीयं शिशुमेनं धनदेवनामानं मया सह स्नानोपकरणहस्तं प्रेषय" इति।

स श्रेष्ठी स्वपुत्रमुवाच–"वत्स! पितृव्योऽयं तव, स्नानार्थं यास्यति, तद् गम्यतामनेन सार्धम्" इति।

अथासौ वणिक्शिशुः स्नानोपकरणमादाय प्रहृष्टमनाः तेन अभ्यागतेन सह प्रस्थितः। तथानुष्ठिते स वणिक् स्नात्वा तं शिशुं गिरिगुहायां प्रक्षिप्य, तद्द्वारं बृहच्छिलयाच्छाद्य सत्वरं गृहमागतः।

पृष्टश्च तेन वणिजा–"भोः! अभ्यागत! कथ्यतां कुत्र मे शिशुर्यस्त्वया सह नदीं गतः"? इति।

स आह–"नदीतटात्स श्येनेन हृतः" इति।

श्रेष्ठ्याह – "मिथ्यावादिन्! किं क्वचित् श्येनो बालं हर्तुं शक्नोति? तत् समर्पय मे सुतम् अन्यथा राजकुले निवेदयिष्यामि।" इति।

स आह–"भोः सत्यवादिन्! यथा श्येनो बालं न नयति, तथा मूषका अपि लौहघटितां तुलां न भक्षयन्ति। तदर्पय मे तुलाम् यदि दारकेण प्रयोजनम्।" इति।

एवं विवदमानौ तौ द्वावपि राजकुलं गतौ। तत्र श्रेष्ठी तारस्वरेण प्रोवाच–भोः! अब्रह्मण्यम्! अब्रह्मण्यम्! मम शिशुरनेन चौरेणापहृतः" इति।

अथ धर्माधिकारिणस्तमूचुः –"भोः! समर्पयतां श्रेष्ठिसुतः"।

स आह –"किं करोमि? पश्यतो मे नदीतटाच्छ्येनेन अपहृतः शिशुः"। इति।

तच्छ्रुत्वा ते प्रोचुः – भोः! न सत्यमभिहितं भवता किं श्येनः शिशुं हर्तुं समर्थो भवति?

स आह – भोः भोः! श्रूयतां मद्वचः–

तुलां लौहसहस्त्रस्य यत्रा खादन्ति मूषकाः।

राजन्तत्र हरेच्छ्येनो बालकं, नात्र संशयः।।

ते प्रोचुः –"कथमेतत्"।

ततः स श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं निवेदयामास। ततस्तैर्विहस्य द्वावपि तौ परस्परं संबोध्य तुला–शिशु–प्रदानेन सन्तोषितौ।

शब्दार्थाः

अधिष्ठाने	–	स्थान पर
विभवक्षयात्	–	धन के अभाव के कारण
लौहघटिता तुला	–	लोहे से बनी हुई तराजू
निक्षेपः	–	धरोहर
भ्रान्त्वा	–	पर्यटन करके
त्वदीया	–	तुम्हारी
भवदीया	–	आपकी
ईदृक्	–	ऐसा ही
एनम्	–	इसे
आत्मीयम्	–	अपना
स्नानोपकरणहस्तम्	–	स्नान की सामग्री से युक्त हाथवाला
वणिजा	–	व्यापारी के द्वारा
श्येनः	–	बाज
अब्रह्मण्यम्	–	घोर अन्याय
समर्पय	–	दो
विवदमानौ	–	झगड़ा करते हुए
तारस्वरेण	–	जोर से
ऊचुः	–	बोले
अभिहितम्	–	कहा गया
मद्वचः	–	मेरी बातें
आदितः	–	आरम्भ से
निवेदयामास	–	निवेदन किया
विहस्य	–	हँसकर
संबोध्य	–	समझा बुझा कर
लौहसहस्रस्य	–	लगभग 1 1/2 मन से अधिक लोहा।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत।

क) कुत्र गन्तुं वणिक्पुत्रः व्यचिन्तयत्?

ख) स्वतुलां याचमानं जीर्णधनं श्रेष्ठी किम् अकथयत्?

ग) जीर्णधनः गिरिगुहाद्वारं कया आच्छाद्य गृहमागतः?

घ) स्नानानन्तरं पुत्रविषये पृष्टः वणिक्पुत्रः श्रेष्ठिनं किम् उवाच?

ड.) धर्माधिकारिभिः जीर्णधनश्रेष्ठिनौ कथं सन्तोषितौ?

2. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।

क) **जीर्णधनः** विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्।

ख) श्रेष्ठिनः शिशुः स्नानोपकरणमादाय **अभ्यागतेन** सह प्रस्थितः।

ग) **श्रेष्ठी** उच्चस्वरेण उवाच – भोः अब्रह्मण्यम् अब्रह्मण्यम्।

घ) स्थूल **सभ्यैः** तौ परस्परं संबोध्य तुला–शिशु–प्रदानेन सन्तोषितौ।

3. अधोलखितानां श्लोकानाम् अपूर्णोऽन्वयः प्रदत्तः पाठमाधृत्य तं पूरयत।

क) यत्र देशे अथवा स्थाने...............भोगाः भुक्ताः ....विभवहीनः यः........सः पुरुषाधमः।

ख) राजन्! यत्रा लौहसहस्रस्य .... मूषकाः .... तत्र श्येनः .... हरेत् अत्र संशयः न।

4. तत्पदं रेखाङ्कितं कुरुत यत्र।

क) ल्यप् प्रत्ययः नास्ति

विहस्य, लौहसहस्रस्य, संबोध्य, आदाय

ख) यत्र द्वितीया विभक्तिः नास्ति

श्रेष्ठिनम्, स्नानोपकरणम्, सत्त्वरम्, कार्यकारणम्

ग) यत्र षष्ठी विभक्तिः नास्ति

पश्यतः, प्रहृष्टमनाः, श्रेष्ठिनः सभ्यानाम्

5. सन्धिना सन्धिविच्छेदेन वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

क) श्रेष्ठ्याह = ... + आह

ख) .... = द्वौ + अपि

ग) पुरुषोपार्जिता = पुरुष + ...

घ) .... = यथा + इच्छया

ङ.) स्नानोपकरणम् = ...+ उपकरणम्

च) .... = स्नान + अर्थम्

6. समस्तपदं विग्रहं वा लिखत–

विग्रहः		**समस्तपदम्**
क) स्नानस्य उपकरणम्	=	....
ख)	=	गिरिगुहायाम्
ग) धर्मस्य अधिकारी	=	....
घ)	=	विभवहीनाः

3INPGP

त्रयोदशः पाठः

भ्रान्तो बालकः

3IXKIC

प्रस्तुत पाठ 'संस्कृत प्रौढपाठावलिः' नामक ग्रंथ से सम्पादित कर लिया गया है। इस कथा में एक ऐसे बालक का चित्रण है, जिसका मन अध्ययन की अपेक्षा खेल–कूद में लगा रहता है। यहाँ तक कि वह खेलने के लिए पशु–पक्षियों तक का आवाहन करता है किन्तु कोई उसके साथ खेलने के लिए तैयार नहीं होता। इससे वह बहुत निराश होता है। अन्ततः उसे बोध होता है कि सभी अपने–अपने कार्यों में व्यस्त हैं। केवल वही बिना किसी काम के इधर–उधर घूमता रहता है। वह निश्चय करता है कि अब व्यर्थ में समय गँवाना छोड़कर अपना कार्य करेगा।

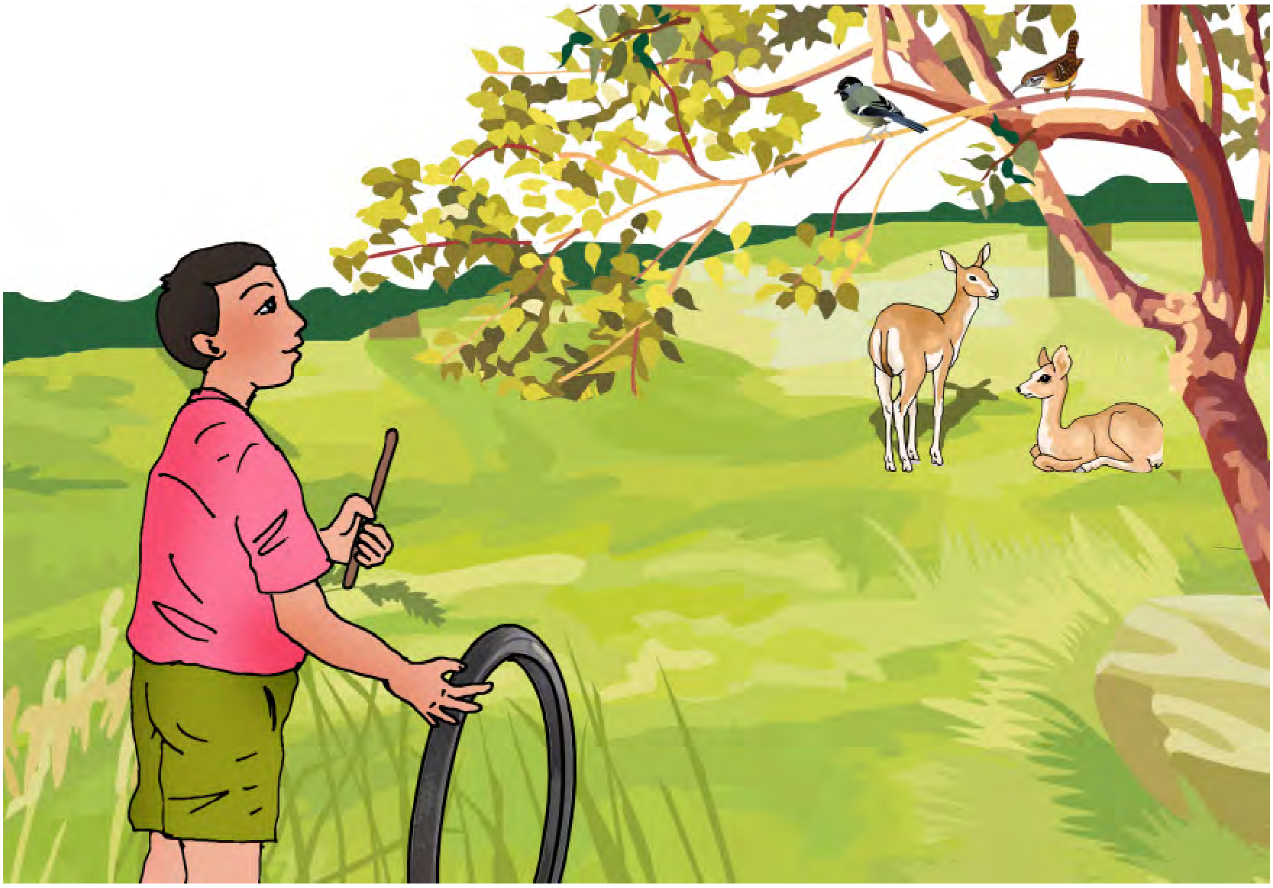

भ्रान्तः कश्चन बालः पाठशालागमनवेलायां क्रीडितुं निर्जगाम। किन्तु तेन सह केलिभिः कालं क्षेप्तुं तदा कोऽपि न वयस्येषु उपलभ्यमान आसीत्। यतस्ते सर्वेऽपि पूर्वदिनपाठान् स्मृत्वा विद्यालयगमनाय त्वरमाणा बभूवुः। तन्द्रालुर्बालो लज्जया तेषां दृष्टिपथमपि परिहरन्नेकाकी किमप्युद्यानं प्रविवेश।

स चिन्तयामास– विरमन्त्वेते वराकाः पुस्तकदासाः। अहं पुनरात्मानं विनोदयिष्यामि। ननु भूयो द्रक्ष्यामि क्रुद्धस्य उपाध्यायस्य मुखम्। सन्त्वेते निष्कुटवासिन एव प्राणिनो मम वयस्या इति।

अथ स पुष्पोद्यानं व्रजन्तं मधुकरं दृष्ट्वा तं क्रीडाहेतोराह्वयत्। स द्विस्त्रिरस्याह्वानमेव न मानयामास। ततो भूयो भूयः हठमाचरति बाले सोऽगायत्–वयं हि मधुसंग्रहव्यग्रा इति।

तदा स बालः 'कृतमनेन मिथ्यागर्वितेन कीटेन' इत्यन्यतो दत्तदृष्टिश्चटकमेकं चञ्च्वा तृणशलाकादिकम् आददानमपश्यत्। उवाच च – "अयि चटकपोत! मानुषस्य मम मित्रं भविष्यसि ? एहि क्रीडावः। त्यज शुष्कमेतत् तृणम् स्वादूनि भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि" इति। स तु 'नीडः कार्यों बटद्रुशाखायां तद्यामि कार्येण' इत्युक्त्वा स्वकर्मव्यग्रो बभूव।

तदा खिन्नो बालकः एते पक्षिणो मानुषेषु नोपगच्छन्ति। तदन्वेषयाम्यपरं मानुषोचितं विनोदयितारमिति परिक्रम्य पलायमानं कमपि श्वानमवालोकयत्। प्रीतो बालस्तमित्थं सम्बोधयामास रे मानुषाणां मित्र! किं पर्यटसि अस्मिन् निदाघदिवसे? आश्रयस्वेदं प्रच्छायशीतलं तरुमूलम्। अहमपि क्रीडासहायं त्वामेवानुरूपं पश्यामीति। कुक्कुरः प्रत्याह –

यो मां पुत्रप्रीत्या पोषयति स्वामिनो गृहे तस्य
रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि।। इति।

सर्वैरेवं निषिद्धः स बालो विघ्नितमनोरथः सन्–'कथमस्मिन् जगति प्रत्येकं स्व–स्वकृत्ये निमग्नो भवति। न कोऽप्यहमिव वृथा कालक्षेपं सहते। नम एतेभ्यः यैर्मे तन्द्रालुतायां कुत्सा समापादिता। अथ स्वोचितमहमपि करोमि इति विचार्य त्वरितं पाठशालामुपजगाम।

ततः प्रभृति स विद्याव्यसनी भूत्वा महतीं वैदुषीं प्रथां सम्पदं च लेभे।

शब्दार्थाः

भ्रान्तः	–	भ्रमित
क्रीडितुम्	–	खेलने के लिए
निर्जगाम	–	निकल गया
केलिभिः	–	खेल द्वारा
कालं क्षेप्तुम्	–	समय बिताने के लिए
त्वरमाणाः	–	शीघ्रता करते हुए
तन्द्रालुः	–	आलसी

दृष्टिपथम्	–	निगाह
चिन्तयामास	–	सोचा
पुस्तकदासाः	–	पुस्तकों के गुलाम
उपाध्यायस्य	–	गुरु के
निष्कुटवासिनः	–	वृक्ष के कोटर में रहने वाले
क्रीडाहेतोः	–	खेलने के निमित्त
आह्वानम्	–	बुलावा
हठमाचरति	–	हठ करने पर
मधुसंग्रहव्यग्राः	–	पुष्प के रस के संग्रह में लगे
भूयो भूयः	–	बार–बार
मिथ्यागर्वितेन	–	झूठे गर्व वाले
चटकम्	–	चिड़िया
चञ्च्वा	–	चोंच से
आददानम्	–	ग्रहण करते हुए को
स्वादूनि	–	स्वादयुक्त
भक्ष्यकवलानि	–	खाने के लिए उपयुक्त कौर
स्वकर्मव्यग्रः	–	अपने कार्यों में संलग्न
अन्वेषयामि	–	खोजता हूँ
विनोदयितारम्	–	मनोरंजन करने वाले को
पलायमानम्	–	भागते हुए
अवलोकयत्	–	देखा
बटद्रुशाखायां	–	बरगद के पेड़ की शाखा पर
सम्बोधयामास	–	सम्बोधित किया
निदाघदिवसे	–	गर्मी के दिन में

केलीसहायम्	–	खेल में सहयोगी
अनुरूपम्	–	उपयुक्त
कुक्कुरः	–	कुत्ता
रक्षानियोगकरणात्	–	रक्षा के कार्य में लगे होने से
भ्रष्टव्यम्	–	हटना चाहिए
ईषदपि	–	थोड़ा–सा भी
निषिद्धः	–	मना किया गया
विघ्नितमनोरथः	–	टूटी इच्छाओं वाला
कालक्षेपम्	–	समय बिताना
तन्द्रालुतायाम्	–	आलस्य में
कुत्सा	–	घृणाभाव
विद्याव्यसनी	–	विद्या में रत रहने वाला
प्रथाम्	–	ख्याति, प्रसिद्धि

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत।

(क) बालः कदा क्रीडितुं निर्जगाम ?

(ख) बालस्य मित्राणि किमर्थं त्वरमाणा बभूवुः ?

(ग) मधुकरः बालकस्य आह्वानं केन कारणेन न अमन्यत ?

(घ) बालकः कीदृशं चटकम् अपश्यत् ?

(ङ.) बालकः चटकाय क्रीडनार्थं कीदृशं लोभं दत्तवान् ?

(च) खिन्नः बालकः श्वानं किम् अकथयत् ?

(छ) विघ्नितमनोरथः बालः किम् अचिन्तयत् ?

2. निम्नलिखितस्य श्लोकस्य भावार्थं मातृभाषया लिखत।

यो मां पुत्रप्रीत्या पोषयति स्वामिनो गृहे तस्य।
रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि।।

3. ''भ्रान्तो बालः'' इति कथाया सारांशं मातृभाषया लिखत।

4. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।

(क) **स्वादूनि** भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि।

(ख) **चटकः** स्वकर्मणि व्यग्रः आसीत्।

(ग) कुक्कुरः **मानुषाणां** मित्रम् अस्ति।

(घ) स महतीं **वैदुषीं** लब्धवान्।

(ङ.) **रक्षानियोगकरणात्** मया न भ्रष्टव्यम् इति।

5. 'क' स्तम्भे समस्तपदानि 'ख' स्तम्भे च तेषां विग्रहः दत्तानि, तानि यथासमक्षं लिखत।

क	ख		
(क) दृष्टिपथम्	(1) पुष्पाणाम् उद्यानम्	=	....
(ख) पुस्तकदासाः	(2) विद्यायाः व्यसनी	=	....
(ग) विद्याव्यसनी	(3) दृष्टेः पन्थाः	=	....
(घ) पुष्पोद्यानम्	(4) पुस्तकानां दासाः	=	....

6. अधोलिखितेषु पदयुग्मेषुं एकं विशेष्यपदम् अपरञ्च विशेषणपदम्। विशेषणपदम् विशेष्यपदं च पृथक्–पृथक् चित्वा लिखत –

		विशेषणम्	विशेष्यम्
(1) खिन्नः बालः	–	....	....
(2) पलायमानं श्वानम्	–	....	....
(3) प्रीतः बालकः	–	....	....

(4) स्वादूनि भक्ष्यकवलानि — ....

(5) त्वरमाणाः वयस्याः — ....

7. कोष्ठकगतेषु पदेषु सप्तमीविभक्तेः प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत।

(1) बालः .... क्रीडितुं निर्जगाम। (पाठशालागमनवेला)

(2) .... जगति प्रत्येकं स्वकृत्ये निमग्नो भवति। (इदम्)

(3) खगः .... नीडं करोति। (शाखा)

(4) अस्मिन् .... किमर्थं पर्यटसि ? (निदाघदिवस)

(5) .... हिमालयः उच्चतमः। (नग)

योग्यताविस्तारः

क्रिया के निम्नलिखित रूपों को ध्यानपूर्वक देखें समझें व अभ्यास करें —

पठति — पढ़ता/पढ़ती है, पाठयति–पढ़ाता/पढ़ाती है, पाठयामास–पढ़ाया

यथा — सः पुस्तकं पठति।

शिक्षकः छात्रान् पाठयति।

आचार्यः वेदान् पाठयामास।

3VBTYH

इसी प्रकार कुछ अन्य रूप भी प्रस्तुत हैं–

बोधति	बोधयति	बोधयामास
करोति	कारयति	कारयामास
लिखति	लेखयति	लेखयामास
गच्छति	गमयति	गमयामास
हसति	हासयति	हासयामास
शृणोति	श्रावयति	श्रावयामास

व्याकरण खण्ड

किसी भी विकासशील भाषा में एकरूपता बनाए रखने के लिए सुसम्बद्ध एवं प्रामाणिक व्याकरण की आवश्यकता होती है। यह हमें भाषा का शुद्ध उपयोग – बोलना, लिखना, पढ़ना आदि सिखाता है। संस्कृत भाषा एवं साहित्य का अध्यापन करने के लिए संस्कृत–व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। संस्कृत व्याकरण में पाणिनि रचित 'अष्टाध्यायी' सर्वमान्य एवं प्रामाणिक व्याकरण ग्रन्थ है।

संस्कृत भाषा का वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत महत्त्व है। कालक्रम में संस्कृत का स्वरूप भी बदला है। इसीलिए जो प्राचीन वेदों की भाषा है उसमें और बाद की लौकिक संस्कृत यानी साहित्यिक ग्रंथों में प्रयुक्त संस्कृत में भी अंतर दिखता है। लौकिक संस्कृत के प्रयोग में भी समय के साथ अंतर आया है, लेकिन वह कमोबेश पाणिनि के व्याकरण का पालन करता है।

संस्कृत की ध्वनियों को स्वर (Vowel) और व्यंजन (Consonant) में बाँटा जाता है।

स्वर वर्ण – संस्कृत वर्णमाला में 13 स्वर हैं। यथा– अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ऋ,ॠ,ऌ,ए,ऐ,ओ,औ। स्वर वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में वायु बिना रुकावट के मुँह से बाहर निकलती है। स्वर के तीन भेद हैं –

ह्रस्व – जिनको बोलने में एक मात्रा का समय लगता है उसे ह्रस्व कहते हैं। जैसे – अ, इ, उ, ऋ।

दीर्घ – जिनको बोलने में दो मात्रा का समय लगता है उसे दीर्घ कहते हैं। जैसे – आ, ई, ऊ, ॠ।

प्लुत् – जिनको बोलने में तीन मात्रा का समय लगता है उसे प्लुत कहते हैं। इसका प्रयोग प्रायः पुकारने में होता है। जैसे – हे राम.......3, हे प्रभो...... 3 !

व्यञ्जन वर्ण – व्यञ्जन के उच्चारण में वायु के मुँह से निकलने में थोड़ी रुकावट आती है। इसके लिए स्वर की सहायता लेनी पड़ती है। वर्णमाला में 33 व्यञ्जन वर्ण हैं।

इसके अलावा वर्णों को कई अन्य आधारों पर भी वर्गीकृत किया जाता है। सबसे अधिक प्रचलित है व्यञ्जनों का उच्चारण के स्थान (Points of articulation) के आधार पर वर्गीकरण। यह मुख्यतः 5 प्रकार का बताया गया है – कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य और ओष्ठ्य।

कंठ्य – अ, आ, कवर्ग (क् ख् ग् घ् ङ्), ह् और विसर्ग कंठ से बोले जाते हैं। इसलिए इन्हें कंठ्य कहते हैं।

तालव्य – इ, ई, चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्), य् और श् तालु से बोले जाते हैं। इसलिए इन्हें तालव्य कहते हैं।

मूर्धन्य – ऋ, दीर्घ ऋ, टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्), र् और ष् मूर्धा से बोले जाते हैं। इसलिए इन्हें मूर्धन्य कहते हैं।

दन्त्य – ऌ, तवर्ग (त् थ् द् ध् न्), ल् और स् दाँत से बोले जाते हैं। इसलिए इन्हें दन्त्य कहते हैं।

ओष्ठ्य –उ, ऊ, पवर्ग (प् फ् ब् भ् म्) आदि ओंठ से बोले जाते हैं। इसलिए इन्हें ओष्ठ्य कहते हैं।

ध्वनियों के उच्चारण में होनेवाली क्रिया को प्रयत्न कहते हैं। उच्चारण के क्रम में अंदर से निकलनेवाली वायु अलग–अलग प्रकार के प्रयत्न से बाहर आती है। उससे उनका स्वरूप बदल जाता है। प्रयत्न के आधार पर कुछ महत्त्वपूर्ण विभाजन हैं –

स्पर्श वर्ण (Stop/Occlusive) –इसमें वाग्यंत्र के दो अवयवों का कहीं न कहीं स्पर्श होता है।

संघर्षी या उष्म वर्ण (Fricative/Spirant) – इसके उच्चारण में वाग्यंत्र के अवयव एक दूसरे के इतने करीब आ जाते हैं कि अंदर की वायु दोनों के बीच रगड़ खाकर निकलती है। इस कारण उच्चारण में घर्षण की ध्वनि होती है।

अंतस्थ वर्ण (Semivowel) – इसके उच्चारण में व्यंजनों की तरह मुँह न पूरा बंद होता है और न स्वरों की तरह पूरा खुला रहता है। ये स्वर और व्यंजन के बीच के वर्ण हैं।

नासिक्य/अनुनासिक – इसके उच्चारण में मुख के साथ नाक से भी सहायता ली जाती है। वर्ग के पंचम वर्ण अनुनासिक हैं।

स्वरतंत्रियों के आधार पर व्यंजन के दो भेद हैं –

घोष वर्ण – इसके उच्चारण में स्वरतंत्रियों के बहुत पास आ जाने से अंदर की वायु अवरुद्ध हो जाती है। अवरुद्ध वायु के वेग से स्वरतंत्रियों में कम्पन पैदा होता है। वर्ग के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण तथा ह घोष वर्ण हैं।

अघोष वर्ण – इसके उच्चारण के समय स्वरतंत्रियाँ खुली रहती हैं और वायु बिना रुकावट के बाहर जाती है। कम्पन नहीं होता है। वर्ग के प्रथम, द्वितीय वर्ण और विसर्ग अघोष हैं।

प्राण का अर्थ है श्वास या वायु की शक्ति। प्राणतत्त्व के आधार व्यंजन के दो भेद हैं –

अल्पप्राण – इसके उच्चारण में वायु का कम प्रयोग होता है। जैसे – वर्ग के प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण

महाप्राण – इसके उच्चारण में वायु का प्रयोग अधिक होता है। जैसे – वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्ण।

उपर्युक्त व्यंजन वर्णों के अलावा अनुस्वार और विसर्ग दो अयोगवाह कहलाते हैं। इसका कारण यह है कि इनका वर्णों के भीतर उल्लेख यानी योग नहीं होने पर भी ये उनका कार्य वहन करते हैं।

संस्कृत की 48 ध्वनियाँ इस प्रकार हैं – 13 स्वर और 35 व्यंजन (33 वर्ण + 2 अयोगवाह)

13 स्वर वर्ण	–	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ए ऐ ओ औ
25 स्पर्श वर्ण	–	क् ख् ग् घ् ङ् – कंठ्य

च् छ् ज् झ् ञ्	–	तालव्य
ट् ठ् ड् ढ् ण्	–	मूर्धन्य
त् थ् द् ध् न्	–	दन्त्य
प् फ् ब् भ् म्	–	ओष्ठ्य
4 अंतस्थ वर्ण	–	य् र् ल् व्
3 अघोष उष्म वर्ण	–	श् ष् स्
1 घोष उष्म वर्ण	–	ह्
1 अघोष ऊष्म	–	विसर्ग
1 शुद्ध अनुनासिक	–	अनुस्वार

शब्दरूप

अकारान्त पुंल्लिङ्ग

बालक

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!

जनक, अश्व, मेघ, द्विज, मृग, छात्र, खग इत्यादि शब्दों के रूप बालक के समान चलेंगे।

इकारान्त पुंल्लिङ्ग

हरि (विष्णु)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः!

मुनि, कवि, विधि, अग्नि इत्यादि शब्दों के रूप हरि के समान चलेंगे।

उकारान्त पुंल्लिङ्ग

गुरु (आचार्य)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थ	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरो!	हे गुरू!	हे गुरवः!

साधु, बाहु, शिशु, तरु इत्यादि शब्दों के रूप गुरु के समान चलेंगे।

ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग

पितृ (पिता, जनक)

विभक्तिः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

भ्रातृ, जमातृ इत्यादि शब्दों के रूप पितृ के समान चलेंगे।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

रमा (लक्ष्मी)

विभक्तिः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

शाला, प्रजा, कन्या, विद्या, कक्षा इत्यादि शब्दों के रूप रमा के समान चलेंगे।

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग

मति (बुद्धि)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतयः!

श्रुति, भूति, गति, शान्ति, प्रकृति इत्यादि शब्दों के रूप मति के समान चलेंगे।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग

नदी

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

जननी, पत्नी, पुत्री, पृथ्वी इत्यादि शब्दों के रूप नदी के समान चलेंगे।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग

धेनु (गाय)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेनवे / धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेनोः / धेन्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेनोः / धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

रेणु (धूल), तनु (शरीर), रज्जु (रस्सी) इत्यादि शब्दों के रूप धेनु के समान चलेंगे।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग

मातृ (माता)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मारतम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

दुहितृ (बेटी), स्वसृ (बहन) इत्यादि शब्दों के रूप ठीक मातृ के समान चलेंगे।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

फल

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

ज्ञान, धन, वस्त्र, पुष्प, गृह इत्यादि शब्दों के रूप फल के समान चलेंगे।

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग

वारि (जल)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि, वारे!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

अस्थि, दधि, अक्षि इत्यादि शब्दों के रूप फल के समान चलेंगे।

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग

मधु (शहद)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधूभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधूभ्याम्	मधूभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधूभ्याम्	मधूभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

दारु (लकड़ी), वस्तु, अम्बु (पानी), वसु (धन), अश्रु (आँसू) इत्यादि शब्दों के रूप मधु के समान चलेंगे।

हलन्त पुंल्लिङ्ग

राजन्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजानः!

भवत् (आप) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवन्!	हे भवन्तौ!	हे भवन्तः!

आत्मन् (आत्मा) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्!	हे आत्मानौ!	हे आत्मानः!

ब्रह्मन्, अश्मन् (पत्थर), मूर्धन् (सिर) इत्यादि शब्दों के रूप आत्मन् के समान चलेंगे।

सकारान्त पुंल्लिङ्ग

चन्द्रमस्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पञ्चमी	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
षष्ठी	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमःसु (चन्द्रमस्सु)
सम्बोधन	हे चन्द्रमः!	हे चन्द्रमसौ!	हे चन्द्रमसः!

सुमनस् (अच्छा चित्त वाला) महायशस् (बड़ा यशस्वी), महातेजस् (बड़ी कांति वाला) इत्यादि शब्दों के रूप चन्द्रमस् के समान चलेंगे।

तकारान्त पुंल्लिङ्ग

गच्छत् (जाता हुआ)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
पञ्चमी	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्तः!

धावत् (दौड़ता हुआ), पठत् (पढ़ता हुआ), वदत् (बोलता हुआ), पतत् (गिरता हुआ), भवत् (होता हुआ) इत्यादि शतृ प्रत्यय के शब्दों के रूप गच्छन् के समान चलेंगे।

सर्व (सब) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेष शब्द के रूप पुंलिंग के अनुसार चलेंगे।

यद् (जो) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

शेष रूप पुंलिंग के समान होंगे।

इदम् (यह) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

शेष रूप पुंलिंग के समान होते हैं।

एतद् (यह) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	एतत्, एतद्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्, एतद्	एते	एतानि

शेष रूप पुंलिग के समान चलेंगे।

तद् (वह) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

शेष रूप पुंलिंग के समान होते हैं।

किम् (कौन) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

शेष रूप पुंलिंग के समान होंगे।

अस्मद् (मैं)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्/मा	आवाम्/नौ	अस्मान्/नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्/मे	आवाभ्याम्/नौ	अस्मभ्यम्/नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम/मे	आवयोः/नौ	अस्माकम्/नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् (तुम)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्/त्वा	युवाम्/वाम्	युष्मान्/वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्/ते	युवाभ्याम्/वाम्	युष्मभ्यम्/वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव/ते	युवयोः/वाम्	युष्माकम्/वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

संस्कृत में संख्यावाची शब्द

51	एकपञ्चाशत्	76	षट्सप्तति:
52	द्विपञ्चाशत्	77	सप्तसप्तति:
53	त्रिपञ्चाशत्	78	अष्टसप्तति:
54	चतु: पञ्चाशत्	79	नवसप्तति:
55	पञ्चपञ्चाशत्	80	अशीति:
56	षट्पञ्चाशत्	81	एकाशीति:
57	सप्तपञ्चाशत्	82	द्वयशीति:
58	अष्टपञ्चाशत्	83	त्र्यशीति:
59	नवपञ्चाशत्	84	चतु:अशीति:
60	षष्टि:	85	पञ्चाशीति:
61	एकषष्टि:	86	षडशीति:
62	द्विषष्टि:	87	सप्ताशीति:
63	त्रिषष्टि:	88	अष्टाशीति:
64	चतु:षष्टि:	89	नवाशीति:
65	पञ्चषष्टि:	90	नवति:
66	षट्षष्टि:	91	एकानवति:
67	सप्तषष्टि:	92	द्विनवति:
68	अष्टषष्टि:	93	त्रिनवति:
69	नवषष्टि:	94	चतुर्नवति:
70	सप्तति:	95	पञ्चनवति:
71	एकसप्तति:	96	षण्णवति:, षट्नवति:
72	द्विसप्तति:	97	सप्तनवति:
73	त्रिसप्तति:	98	अष्टनवति:
74	चतु:सप्तति:	99	नवनवति:
75	पञ्चसप्तति:	100	शतम्

धातुरूप

भू (होना) धातु (परस्मैपद)

लट् लकार – (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुषः	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुषः	भवामि	भवावः	भवामः

लृट्लकार – भविष्यत् काल

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुषः	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्लकार – (आज्ञार्थ काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुषः	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुषः	भवानि	भवाव	भवाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुषः	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुषः	अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुषः	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुषः	भवेयम्	भवेव	भवेम

पा पिब् (पीना) धातु (परस्मैपद)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुषः	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुषः	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुषः	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुषः	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुषः	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुषः	पिबानि	पिबावः	पिबाम

लङ्लकार भूतकाल

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुषः	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुषः	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुषः	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुषः	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

पच् (पकाना) धातु (परस्मैपद)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यम पुरुषः	पचसि	पचथः	पचथ
उत्तम पुरुषः	पचामि	पचावः	पचामः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुषः	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम पुरुषः	पच	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुषः	पचानि	पचाव	पचाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुषः	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुषः	अपचम्	अपचाव	अपचाम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम पुरुषः	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुषः	पचेयम्	पचेव	पचेम

खेल् (खेलना) धातु (परस्मैपद)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	खेलति	खेलतः	खेलन्ति
मध्यम पुरुषः	खेलसि	खेलथः	खेलथ
उत्तम पुरुषः	खेलामि	खेलावः	खेलामः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	खेलिष्यति	खेलिष्यतः	खेलिष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	खेलिष्यसि	खेलिष्यथः	खेलिष्यथ
उत्तम पुरुषः	खेलिष्यामि	खेलिष्यावः	खेलिष्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	खेलतु	खेलताम्	खेलन्तु
मध्यम पुरुषः	खेल	खेलतम्	खेलत
उत्तम पुरुषः	खेलानि	खेलाव	खेलाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अखेलत्	अखेलताम्	अखेलन्
मध्यम पुरुषः	अखेलः	अखेलतम्	अखेलत
उत्तम पुरुषः	अखेलम्	अखेलाव	अखेलाम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	खेलेत्	खेलेताम्	खेलेयुः
मध्यम पुरुषः	खेलेः	खेलेतम्	खेलेत
उत्तम पुरुषः	खेलेयम्	खेलेव	खेलेम

लिख् (लिखना) धातु

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुषः	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुषः	लिखामि	लिखावः	लिखामः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
उत्तम पुरुषः	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लखिष्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुषः	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुषः	लिखानि	लिखाव	लिखाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुषः	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उत्तम पुरुषः	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
मध्यम पुरुषः	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
उत्तम पुरुषः	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

स्था (तिष्ठ्) धातु (बैठना, ठहरना)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुषः	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुषः	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुषः	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुषः	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	तिष्ठतु,तिष्ठतात्	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुषः	तिष्ठ, तिष्ठतात्	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुषः	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुषः	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुषः	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यम पुरुषः	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तम पुरुषः	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

दृश् धातु (देखना)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुषः	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुषः	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुषः	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुषः	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुषः	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुषः	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुषः	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

अस् धातु (होना)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुषः	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुषः	अस्मि	स्वः	स्मः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुषः	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुषः	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुषः	असानि	असाव	असाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

लभ् (पाना) धातु (आत्मनेपद)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुषः	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुषः	लभे	लभावहे	लभामहे

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुषः	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुषः	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुषः	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुषः	लभै	लभावहै	लभामहै

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुषः	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुषः	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथम पुरुषः	लभेत्	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुषः	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुषः	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

सेव् धातु (आत्मनेपद)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथम पुरुषः	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुषः	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुषः	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथम पुरुषः	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुषः	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुषः	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथम पुरुषः	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुषः	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुषः	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुषः	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुषः	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	सेवेत्	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुषः	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुषः	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

सन्धि प्रकरण

सन्धि का साधारण अर्थ मेल–मिलाप, समझौता, मेल जोल आदि है। व्याकरण में भी सन्धि का यही अर्थ है। व्याकरण में यह समझौता दो वर्णो के मध्य होता है। इसी क्रिया को व्याकरण में सन्धि कहते हैं। इसमें

कभी दो वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण बन जाता है। सुर+इन्द्रः = सुरेन्द्रः। सूर्य+उदयः = सूर्योदयः

कभी पूर्व वर्ण में परिवर्तन हो जाता है – भो+अति = भवति। सु+आगतम् = स्वागतम्

कभी–कभी उत्तर पद का लोप हो जाता है – वने+अस्ति =वनेऽस्ति। प्रभो+अस्तु = प्रभोऽस्तु

कभी पूर्व पद के अन्तिम वर्ण का लोप हो जाता है – प्र+एजते = प्रेजते। उप+ओषति = उपोषति

कभी–कभी दोनों वर्णों के बीच में एक नया वर्ण आ जाता है – तरु + छाया = तरुच्छाया। परि + छेदः = परिच्छेदः

कभी–कभी पूर्व पद के अन्तिम वर्ण को द्वित्व हो जाता है – पठन्+अस्ति = पठन्नति

सन्धि के प्रकार

वर्णों में होने वाली सन्धि तीन प्रकार की होती है।

1. स्वर सन्धि – दो स्वरों के मध्य होने वाली सन्धि को स्वर सन्धि कहते हैं। अर्थात् जब स्वर के साथ स्वर का मेल होता है, तो उसे स्वर संधि कहते हैं।

स्वर संधि के निम्नलिखित भेद होते हैं –

1) दीर्घ

2) गुण

3) वृद्धि

4) यण्

5) अयादि

6) प्रकृतिभाव

7) पूर्वरूप

8) पररूप

दीर्घ सन्धि – यदि ह्रस्व या दीर्घ अ,इ,उ,ऋ में से कोई वर्ण हो और बाद में

यही ह्रस्व या दीर्घ वर्ण हो, तो क्रमशः दीर्घ (आ,ई,ऊ,ॠ) एकादेश होता है।

पहले	बाद में	परिणाम	उदाहरण	
अ या आ	अ या आ	आ (एकादेश)	हिम + आलयः	= हिमालयः
			धन + अर्थी	= धनार्थी
			विद्या + अर्थिनः	= विद्यार्थिनः
			विद्या + आलयः	= विद्यालयः
इ या ई	इ या ई	ई (एकादेश)	रवि + इन्द्रः	= रवीन्द्रः
			कवि + ईश्वरः	= कवीश्वरः
			देवी + इच्छा	= देवीच्छा
			रजनी + ईशः	= रजनीशः

उ या ऊ	उ या ऊ	ऊ (एकादेश)	सु + उक्तिः	= सूक्तिः
			भानु + ऊर्जा	= भानूर्जा
			वधू + उत्सवः	= वधूत्सवः
			भू + ऊर्ध्वम्	= भूर्ध्वम्
ऋ या ॠ	ऋ या ॠ	ॠ एकादेश	पितृ + ऋणम्	= पितॄणम्
			पितृ + ऋद्धिः	= पितॄद्धिः
			मातृ + ऋणम्	= मातॄणम्

गुण सन्धि – प्रथम पद के अन्त में अ या आ हो और द्वितीय पद के प्रारम्भ में इ, या ई हो तो 'ए' उ या ऊ हो तो 'ओ' तथा ऋ या ऋ हो तो 'अर्' गुण एकादेश होता है।

पहले	**बाद में**	**परिणाम**	**उदाहरण**	
अ या आ	इ या ई	ए (एकादेश)	गण + ईशः	= गणेशः
	उ या ऊ	ओ "	रमा + ईशः	= रमेशः
	ऋ या ॠ	अर् "	पर + उपकारः	= परोपकारः
			पुरूष + उत्तमः	= पुरुषोत्तमः
			वर्षा + ऋतुः	= वर्षर्तुः
			ब्रह्मा + ऋषिः	= ब्रह्मर्षिः

वृद्धि सन्धि – पहले अ या आ हो और बाद में ए या ऐ हो तब ऐ एवं ओ या औ हो तब औ, वृद्धि एकादेश होता है । पहले अकारान्त या आकारान्त उपसर्ग के अन्त वाला अ या आ हो और बाद में ऋ हो तब 'आर्' वृद्धि एकादेश होता है –

पहले	**बाद में**	**परिणाम**	**उदाहरण**	
अ या आ	ए या ऐ	ऐ (एकादेश)	अद्य + एव	= अद्यैव
			सा + एव	= सैव
			देश + ऐश्वर्यम्	= देशैश्वर्यम्

अ या आ	ओ या औ	औ (एकादेश)	रूप + ओष्ठः = रूपौष्ठः
			महा + औषधिः = महौषधिः
			विद्या + ओषधिः = विद्यौषधिः
अ या आ	ऋ या ऋ	आर् (एकादेश)	प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति
			उप + ऋच्छन् = उपार्च्छन

यण् सन्धि – पहले इ, ई, उ, ऊ, ऋ या ऌ हो और बाद में इनसे भिन्न कोई अन्य स्वर हो तब इ, ई को 'य्', उ, ऊ को 'व्,' ऋ, दीर्घ ॠ को 'र्' तथा ऌ को 'ल्' यणादेश होता है।

पहले	बाद में	परिणाम	उदाहरण
इ या ई	कोई अन्य स्वर	य् आदेश	यदि + अपि = यद्यपि
			प्रति + एकम् = प्रत्येकम्
			नदी + अम्बुः = नद्यम्बुः
			इति + उवाच = इत्युवाच
उ या ऊ	कोई अन्य स्वर	व् आदेश	सु + आगतम् = स्वागतम्
			भू + आदि = भ्वादि
			गुरु + आदेशः = गुर्वादेशः
			सु + आहा = स्वाहा
ऋ या ॠ	कोई अन्य स्वर	र् आदेशः	पितृ + उपदेशः = पित्रुपदेशः
			मातृ + अधिकारः = मात्राधिकारः
			पितृ + आदेशः = पित्रादेशः
ऌ	कोई अन्य स्वर	ल् आदेश	ऌ + आकृतिः = लाकृतिः

अयादि सन्धि – पहले ए, ओ, ऐ अथवा औ हो तथा बाद में कोई भी स्वर हो तो ए को अय्, ओ को अव् ऐ को आय, तथा औ को आव् अयादेश होता है।

पहले	बाद में	परिणाम	उदाहरण
ए	कोई स्वर	अय् आदेश	कवे + ए = कवये
			ने + अनम् = नयनम्

ओ	कोई स्वर	अव् आदेश	पो + अनम् = पवनम्
			भो + अति = भवति
ऐ	कोई स्वर	आय् आदेश	नै + अकः = नायकः
			गै + अकः = गायकः
औ	कोई स्वर	आव् आदेश	भौ + उकः = भावुकः
			पौ + अनः = पावनः

पूर्वरूप स्वर सन्धि – यदि पदान्त में ए, ओ, हो और बाद में 'अ' हो तो 'अ' को पूर्वरूप (ऽ) हो जाता है। 'अ' को सन्धि करते समय ए, ओ के साथ मिलाकर 'अ' को अवग्रह (ऽ) पूर्वरूप चिह्न लगा दिया जाता है।

पहले	बाद में	परिणाम	उदाहरण
ए	अ	ए ऽ एकादेश	वने + अत्र = वनेऽत्र
			ग्रामे + अपि = ग्रामेऽपि
ओ	अ	ओ ऽ एकादेश	बालो +अस्ति = बालोऽस्ति
			रामो + अवदत् = रामोऽवदत्
			को + अपि = कोऽपि

पररूप संधि – 'अ' से अंत होने वाले उपसर्ग के बाद 'ए' या 'ओ' से प्रारंभ होने वाले धातु हो तो दोनों के स्थान पर पररूप (अर्थात् ए या ओ) एकादेश हो जाता है।

प्र + एजते = प्रेजते (अ+ए = ए)

उप + ओषति = उपोषति (अ+ओ = ओ)

विशेष – शकन्धु आदि शब्दों में टि अर्थात् अन्तिम स्वर सहित अगला अंश को पररूप हो जाता है।

शक + अन्धुः = शकन्धुः

मनस् + ईषा = मनीषा

पतत् + अञ्जलिः = पतञ्जलिः

कुल + अटा = कुलटा

मार्त + अण्डः = मार्तण्डः

प्रकृतिभाव संधि – किसी शब्द के द्विवचन के रूप के अन्त में ई, ऊ तथा ए के आगे किसी स्वर के आने पर कोई भी सन्धि नहीं होती है।

हरी + एतौ = हरी एतौ

विष्णू + इमौ	=	विष्णू इमौ
गंगे + अमू	=	गंगे अमू

व्यञ्जन सन्धि – जब व्यञ्जन के साथ स्वर या व्यञ्जन का मेल हो, तो उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

(1) अच् + अन्तः	=	अजन्तः
(2) सत् + जनः	=	सज्जनः
(3) सत् + आचारः	=	सदाचारः
(4) उत् + डीनः	=	उड्डीनः

विसर्ग–सन्धि – जब विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन का मेल हो, तो उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

कविः + अयम्	=	कविरयम्
सः + अपि	=	सोऽपि
भानुः + उदितः	=	भानुरुदितः
निः + मलम्	=	निर्मलम्
निः + रोगः	=	नीरोगः

समास प्रकरण

समास का अर्थ है संक्षेप। अथवा –"समसनम् अनेकेषां पदानाम् एकपदीभवनम् इति समासः।" जब दो या दो से अधिक पदों को मिलाकर एक पद बना दिया जाता है तब उसे 'समास' कहते हैं और उसे 'समस्त–पद' या 'सामासिक पद' कहते हैं। समस्त पद को अलग करना 'समास–विग्रह' कहलाता है।

जब एक ये अधिक पदों को मिलाया जाता है तब पदों के बीच की विभक्ति (कारक) नहीं रहती। विभक्ति, पदों को मिलाने के पश्चात् अंत में लगाई जाती है। जैसे :– रामः च लक्ष्मणः च इन दो पदों का समास करने पर "रामलक्ष्मणौ" पद में राम और लक्ष्मण इन दो शब्दों को मिलाने के बाद द्विवचन की विभक्ति लगाकर "रामलक्ष्मणौ" पद बनता है।

समास के छः भेद हैं – अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, द्वन्द समास, बहुब्रीहि समास, द्विगु समास, कर्मधारय समास।

अव्ययीभाव समास – जिस समास में पहला पद प्रधान और प्रायः अव्यय होता है उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं।

समास विग्रह	सामासिक पद
बलम् अनतिक्रम्य	यथाबलम्
रूपस्य योग्यम्	अनुरूपम्
गृहम्–गृहम्	प्रतिगृहम्
आ मरणात्	आमरणम्
अक्ष्णः प्रति	प्रत्यक्षम्
जनानाम् अभावः	निर्जनम्
कृष्णस्य समीपम्	उपकृष्णम्

तत्पुरुष समास – जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है उसे 'तत्पुरुष' समास कहते हैं। तत्पुरुष समास में पूर्व पद द्वितीया से सप्तमी तक किसी भी विभक्ति का हो सकता है। इस आधार पर इसके छः भेद होते हैं –

	भेद	समास विग्रह	सामासिक पद
1	द्वितीया तत्पुरुष	ग्रामं गतः	ग्रामगतः
		जीवनं प्राप्तः	जीवनप्राप्तः
		सुखम् आपन्नः	सुखापन्नः
2	तृतीया तत्पुरुष	विद्यया हीनः	विद्याहीनः
		ज्ञानेन शून्यः	ज्ञानशून्यः
		हरिणा त्रातः	हरित्रातः
		धनेन हीनः	धनहीनः
		पित्रा तुल्यः	पितृतुल्यः
3	चतुर्थी तत्पुरुषः	पाठाय शाला	पाठशाला
		विप्राय दानम्	विप्रदानम्
		अश्वाय तृणम्	अश्वतृणम्

4	पञ्चमी विभक्तिः	व्याघ्रात् भयम्	व्याघ्रभयम्
		रोगात् मुक्तः	रोगमुक्तः
		धर्मात् भ्रष्टः	धर्मभ्रष्टः
		पापात् मुक्तः	पापमुक्तः
5	षष्ठी तत्पुरुषः	राज्ञः पुरुषः	राजपुरुषः
		परेषाम् उपकारः	परोपकारः
		विद्यायाः आलयः	विद्यालयः
		विष्णोः भक्तः	विष्णुभक्तः
6	सप्तमी तत्पुरुषः	वाचि पटुः	वाक्पटुः
		शास्त्रेषु निपुणः	शास्त्रनिपुणः
		व्यवहारे कुशलः	व्यवहारकुशलः
		काव्ये प्रवीणः	काव्यप्रवीणः

नञ् तत्पुरुष समास – तत्पुरुष समास का एक भेद 'नञ्' समास है। 'नहीं' अर्थ वाले 'नञ्' का जब दूसरे शब्द के साथ समास होता है तो उसे 'नञ्' समास कहते हैं। 'नञ्' के बाद व्यञ्जन हो, तो 'नञ्' का 'अ' शेष रहता है और बाद में स्वर होने पर 'नञ्' का अन् हो जाता है।

समास विग्रह	सामासिक पद
न ब्राह्मणः	अब्राह्मणः
न प्रियः	अप्रियः
न उपस्थितः	अनुपस्थितः
न उदारः	अनुदारः
न आवश्यकः	अनावश्यकः

द्वन्द्व समास – जिस समास में दोनों पद अथवा सभी पदों की प्रधानता होती है, उसे 'द्वन्द्व' समास कहते हैं। इसका अर्थ करने पर पदों के बीच में 'और' अर्थ निकलता है। कुछ जगह द्वन्द्व समास होने पर समूह का भी अर्थ होता है और पूरा पद एकवचनान्त हो जाता है।

समास विग्रह	सामासिक पद
सीता च रामः च	सीतारामौ
पत्रं च पुष्पं च फलं च	पत्रपुष्पफलानि
माता च पिता च	पितरौ
पाणी च पादौ च	पाणिपादम्
मुखं च नासिका च अनयोः समाहारः	मुखनासिकम्

बहुब्रीहि समास – जिस समास में अन्य पद की प्रधानता होती है, उसे 'बहुब्रीहि समास' कहते हैं। बहुब्रीहि समास में समस्त पद किसी अन्य (विशेष्य) पद के विशेषण बन जाते हैं।

समास–विग्रह	सामासिक–पद
शुक्लम् अम्बरं यस्याः सा	शुक्लाम्बरा (सरस्वती)
लम्बम् उदरं यस्य सः	लम्बोदरः (गणेशः)
पीतम् अम्बरं यस्य सः	पीताम्बरः (विष्णुः)
चत्वारि आननानि यस्य सः	चतुराननः (ब्रह्मा)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः	चन्द्रशेखरः (शंकरः)
यशः एव धनं यस्य सः	यशोधनः (राजा)
गदा हस्ते यस्य सः	गदाहस्तः
वीणा पाणौ यस्याः सा	वीणापाणिः (सरस्वती)
पतितं पर्णं यस्मात् सः	पतितपर्णः (वृक्षः)

द्विगु समास – जिस समास में पहला पद संख्यावाची होता है उसे द्विगु समास कहते हैं। यह समास प्रायः समाहार (समूह) अर्थ में होता है।

समास–विग्रह	सामासिक–पद
त्रयाणां फलानां समाहारः	त्रिफला
चतुर्णां युगानां समाहारः	चतुर्युगम्
पञ्चानां पात्राणां समाहारः	पञ्चपात्रम्
सप्तानाम् अह्नां समाहारः	सप्ताहः

कर्मधारय–समास – जिस समास में विशेष्य–विशेषण भाव होता है उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इसमें दोनों पदो के लिंग, वचन, विभक्ति समान होते हैं।

समास विग्रह	सामासिक पद
नीलं कमलम्	नीलकमलम्
कृष्णः सर्पः	कृष्णसर्पः
पीतम् अम्बरम्	पीताम्बरम्
घन इव श्यामः	घनश्यामः
महान् चासौ देवः	महादेवः
महान् चासौ कविः	महाकविः
दीर्घा च सा नदी	दीर्घनदी
जीर्णम् च तत् उद्यानम्	जीर्णोद्यानम

अव्यय

जो शब्द तीनों लिङ्गों, सभी कारकों और सभी वचनों में एक समान रहते हैं, वे अव्यय कहलाते हैं। अव्यय शब्द 'अविकारी' होते हैं। अव्यय शब्दों का रूप परिवर्तन नहीं होता है। वे प्रत्येक स्थिति में एक समान रहते हैं। जैसे– कुत्र (कहाँ), सर्वत्र (सभी जगह), अद्य (आज), यथा (जैसे), अपि (भी) धिक् आदि।

अव्ययों के पाँच प्रकार प्रमुख हैं :–

क्रिया विशेषण अव्यय	–	यदा, तदा, कदा, एकदा आदि।
संयोजक या समुच्चय बोधक अव्यय	–	एवम्, च, परन्तु अथवा।
सम्बन्ध बोधक अव्यय	–	यावत् (जब तक), तावत् (तब तक) बिना, अन्तरा आदि।
विस्मयादिबोधक अव्यय	–	अहो, धिक्, भो आदि।
निषेधवाचक अव्यय	–	न, नो, नहि, मा, अलम् आदि।

अव्ययों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग

अद्य	=	आज	–	अद्य भवान् कुत्र गमिष्यति ?
इव	=	समान	–	मूर्खः अपि पण्डितः इव वदति।
कुतः	=	किधर, कहाँ से	–	कुतः भवान् आगतः ?
च	=	और	–	अहं संस्कृतं गणितं च साधु जानामि।
यत्र	=	जहाँ	–	यत्र धूमः तत्र अग्निः।
नक्तम्	=	रात्रि	–	अहं नक्तन्दिवं पठामि।
शनैः	=	धीरे	–	कथं त्वं शनैः वदसि ?
ह्यः	=	बीता हुआ कल	–	स ह्यः गृहं गतः।
साम्प्रतम्	=	अब	–	साम्प्रतम् अवकाशः समयः अस्ति।
मा	=	मत	–	कोलाहलं म् कुरु।
मृषा	=	झूठ	–	मृषा मा वद।
उभयतः	=	दोनों ओर	–	ग्रामं उभयतः वनम् अस्ति।
श्वः	=	आने वाला कल	–	अहं श्वः नगरं गमिष्यामि।
सायम्	=	शाम	–	सः सायम् आगतः।
एव	=	ही	–	वयं संस्कृतम् एव वदामः।
नूनम्	=	निश्चय	–	मानवः निजकर्मणः फलं नूनम् आप्नोति।
वृथा	=	व्यर्थ, बेकार	–	सत्येन बिना वचनं वृथा अस्ति।
एवम्	=	इस प्रकार	–	एवम् अकथयत् सः।
एकदा	=	एक बार	–	एकदा अहं नगरम् अगच्छम्।
कदा	=	कब	–	त्वं कदा आगतः ?
कुत्र	=	कहाँ	–	त्वं कुत्र गच्छसि ?
सर्वत्र	=	सभी जगह	–	अति सर्वत्र वर्जयेत्।

ऋते	=	बिना	–	परिश्रमात् ऋते न साफल्यम्।
परह्य	=	बीता हुआ परसों	–	अहं परह्य ग्रामम् अगच्छम्।
परश्वः	=	आने वाला परसों	–	अहं परश्वः पुस्तकं दास्यामि।
न	=	नहीं	–	असत्यं न वदेत्।
अधुना	=	इस समय	–	अधुना अहं क्रीडामि।
अन्तः	=	अन्दर	–	गृहम् अन्तः कलहं नोचितम्।
बहिः	=	बाहर	–	छात्राः कक्षायाः बहिः गच्छन्ति।
सर्वथा	=	सब प्रकार से	–	सः सर्वथा साधुः अस्ति।
ननु	=	अवश्य	–	ननु वयं रामायणं पठिष्यामः।
भूयः	=	बार–बार	–	भूयोऽपि नमो नमस्ते।
एकत्र	=	एक जगह	–	सर्वे छात्राः एकत्र भवन्तु।
अन्यत्र	=	दूसरी जगह	–	त्वम् अन्यत्र गच्छ।
ईषत्	=	थोड़ा	–	ईषत् दुग्धं देहि।
मुहुः	=	बार–बार	–	मुहुः विचिन्त्य वदेत्।
इत्थम्	=	ऐसा इस प्रकार	–	इत्थं कदा भविष्यति ?
निकषा	=	निकट	–	ग्रामं निकषा एकः सरोवरः अस्ति।
चेत्	=	यदि	–	पठिष्यसि चेत् तदैव सफलः भविष्यसि।
सकृत	=	एक बार	–	सिंही सकृत प्रसूते।
आम्	=	ठीक , हाँ	–	आम् अहं गमिष्यामि।
पुरा	=	पहले, पुराने समय में	–	पुरा सर्वत्र धर्मः आसीत्।
पश्चात्	=	पीछे	–	रामात् पश्चात् सीता आगच्छति।
पुरः	=	आगे	–	पुरः गच्छन् सः सर्पम् अपश्यत्।

उपसर्ग

सामान्यतया जो धातुओं के समीप रखे जाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं। उपसर्ग धातु के पूर्व जोड़े जाते हैं तथा उसके अर्थ को विशेषता प्रदान करते हैं। धातुओं के अलावा अन्य शब्दों में भी उपसर्ग जोड़े जाते हैं। जैसे :–

अधि + कृ (धातु) = अधिकरोति

अधि + पति (संज्ञा) = अधिपति

संस्कृत में उपसर्गों की संख्या 22 है । ये हैं – प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

उपसर्गयुक्त क्रियाओं के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

उपसर्ग	क्रियापद	बने शब्द	अर्थ
प्र	सरति	प्रसरति	फैलता है
	नयति	प्रणयति	रचना करता है
	वसति	प्रवसति	विदेश में रहता है
परा	वसति	परावसति	दूर रहता है
	जयति	पराजयते	हारता है
अप	हरति	अपहति	चुराता है
	नयति	अपवदति	निन्दा करता है
	वदति	अपनयति	हटाता है
सम्	गच्छति	संगच्छते	मिलता है
	शेते	संशेते	संदेह करता है
अनु	वदति	अनुवदति	अनुवाद करता है
	गच्छति	अनुगच्छति	अनुगमन करता है
	वर्तते	अनुवर्तते	अनुसरण करता है
अव	रोहति	अवरोहति	उतरता है
	जानाति	अवजानाति	अपमान करता है
निस्	दिशति	निर्दिशति	बतलाता है

निर्	नयति	निर्णयति	निर्णय करता है
	गच्छति	निर्गच्छति	निकालता है
	ईक्षते	निरीक्षते	निगरानी करता है
दुस्	चरति	दुश्चरति	दुराचार करता है
दुर्	गच्छति	दुर्गच्छति	दुःख भोगता है
वि	तरति	वितरति	बाँटता है
	चरति	विचरति	टहलता है
आ	नयति	आनयति	लाता है
	गच्छति	आगच्छति	आता है
नि	गृह्णाति	निगृह्णति	निगलता है
	सीदति	निषीदति	बैठता है
अधि	वसति	अधिवसति	निवास करता है
अपि	धत्ते	अपिधत्ते	ढाँकता है
	गिरति	अपिगिरति	स्तुति करता है
अति	रिच्यते	अतिरिच्यते	बढ़ता है
सु	करोति	सुकरोति	अच्छा काम करता है
	चरति	सुचरति	अच्छा आचरण करता है
उत्	हरति	उद्धरति	उद्धार करता है
	नयति	उन्नयति	उन्नति करता है
अभि	जानाति	अभिजानाति	पहचानता है
प्रति	वदति	प्रतिवदति	जवाब देता है
	ईक्षते	प्रतीक्षते	प्रतीक्षा करता है
परि	नयति	परिणयति	विवाह करता है
उप	वदति	उपवदति	खुशामद करता है
	वसति	उपवसति	उपवास करता है

प्रत्यय

संस्कृत में सार्थक शब्दों को 'पद' कहते हैं। किसी 'पद' की 'व्युत्पत्ति' का अर्थ है – उस पद विशेष का रूप निर्माण किस प्रकार हुआ अर्थात् किस प्रकृति और प्रत्यय के मेल से हुआ, यह बताना। किसी शब्द के मूल रूप को 'प्रकृति' कहते हैं। उसमें बाद में लगने वाले शब्दांश को 'प्रत्यय' कहते हैं।

यहाँ यह याद रखना जरूरी है कि संस्कृत में संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण को नामपद कहते हैं। धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त के अतिरिक्त जो शब्द अर्थयुक्त हो उसे प्रातिपदिक कहते हैं। कृदन्त, तद्धितान्त और समास भी प्रातिपदिक कहलाते हैं। जिस प्रातिपदिक के अंत में सुप् विभक्ति हो और जिस धातु के अंत में तिङ् विभक्ति हो उसे पद कहते हैं। सुप् और तिङ् को विभक्ति कहते हैं, हालाँकि वे एक तरह के प्रत्यय ही हैं।

सुप् नाम पदों के कारक विभक्ति और वचन को बताते हैं। यथा राम+सु = रामः

तिङ् धातु पदों के काल, पुरुष और वचन को बताते हैं। यथा भू + तिप् = भवति

मुख्य रूप से प्रत्यय दो प्रकार के हैं – कृत प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय ।

स्त्री प्रत्यय – जो नाम पदों का स्त्री वाची रूप बताते हैं। यथा – छात्र+टाप् = छात्रा

कृत् प्रत्यय

ये प्रत्यय धातु के अंत में लगते हैं और इनसे बने शब्द संज्ञा, विशेषण और अव्यय होते हैं। कृत् प्रत्यय जिन शब्दों के अन्त में लगे रहते हैं उन्हें 'कृदन्त' शब्द कहते हैं। इसके अंतर्गत आनेवाले मुख्य प्रत्यय हैं –

क्त्वा प्रत्यय

पहले होने वाली क्रिया को सूचित करने के लिए धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगाया जाता है। 'क्त्वा' प्रत्यय का अर्थ 'करके' होता है। क्त्वा का क् वर्ण का लोप होता है। शेष 'त्वा' धातु के पश्चात् जुड़ता है। कुछ जगह 'त्वा' के पहले धातु में 'इ' भी जुड़ता है। जैसे – पठ्+क्त्वा = पठित्वा

क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द

मूलधातु	प्रत्यय	कृदन्त	अर्थ
हस्	क्त्वा	हसित्वा	हँसकर
वद्	क्त्वा	उदित्वा	बोलकर
ग्रह्	क्त्वा	गृहीत्वा	लेकर
प्रच्छ्	क्त्वा	पृष्ट्वा	पूछकर
भू	क्त्वा	भूत्वा	होकर
कृ	क्त्वा	कृत्वा	करके
दृश्	क्त्वा	दृष्ट्वा	देखकर
लिख्	क्त्वा	लिखित्वा	लिखकर

ल्यप् प्रत्यय

ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग तब होता है जब धातु के पूर्व उपसर्ग का प्रयोग होता है। तब 'क्त्वा' की जगह ल्यप् लगता है। ल्यप् प्रत्यय के 'ल्' एवं 'प्' वर्णों का लोप होता है केवल 'य' वर्ण शेष रहता है और धातु के पश्चात् जुड़ जाता है। इनसे बनने वाले शब्द अव्यय होते हैं।

ल्यप् प्रत्ययान्त शब्द

उपसर्ग	धातु	प्रत्यय	कृदन्त	अर्थ
अनु	भू	ल्यप्	अनुभूय	अनुभव कर
आ	दा	ल्यप्	आदाय	लेकर
उत्	पत्	ल्यप्	उत्पत्य	उड़कर
प्र	स्था	ल्यप्	प्रस्थाय	चलकर
आ	गम्	ल्यप्	आगत्य	आकर
प्र	नम्	ल्यप्	प्रणम्य	प्रणाम कर
सम्	पठ्	ल्यप्	संपठ्य	पढकर
सम्	श्रु	ल्यप्	संश्रुत्य	सुनकर
नि	पा	ल्यप्	निपीय	पीकर
वि	हस्	ल्यप्	विहस्य	हँसकर
वि	हा	ल्यप्	विहाय	छोड़कर
आ	नी	ल्यप्	आनीय	लाकर
परि	ईक्ष्	ल्यप्	परीक्ष्य	परीक्षा लेकर
उत्	लिख्	ल्यप्	उल्लिख्य	ऊपर लिखकर
वि	क्री	ल्यप्	विक्रीय	बेचकर
आ	हन्	ल्यप्	आहत्य	घायल कर
सम्	पूज्	ल्यप्	सम्पूज्य	पूजा कर
प्र	दा	ल्यप्	प्रदाय	देकर
अधि	इ	ल्यप्	अधीत्य	पढ़कर

शतृ प्रत्यय

किसी क्रिया के वर्तमानकाल में होते रहने के अर्थ में धातु के साथ शतृ प्रत्यय लगता है। शतृ का प्रयोग सिर्फ परस्मैपद धातुओं के साथ होता है। शतृ में 'अत्' शेष रहता है। इसका लिङ्‌ग के अनुसार रूप बदलता है।

शतृ प्रत्ययान्त शब्द (परस्मैपद)

मूलधातु	प्रत्यय	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	अर्थ
गम्	शतृ	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्	जाता हुआ
लिख्	शतृ	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्	लिखता हुआ
धाव्	शतृ	धावन्	धावन्ती	धावत्	दौड़ता हुआ
स्था	शतृ	तिष्ठन्	तिष्ठन्ती	तिष्ठत्	ठहरता हुआ
नृत्	शतृ	नृत्यन्	नृत्यन्ती	नृत्यत्	नाचता हुआ
श्रु	शतृ	श्रृण्वन्	श्रृण्वन्ती	श्रृण्वत्	सुनता हुआ
कृ	शतृ	कुर्वन्	कुर्वती	कुर्वत्	करता हुआ
नम्	शतृ	नमन्	नमन्ती	नमत्	नमस्कार करता हुआ
स्मृ	शतृ	स्मरन्	स्मरन्ती	स्मरत्	याद करता हुआ
इष्	शतृ	इच्छन्	इच्छन्ती	इच्छत्	चाहता हुआ
अस्	शतृ	सन्	सती	सत्	होता हुआ
दा	शतृ	ददत्	ददती	ददत्	देता हुआ
कथ्	शतृ	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्	करता हुआ
पठ्	शतृ	पठन्	पठन्ती	पठत्	पढ़ता हुआ
दृश	शतृ	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्	देखता हुआ
घ्रा	शतृ	जिघ्रन्	जिघ्रन्ती	जिघ्रत्	सूँघता हुआ
जि	शतृ	जयन्	जयन्ती	जयत्	जीतता हुआ

शानच् प्रत्यय

शानच् प्रत्यय में 'श्' और 'च्' का लोप हो जाता है। 'आन' बचता है। इसके पूर्व में अकार रहने पर 'मुक्' (म्) का आगम हो जाता है और उससे मिलने पर 'मान' रूप सामने आता है। इसका भी लिंग के अनुसार रूप बदलता है।

शानच् प्रत्ययान्त शब्द (आत्मनेपद)

मूलधातु	प्रत्यय	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	अर्थ
वृत्	शानच्	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्	होता हुआ
लभ्	शानच्	लभमानः	लभमाना	लभमानम्	प्राप्त करता हुआ
सेव्	शानच्	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्	सेवा करता हुआ
वन्द्	शानच्	वन्दमानः	वन्दमाना	वन्दमानम्	वंदना करता हुआ
विद्	शानच्	विद्यमानः	विद्यमाना	विद्यमानम्	होता हुआ
वृध्	शानच्	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्	बढ़ता हुआ
मन्	शानच्	मन्यमानः	मन्यमाना	मन्यमानम्	मानता हुआ
कृ	शानच्	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्	करता हुआ
आस्	शानच्	आसीनः	आसीना	आसीनम्	बैठता हुआ
शीङ्.	शानच्	श्यानः	शयाना	शयानम्	सोता हुआ

क्त, क्तवतु

भूतकालिक क्रियापदों के निर्माण के लिए धातु (क्रिया) के साथ 'क्त' अथवा 'क्तवतु' प्रत्यय लगाए जाते हैं। इसमें 'क्त' प्रत्यय के योग से बने पदों का प्रयोग कर्मवाच्य या भाववाच्य में होता हैऔर 'क्तवतु' प्रत्यय के योग से बने क्रिया पदों का प्रयोग केवल कर्तृवाच्य में किया जाता है।

क्त प्रत्यय

मूलधातु	प्रत्यय	पुल्लिङ्.ग	स्त्रीलिङ्.ग	नपुंसकलिङ्.ग	अर्थ
(परस्मैपद)					
पठ्	क्त	पठितः	पठिता	पठितम्	पढ़ा गया
हस्	क्त	हसितः	हसिता	हसितम्	हँसा गया
प्रच्छ्	क्त	पृष्टः	पृष्टा	पृष्टम्	पूछा गया
दृश्	क्त	दृष्टः	दृष्टा	दृष्टम्	देखा गया
ब्रू/वच्	क्त	उक्तः	उक्ता	उक्तम्	कहा गया
प	क्त	पीतः	पीता	पीतम्	पिया गया
कृ	क्त	कृतः	कृता	कृतम्	किया गया
श्रु	क्त	श्रुतः	श्रुता	श्रुतम्	सुना गया
खाद्	क्त	खादितः	खादिता	खादितम्	खाया गया

क्तवतु प्रत्यय

मूलधातु	प्रत्यय	पुल्लिङ्.ग	स्त्रीलिङ्.ग	नपुंसकलिङ्.ग	अर्थ
(परस्मैपद)					
कृ	क्तवतु	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्	कर चुका
दा	क्तवतु	दत्तवान्	दत्तवती	दत्तवत्	दे चुका
दृश	क्तवतु	दृष्टवान्	दृष्टवती	दृष्टवत्	देख चुका
नम्	क्तवतु	नतवान्	नतवती	नतवत्	नमस्कार कर चुका
पा	क्तवतु	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्	पी चुका
गम्	क्तवतु	गतवान्	गतवती	गतवत्	जा चुका
क्री	क्तवतु	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्	खरीद चुका
ब्रू/वच्	क्तवतु	उक्तवान्	उक्तवती	उक्तवत्	कह चुका
श्रु	क्तवतु	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्	सुन चुका

तुमुन् प्रत्यय – 'के लिए' इस अर्थ में धातु के साथ तुमुन प्रत्यय लगता है। इसमें 'तुम' शेष रहता है। इस प्रत्यय से बनने वाले शब्द अव्यय होते हैं।

मूलशब्द	प्रत्यय	कृदन्त	अर्थ
लिख्	तुमुन्	लेखितुम्	लिखने के लिए
स्मृ	तुमुन्	स्मर्तुम्	याद करने के लिए
दा	तुमुन्	दातुम्	देने के लिए
नी	तुमुन्	नेतुम्	ले जाने के लिए
पा	तुमुन्	पातुम्	पीने के लिए
श्रु	तुमुन्	श्रोतुम्	सुनने के लिए
दृश्	तुमुन्	द्रष्टुम्	देखने के लिए
अधि–इ	तुमुन्	अध्येतुम्	अध्ययन करने के लिए
क्री	तुमुन्	क्रेतुम्	खरीदने के लिए

तव्यत् और अनीयर्

तव्यत् और अनीय्र प्रत्यय का प्रयोग 'चाहिए' अथवा 'योग्य' अर्थ में होता है। इनसे बने क्रिया पदों का प्रयोग केवल कर्मवाच्य में होता है। तव्यत् में 'तव्य' शेष रहता है जबकि 'अनीयर् में 'अनीय' शेष रहता है।

धातु	**प्रत्यय**	**कृदन्त**	**अर्थ**
दृश्	तव्यत्	द्रष्टव्यः	देखना चाहिए
प्रच्छ्	तव्यत्	प्रष्टव्यः	पूछना चाहिए
दा	तव्यत्	दातव्यः	देना चाहिए
श्रु	तव्यत्	श्रोतव्यः	सुनना चाहिए
ग्रह	तव्यत्	ग्रहीतव्यः	ग्रहण करना चाहिए
ज्ञा	तव्यत्	ज्ञातव्यः	जानना चाहिए
कृ	तव्यत्	कर्तव्यः	करना चाहिए
पा	तव्यत्	पातव्यः	पीना चाहिए
भू	तव्यत्	भवितव्यः	होना चाहिए

अनीयर् प्रत्ययान्त शब्द

धातु	प्रत्यय	कृदन्त शब्द	अर्थ
कृ	अनीयर्	करणीयः	करना चाहिए
स्मृ	अनीयर्	स्मरणीयः	स्मरण करना चाहिए
दृश्	अनीयर्	दर्शनीयः	देखना चाहिए
पा	अनीयर्	पानीयम्	पीना चाहिए
भू	अनीयर्	भवनीयः	होना चाहिए
स्था	अनीयर्	स्थानीयः	ठहरना चाहिए
धाव्	अनीयर्	धावनीयः	दौड़ना चाहिए
दा	अनीयर्	दानीयः	देना चाहिए
श्रु	अनीयर्	श्रवणीयः	सुनना चाहिए

तद्धित प्रत्यय

तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण में लगते हैं। धातुओं को छोड़कर शेष सभी प्रकार के शब्दों से जिन प्रत्ययों को लगाकर कुछ विशेष अर्थ निकाला जाता है, उसे तद्धित प्रत्यय कहते हैं। तद्धति प्रत्यय से बने शब्द तद्धितान्त कहलाते हैं।

अण् प्रत्यय – तद्धित प्रत्ययों में अण् प्रत्यय प्रमुख है। इसका प्रयोग कई अर्थों में होता है, यथा :– भाववाचक संज्ञा पद बनाने में, अपत्य (संतान) वाची शब्द में, देवतावाची शब्द में, पढ़ने के अर्थ में, जानने के अर्थ में, समूह के अर्थ में आदि। अण् में ण् का लोप हो जाता है। जैसे –

मनु + अण्	–	मानवः (मनु की संतान)
रघु + अण्	–	राघवः (रघु की संतान)
पाण्डु + अण्	–	पाण्डवः (पाण्डु का पुत्र)
शिव + अण्	–	शैवः (शिव देवता वाला)
व्याकरण + अण्	–	वैयाकरणः (व्याकरण को पढ़ने या जानने वाला)
कपोत + अण्	–	कापोतम् (कबूतरों का झुंड)
बक + अण्	–	बाकम् (बगुलों का झुंड)

मतुप् (मत्, वत्) प्रत्यय

वह इसमें है या वह इसका है इस अर्थ में मतुप् का प्रयोग होता है। मतुप् के पहले 'अ' स्वर रहने पर 'म' का 'व' हो जाता है। शब्द में केवल 'मान' जुड़ता है। जैसे –

अंशु + मतुप्	–	अंशुमान् (किरणों वाला)
बुद्धि + मतुप्	–	बुद्धिमान् (बुद्धिवाला)
बल + मतुप्	–	बलवान् (बलवाला)
गुण + मतुप्	–	गुणवान् (गुणवाला)
धन + मतुप्	–	धनवान् (धनवाला)

इनि प्रत्यय

वह इसमें है या वह इसका है इस अर्थ में 'इनि' प्रत्यय का प्रयोग होता है। शब्द में जोड़ते समय केवल 'इन्' जुड़ता है। जैसे –

बल + इनि	–	बलिन् यानी बली (बलवान)
गुण + इनि	–	गुणिन् यानी गुणी (गुणवान)
दान + इनि	–	दानिन् यानी दानी (दान देने वाला)
माया+इनि	–	मायिन् यानी मायी (मायावाला)
ज्ञान + इनि	–	ज्ञानिन् यानी ज्ञानी (ज्ञानयुक्त)

ठक् प्रत्यय

उसे जानता है या उसको पढ़ता है आदि अनेक अर्थ में ठक् प्रत्यय का प्रयोग होता है। शब्द में जोड़ते समय केवल 'इक' जुड़ता है। जैसे –

वेद + ठक्	–	वैदिकः
लोक + ठक्	–	लौकिकः
न्याय + ठक्	–	नैयायिकः
साहित्य + ठक्	–	साहित्यिकः

पुराण + ठक्	–	पौराणिकः
समाज + ठक्	–	सामाजिकः
धर्म + ठक्	–	धार्मिकः

त्व प्रत्यय

इसका प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने में होता है। त्व प्रत्यय युक्त शब्द नपुंसक लिंग में होते हैं। जैसे –

पशु + त्व	–	पशुत्वम् (पशु का गुण)
गुरु + त्व	–	गुरुत्वम् (गुरुता का गुण)
पुंस् + त्व	–	पुंस्त्वम् (पौरुष गुण)

त्रल् प्रत्यय

त्रल् प्रत्ययांत शब्द अव्यय शब्द होते हैं। इसका प्रयोग सप्तमी विभक्ति बताने के लिए सर्वनाम आदि शब्दों में होता है। जोड़ते समय केवल 'त्र' जुड़ता है। यथा – आत्मा कुत्र निवसति। आत्मा सर्वस्मिन् निवसति।

किम् + त्रल्	–	कुत्र (कहाँ)
अन्य + त्रल्	–	अन्यत्र (दूसरी जगह)
तद् + त्रल्	–	तत्र (वहाँ)

तमप् प्रत्यय

जब अनेक में से एक के गुण को सबसे अधिक या कम बतलाना हो तो, 'तमप्' प्रत्यय जोड़ा जाता है। यह विशेषण की उत्तमावस्था है। इसमें धातु में जोड़ते समय केवल 'तम' जुड़ता है। जैसे –

अल्प + तमप्	–	अल्पतमः (सबसे थोड़ा)
लघु + तमप्	–	लघुतमः (सबसे छोटा)
स्थूल + तमप्	–	स्थूलतमः (सबसे मोटा)

तरप् प्रत्यय

जब दो में से एक को गुण में दूसरे से अधिक या कम बतलाना हो तो 'तरप' प्रत्यय जोड़ा जाता है। यह विशेषण की उत्तरावस्था है। इसमें धातु में जोड़ते समय केवल 'तर' जुड़ता है।

जैसे –

अल्प + तरप्	–	अल्पतरः (तुलनात्मक रूप से थोड़ा)
लघु + तरप्	–	लघुतरः (तुलनात्मक रूप से छोटा)
स्थूल + तरप्	–	स्थूलतरः (तुलनात्मक रूप से मोटा)

धा

संख्यावाची शब्दों में 'प्रकार' अर्थ में लगने वाला प्रत्यय है। इससे बना शब्द अव्यय हो जाता है। –

एक + धा	–	एकधा (एक प्रकार से)
द्वि + धा	–	द्विधा (दो प्रकार से)
त्रि + धा	–	त्रिधा (तीन प्रकार से)
पञ्च + धा	–	पञ्चधा (पाँच प्रकार से)
बहु + धा	–	बहुधा (अनेक प्रकार से)
शत + धा	–	शतधा (सौ प्रकार से)
सहस्र + धा	–	सहस्रधा (हजारों प्रकार से)

ठञ्

उसमें होने वाला के अर्थ में यह प्रत्यय लगता है। इसमें इक शेष रहता है।

तत्काल + ठञ्	–	तात्कालिकः (उसी समय में होने वाला)
दिन + ठञ्	–	दैनिकः (रोज होने वाला)
सप्ताह + ठञ्	–	साप्ताहिकः (सप्ताह में होने वाला)
पक्ष + ठञ्	–	पाक्षिकः (पक्ष 15 दिन में होने वाला)
वर्ष + ठञ्	–	वार्षिकः (वर्ष में होने वाला)

मयट् – (मय)

वाक् + मयट्	–	वाङ्.मयम्
चित् + मयट्	–	चिन्मयम्
स्वर्ण + मयट्	–	स्वर्णमयम्

कारक प्रकरण

किसी वाक्य में अनेक शब्द होते हैं। वाक्य में जिन शब्दों का क्रिया के साथ सीधा संबंध होता है, उन शब्दों को 'कारक' कहते हैं। दूसरे शब्दों में क्रिया के सम्पादन में जो पद सहायक होते हैं, उन्हें 'कारक' कहते हैं।

यथा :–

1. कः पठति ? – छात्रः पठति। (कर्ता 'छात्र' क्रिया का सम्पादनकर्ता है)
2. किं पठति ? – संस्कृतं पठति। (कर्ता 'छात्र' क्रिया द्वारा संस्कृत (कर्म) को पाना चाहता है)
3. कथं पठति ? – मनसा पठति (कर्ता की क्रिया मन (करण) की सहायता लेता है।
4. कस्मै पठति ? – ज्ञानाय पठति। (कर्ता 'छात्र' क्रिया का ज्ञान (सम्प्रदान) प्राप्ति के लिए हो रहा है)
5. कस्मात् पठति ? – आचार्यात् पठति। (कर्ता आचार्य (अपादान) से पढ़कर ज्ञान प्राप्त करता है।
6. कस्मिन् पठति ? – विद्यालये पठति। (कर्ता 'छात्र' क्रिया का आधार विद्यालय (अधिकरण) है)

छात्रः संस्कृतं मनसा ज्ञानाय आचार्यात् विद्यालये पठति इस वाक्य में निहित पदों का किसी न किसी रूप में 'पठति' क्रिया से संबंध है। अतः ये सभी कारक पद हैं। इन्हें क्रमशः कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण कारक कहते हैं।

इस प्रकार संस्कृत में छः कारक होते हैं :–

कर्ता कारक	कर्म कारक
करण कारक	सम्प्रदान कारक
अपादान कारक	अधिकरण कारक

"कर्ता कर्म करणं च सम्प्रदानं तथैव च,
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्"

संस्कृत में 'सम्बन्ध' और 'सम्बोधन' को कारक नहीं माना जाता, क्योंकि क्रिया पद के सम्पादन में इनका सीधा संबंध नहीं होता। 'संबंध' में दो संज्ञाओं का संबंध होता है। जैसे :– 'सः रामस्य पुत्रोऽस्ति'। इस वाक्य में 'अस्ति' क्रिया है इस क्रिया से 'राम' का कोई संबंध नहीं है, बल्कि 'पुत्र' से संबंध है जो क्रिया नहीं, संज्ञा है। दूसरी तरफ 'सम्बोधन' प्रथमा का ही रूप है। इसका संबंध भी क्रिया से सीधा नहीं होता है। जैसे :–

"हे राम! त्वं मित्रस्य गृहं गच्छ।"

कारक और विभक्ति

क्रिया के साथ संज्ञा शब्दों का संबंध बतलाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है वे ही 'विभक्ति' कहलाते हैं। यथा –

विभक्ति	कारक	कारक चिह्न (हिन्दी में)
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, के द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	को, के लिए
पञ्चमी	अपादान	से (अलग होने के अर्थ में)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	सम्बोधन	हे, अरे

कारकों का संक्षिप्त परिचय

कर्ता कारक – जो क्रिया को सम्पादित् करता है उसे कर्ता कारक कहते हैं।

कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है।

1) अहं पुस्तकं पठामि।

2) त्वं पाठशालां गच्छसि।

कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है।

1) मया पुस्तकं पठयते। ('पुस्तकम्' प्रथमा में है)

2) त्वया पाठशाला गम्यते।

सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है।

1) हे बालक! किं त्वं पाठशालां गच्छसि ?

2) भो राम! अत्र आगच्छ।

कर्म कारक – कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसको सबसे अधिक चाहता है, उसे 'कर्म कारक' कहते हैं। कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे :– ''आवाम् ईश्वरं भजावः।'' इस वाक्य में 'आवाम्' कर्ता है और 'भजावः' क्रिया पद द्वारा 'ईश्वर' को सर्वाधिक रूप से पाना चाहते हैं। अतः 'ईश्वर' कर्म कारक है और उसमें द्वितीया विभक्ति है।

अन्य उदाहरण –

ते प्रश्नं पृच्छन्ति।

युवां ग्रामं गच्छथः।

शिशुः दुग्धं पिबति।

सीता आपणम् अगच्छत्।

त्वम् ओदनं भक्षय।

रेखाड्.कित पदों में द्वितीया विभक्ति है।

करण कारक – कर्ता अपनी क्रिया के सम्पादन के लिए जिसकी सहायता लेता है, उसे 'करण कारक' कहते हैं। करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे :– ''बालकः कन्दुकेन क्रीडति।'' इस वाक्य में ''बालकः'' कर्ता कारक है। 'क्रीडति' क्रिया पद है। बालक (कर्ता) अपनी क्रिया खेलने हेतु 'कन्दुक' की सहायता लेता है, अतः 'कन्दुक' करण कारक है। 'कन्दुक' में तृतीया विभक्ति है।

उदाहरण – 1) सः नेत्राभ्याम् पश्यति।

2) अहं कलमेन निबन्धम् अलिखम्

3) बालिका द्विचक्रिकया पाठशालां गता।

कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है :–

1) रामेण हतो बाली।

2) युष्माभिः पुस्तकं पठ्यते।

3) मया गृहं गम्यते।

भाववाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

1) मया सुप्यते।

2) आवाभ्याम् सुप्यते।

3) अस्माभिः सुप्यते।

सम्प्रदान कारक – कर्ता जिसको कोई वस्तु देता है या जिसके लिए कोई कार्य करता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे–शिक्षकः बालकाय पुस्तकं ददाति। इस वाक्य में बालक के लिए किताब दी जाती है अतः बालक सम्प्रदान कारक है। उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

उदाहरण :–

राजा विप्राय धेनुं ददाति।

सर्वकारः छात्रेभ्यः वृत्तिं यच्छति।

असौ दरिद्राय वस्त्रं यच्छति।

पिता पुत्राय क्रुध्यति।

सा पत्ये गायति।

रेखांकित पदों में चतुर्थी विभक्ति है।

अपादान कारक – जिससे कोई वस्तु अलग होती है उसे अपादान कारक कहते हैं। उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। इस उदाहरण में पत्ते वृक्ष से अलग होते हैं। अतः 'वृक्ष' शब्द 'अपादान कारक' है और उसमें पञ्चमी विभक्ति है।

उदाहरण :–

देवदत्तः ग्रामात् आयाति।

गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।

माता कूपात् जलम् आनयति।

छात्राः विद्यालयात् आगच्छन्ति।

प्रासादात् बालः अवतरत्।

रेखाङि्.कित पदों में अपादान कारक है और उनमें पञ्चमी विभक्ति हुई है।

सम्बन्ध – जब वाक्य में स्थित एक शब्द का दूसरे शब्द के साथ सम्बन्ध बताना होता है तो षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है, जैसे :–

इदं मम पुस्तकम् अस्ति।

रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्।

गङ्.गायाः जलं स्वच्छम् अस्ति।

रायपुरं छत्तीसगढस्य राजधानी अस्ति।

उपर्युक्त उदाहरणों में 'मम' आदि शब्दों का 'पुस्तक' आदि शब्दों से सम्बन्ध बताया गया है अतः रेखाङ्.कित पदों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

अधिकरण कारक – कर्ता के काम करने के आधार को 'अधिकरण' कारक कहते हैं। अर्थात् जिस स्थान पर कोई कार्य होता है उसे अधिकरण कहते हैं। इसमें सप्तमी विभक्ति लगती है। जैसे सिंह वने भ्रमति। इस वाक्य में 'सिंह' कर्ता के घूमने क्रिया का आधार 'वन' अधिकरण कारक है। उसमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

उदाहरण :–

बालाः मार्गे कूर्दन्ते।

सः शय्यायां शेते।

पात्रे जलम् अस्ति।

तिलेशु तैलम् अस्ति।

नगरे शान्तिः व्याप्ता।

रेखाङ्.कित पदों में अधिकरण कारक का प्रयोग हुआ है।

अशुद्धि संशोधन

संस्कृत लिखने तथा बोलने में विद्यार्थियों से जो व्याकरण की सामान्य भूलें होती हैं उनमें से कुछ अशुद्ध वाक्यों के द्वारा नीचे दी जा रही हैं। साथ में शुद्ध वाक्य भी दिए गए हैं।

लिंग, वचन और कारक की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
भवान् मम मित्रः असि।	भवान् मम मित्रम् अस्ति।
दशरथः प्राणं अत्यजत्।	दशरथः प्राणान् अत्यजत्।
रामो मम स्नेहपात्रः।	रामो मम स्नेहपात्रम्।
वेदाः प्रमाणानि।	वेदाः प्रमाणम्।
मित्रः मे प्राणः।	मित्रम् मे प्राणाः।
विंशत्यः बालिकाः पठन्ति।	विंशतिः बालिकाः पठन्ति।
नगरस्य परितः उद्यानमस्ति।	नगरं परितः उद्यानमस्ति।
बालकम् अध्ययनं न रोचते।	बालकाय अध्ययनं न रोचते।
रामस्य सह सीता वनमगच्छत्।	रामेण सह सीता वनमगच्छत्।
स मयि क्रुध्यति।	स मह्यं क्रुध्यति।
सर्वान् नमः।	सर्वेभ्यो नमः।
त्वम् रामश्च तत्र अगच्छताम्।	त्वं रामश्च तत्र अगच्छतम्।
त्वम् अहं च तत्र गमिष्यथ।	अहं त्वं च तत्र गमिष्यावः।
महाराज्ञः आदेशः।	महाराजस्य आदेशः।
परमात्मस्य महिमां पश्य।	परमात्मनः महिमानं पश्य।
भवानस्य किं नाम।	भवतः किं नाम।
स चन्द्रमां पश्यति।	स चन्द्रमसं पश्यति।

अम्बे! त्राहि माम्।	अम्ब! त्रायस्व माम्।
अर्जुनोवाच।	अर्जुन उवाच।
हे देवागच्छ।	हे देव! आगच्छ।
बालो सुखेन शेते।	बालः सुखेन शेते।
तरुछायां सेवते।	तरुच्छायां सेवते।

सर्वनाम तथा विशेष्य और विशेषण की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**
इमं पुस्तकं पश्य।	इदं पुस्तकं पश्य।
सर्वाः नराः गच्छन्ति।	सर्वे नराः गच्छन्ति।
स इमं स्त्रीमपश्यत् स।	इमां स्त्रीमपश्यत्।
किंचिदन्यं वद।	किंचिदन्यद् वद।
सर्वासाम् प्रियो हरिः।	सर्वेषाम् प्रियो हरिः।
त्रयः सुन्दराः बालिका।	तिस्रः सुन्दर्यः बालिकाः।
मे भ्राता पठति।	मम भ्राता पठति।
स महति विपदि वर्तते।	स महत्यां विपदि वर्तते।

वर्ण तथा अव्ययों की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**
धनमान् बुद्धिवन्तं निन्दति।	धनवान् बुद्धिमन्तं निन्दति।
फलं गृहीतुम् इच्छामि।	फलं ग्रहीतुम् इच्छामि।।
धनुः सु शरान् योजय।	धनुषु शरान् योजय।
स मिथ्यां वदति।	स मिथ्या वदति।
रामः च शिवः गच्छतः।	रामः शिवश्च गच्छतः।

क्रिया में काल तथा आत्मनेपद परस्मैपद सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
त्वया गम्यसे	त्वया गम्यते।
अहं तत्र स्थामि	अहं तत्र तिष्ठामि।
सः चन्द्रं दृश्यति	सः चन्द्रं पश्यति।
राज्ञा प्रजाः पाल्यते	राज्ञा प्रजाः पाल्यन्ते।
छात्राः प्रश्नं जिज्ञासन्ति	छात्राः प्रश्नं जिज्ञासन्ते।

कृदन्त प्रत्ययों की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
भिक्षां ददन् बालः हसति	भिक्षां ददत् बालः हसति।
गृहम् आगत्वा पठामि	गृहम् आगत्य पठाामि।
रामः गुरुं सेवन् तिष्ठति	रामः गुरुं सेवमानः तिष्ठति।
त्वया वचांसि श्रोतव्यम्	त्वया वचांसि श्रोतव्यानि।
स पुष्पं दृष्टः	तेन पुष्पं दृष्टम्।

स्त्री प्रत्ययान्त पदों की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
बालः हंसां पश्यति	बालः हंसीं पश्यति।
सा अश्वी गच्छति	सा अश्वा गच्छति।
नृत्यती बाला शोभते	नृत्यन्ती बाला शोभते।
मया रुदन्ती नारी दृष्टा	मया रुदती नारी दृष्टा।

अपठितगद्यांशः

(1) भारतवर्षे षड् ऋतवः भवन्ति। तेषां वसन्तः प्रथमः अस्ति। वसन्तकालः मनोरमः वर्तते। एतस्मिन् समये न अति ऊष्मा न वा अति शीतलता। वसन्तकाले सुखदायकः अनिलः प्रवहति। वृक्षेषु लतासु सुन्दराणि विविधवर्णानि कुसुमानि शोभन्ते। पलाशपुष्पैः वनस्थली आरक्ता जायते। अस्मिन् काले क्षेत्राणि सस्यपूर्णानि दृश्यन्ते। जनाः नवान्नदर्शनेन प्रमुदिताः भवन्ति। ते फाल्गुनमासे होलिकोत्सव मन्यन्ते। ते सोल्लासं परस्परं मिलन्ति रागैः क्रीडन्ति च। एतस्मिन् ऋतौ प्रातः भ्रमणेन स्वास्थ्यं पुष्टं जायते। वसन्तकालः आनन्दोल्लासस्य कालः।

(2) परेषां उपकारः इति परोपकारः। प्रकृतिः अपि परोपकारं करोति। वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति। नद्यः परोपकाराय वहन्ति। ताः शीतलं जलं दत्वा जीवनदानं ददति। मेघाः अपि परोपकाराय वर्षन्ति। सूर्यचन्द्रनक्षत्रादयः च सर्वे परोपकारे संलग्नाः वर्तन्ते। परोपकारिणः सर्वस्वप्रियः भवति। परोपकाराय जनाः सदैव परकल्याणं कुर्वन्ति। परोपकारिणः जीवनं परहितार्थं समर्पितं भवति। वयं परोपकारं कुर्याम।

(3) यः ज्ञानं यच्छति शास्त्राणि शिक्षयति च सः शिक्षकः। ऋषिः आचार्यः गुरुः, अध्यापकः, उपाध्यायश्च इति अपि तस्य नामानि। भारतवर्षे प्राचीनकालादेव शिक्षकाय अति महत्वं प्रदत्तम्। तस्य स्थानं राज्ञः अपि उच्चतमम्। शिक्षकं बिना ज्ञानप्राप्तिः न सम्भवा। कवयः तं ईश्वरात् अपि श्रेष्ठः मन्यन्ते। अधुना भारतस्य राष्ट्रपतिना श्रेष्ठाः शिक्षकाः पुरस्क्रियन्ते। तस्मै श्रीगुरवे नमः।

(4) हिमालयः पर्वतेषु उच्चतमः। सः भारतवर्षस्य उत्तरदिशि तिष्ठति। सः वर्षपर्यन्तं हिमाच्छादितः अतः तस्य नाम हिमालयः। माउंट एवरेस्ट' इति नाम तस्य तुङ्गतमं शिखरम्। हिमालयात् गंगादयः अनेकाः नद्यः प्रभवन्ति। तासां जलं भारतीयानां जीवनम्। अतः हिमालयः भारतीयेभ्यः देवस्थानम् इव। तत्र अनेकानि तीर्थस्थानानि। बहवः तापसाः तत्र तपस्यां कुर्वन्ति। हिमालयः अस्माकं रक्षकः पोषकश्च।

(5) भारतवर्षे बहवः उत्सवाः सन्ति। अत्र वर्षपर्यन्तम् उत्सवाः भवन्ति। तेषु प्रमुखतमा दीपावली। एषः उत्सवः कार्तिकमासे कृष्णपक्षे अमावस्यां भवति। एतदर्थं जनाः स्वगृहाणि स्वच्छीकुर्वन्ति सुधया अवलिम्पन्ति। एतस्मिन् दिवसे विविधानि मिष्ठान्नानि पच्यन्ते। सन्ध्याकाले सर्वे नूतनवस्त्राणि धारयन्ति। धार्मिकाः जनाः लक्ष्मीदेवीं पूजयन्ति। ते दीपमालिकाभिः स्वगृहाणि सज्जीकुर्वन्ति। अतएव अस्य उत्सवस्य नाम् दीपावली इति। एषः उत्सवः ऋतुपरिवर्तनस्य नवधान्यप्राप्तेः च सूचयति।

(6) अस्माकं देशः भारतवर्षः अस्ति। भारतवर्षस्य भूमिः भारतीयानां जननी। वयं सर्वे भारतीयाः स्मः। अस्माकं भारतभूमिः सुजला सुफला सस्यश्यामला च। वयं अस्याः अन्नं जलं च गृहीत्वा मोदामहे। अस्माकं देशे हिमालयादयः अनेके पर्वताः सन्ति। पर्वतेभ्यः गंगादयः नद्यः प्रवहन्ति। एताः नद्यः भारतमहासागरे मिलन्ति। नदीनां तटेषु बहूनि तीर्थस्थानानि सन्ति। सुष्ठु उच्यते – जननी जन्मभूमिष्च स्वर्गादपि गरीयसी।

(7) कालिदासः कवीनां श्रेष्ठः कवि उच्यते। सः संस्कृतभाषायां सप्तग्रन्थान् अरचयत्। द्वे महाकाव्ये रघुवंशं कुमारसंभवं च। द्वे खण्डकाव्ये ऋतुसंहारः मेघदूतञ्च। त्रीणि नाटकानि मालविकाग्निमित्रं विक्रमोर्वशीयम् अभिज्ञानशाकुन्तलञ्च। एतत् शाकुन्तलं विदेशेषु अपि लोकप्रियमस्ति। कालिदासस्य उपमा प्रसिद्धा अस्ति। तस्य जन्मकालविषये जन्मस्थानविषये च विवादः वर्तते। किन्तु तस्य उज्जयिनीनगरेण सह घनिष्ठः सम्बन्धः इति निर्विवादः। अतः प्रतिवर्षः मध्यप्रदेशे उज्जयिन्यां कालिदासमहोत्सवः भवति।

पत्रलेखनम्

पितरम् प्रति पुत्रस्य पत्रम्

बिलासपुरतः
दिनाङ्कः ....

माननीय पितः,

चरणारविन्दयोः प्रणामाः।

मया भवतः पत्रं प्राप्तम्। अवगतं च निखिलं वृत्तम्। अहम् अध्ययनकर्मणि संलग्नोऽस्मि। अस्मिन्नेव मासे परीक्षा भविष्यति। अध्ययनं संतोषप्रदमस्ति तथापि वेपते मम हृदयम्।

परीक्षानन्तरं यथाशीघ्रं गृहम् आगमिष्यामि। अतएव यात्राव्ययार्थं पञ्चविंशतिरूप्यकाणि शीघ्रं प्रेषणीयानि।

भवान् मान्यायाः मातुः चरणयोः मम प्रणतिं कथयतु। गृहे गुरुजनेभ्यः नमः स्वस्ति च कनिष्ठाय। अन्यत् सर्वं कुशलम्। यदि किमपि नूतनं वृत्तं ग्रामस्य गृहस्य वा तदपि लेखनीयम्।

भवदीयः स्नेहपात्रः
लोचनः

पुत्रम् प्रति पितुः पत्रम्

बस्तरतः
दिनाङ्कः ....

प्रियवत्स लोचन!

शतं शुभानि भूयासुः।

गृहात् विद्यालयं गतस्य तव पञ्चदशदिवसाः व्यतीताः, किन्तु नैकमपि पत्रं प्राप्तम्। येन वयं चिन्ताग्रस्ताः स्मः। त्वदीया माता तु अति व्याकुला अस्ति।

किं छात्रावासे स्थानलाभः जातः न वा ? इति ज्ञातुम् इच्छामि। कदा भविष्यति ते वार्षिकपरीक्षा? सावधानचेतसा पठितव्यम्। न कदापि वृथा कालः क्षेपणीयः। रात्रौ जागरणमपि शरीरं रोगग्रस्तं करोति। शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनमित्यस्ति साधुवचनम्।

आशासे यत् त्वं तत्र प्रसन्नः असि। सर्वमिदं शीघ्रं सूचनीयम्।

अत्र सर्वे कुशलिनः। शुभमिति।

त्वदीयः
जगदेवः

मातरम् प्रति तनयायाः पत्रम्

सरगुजातः

दिनाङ्कः ....

श्रीमत्याः मातुश्चरणयोः

सादरं प्रणामाः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। भवदीयं कृपापत्रं अधिगतम् कुशलं समाचारैः अवगता अस्मि। सम्प्रति स्वाध्याये दत्तचित्ता अहम्।

अस्माकं प्रधानाचार्यः अति सरलः गम्भीरः एवं व्यवहारकुशलः अस्ति। सः छात्रान् छात्रांश्च पुत्र–पुत्रीवत् स्निह्यति, अस्माकं हितान् संरक्षति। अतो हि भवत्या काऽपि चिन्ता न विधेया।

संस्कृतस्य अध्ययनं प्रति मम विशिष्टा प्रवृत्तिः अस्ति। आशासे वार्षिकपरीक्षायां प्रथमश्रेण्यां सफला भविष्यामि। परीक्षानन्तरं गृहम् आगमिष्यामि।

श्रीमतः पितुश्चरणयोः मम नमनम् वाच्यम्। कृपया पत्रोतरं शीघ्रं देहि।

भवदाज्ञाकारिणी पुत्री

आयता

मित्रस्य मित्रं प्रति पत्रम्

जशपुरतः

दिनाङ्कः ....

प्रिय मित्र संजय!

नमस्ते।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। तव प्रेमपत्रं प्राप्य अतीव प्रसन्नोऽस्मि। ईश्वरस्य अनुकम्पया वयमपि अत्र कुशलिनः। मम विद्यालये ग्रीष्मावकाशः 13.5.2015 तिथेः प्रारम्भः भविष्यति। तव विद्यालयः कदा पिधास्यते?

अस्मिन् वर्षे ग्रीष्मावकाशे सपरिवारोऽहम् नैनीतालं गन्तुं इच्छामि। नगरमेतत् परं रमणीयम्। अतएव त्वमपि मया सह नैनीतालम् आगच्छ। आशासे यत् अत्रागमनेन त्वं माम् अनुगृहीतं करिष्यसि।

कुशलमन्यत्। परिचितेभ्यो नमः। पत्रोत्तरं देहि शीघ्रम्।

तव बन्धुः

रजनीकान्तः।

अवकाशार्थं प्रार्थनापत्रम्

सेवायाम् दिनाङ्कः ....

श्रीमान् प्राचार्यमहोदयः

शासकीयउच्चतरमाध्यमिकविद्यालयः

बस्तरम्

विषय :— दिनत्रयस्य अवकाशाय प्रार्थनापत्रम्

महोदयः,

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् अहम् ज्वरेण पीडिता अस्मि। अतः विद्यालयमागन्तुं न शक्नोमि। कृपया दिनत्रयस्यावकाशं स्वीकृत्य मामनुग्रहीष्यति।

सधन्यवादः

भवतां शिष्या

सरमा

कक्षा नवमी

निबन्धाः

विद्यालयः

एषः मम विद्यालयः।

अयं मम गृहस्य समीपे वर्तते।

मम कक्षायां पञ्चत्वारिंशत् छात्राः सन्ति।

मम विद्यालये एकः प्रधानाचार्यः अस्ति।

मम विद्यालये द्वादशः अध्यापकाः सन्ति।

ते स्वविषये प्रवीणाः सन्ति।

ते अस्मान् स्नेहेन पाठयन्ति।

मम विद्यालये एकः पुस्तकालयः अस्ति।

तत्र विविधानि पुस्तकानि सन्ति।

वयं तत्र गत्वा पुस्तकानि पठामः।

मम विद्यालये एकं मनोहरम् उद्यानमस्ति।

धेनुः

धिनोति प्रीणयति इति धेनुः।

जनाः धेनुं गौमाता अपि कथन्ति।

भारतदेशे गृहे गृहे धेनवः पालयन्ति।

धेनूनां चत्वारः पादाः भवन्ति।

तस्याः द्वे श्रृङ्.गे एकं लाङ्.गूलं च भवति।

धेनूनां विविधाःवर्णाः भवन्ति।

धेनवः तृणानि खादित्वा मधुरं पयः प्रयच्छन्ति।

धेनोः दुग्धेन, दधि, तक्रं, नवनीतं, धृतं च निर्मीयते।

धेनोः दुग्धं मधुरं पथ्यं हितकारि च भवति।

धेनोः वत्साः वलीवर्दाः भवन्ति।

सरस्वती

सरस्वती विद्यायाः देवी अस्ति।

एषा श्वेतपद्मासने विराजते।

एषा शरीरे शुभ्रं वस्त्रं धारयति।

अस्याः कण्ठे रत्नहाराः विलसन्ति।

अस्याः मस्तके किरीटं शोभते।

किरीटं रत्नखचितं वर्तते।

एषा वामेन हस्तेन वीणायाः दण्डं धारयति।

सरस्वत्याः वाहनं हंसः इति कथ्यते।

हंसस्य धवलः वर्णोऽपि चरित्रस्य उज्जवलतां बोधयति।

अस्याः हस्ते पुस्तकं ज्ञानस्य प्रतीकमस्ति।

उद्यानम्

एतद् उद्यानम् अस्ति।

अत्र विविधाः वृक्षाः रोहन्ति।

वृक्षाः पर्णैः पुष्पैः च शोभन्ते।

पक्वानि फलानि अपि वृक्षाणां भूषणानि।

जनाः वृक्षाणां फलानि भक्ष्यन्ति।

उपवने लताः अपि रोहन्ति।

उपवने विविधानि वर्णानि पुष्पाणि अपि सन्ति।

पुष्पेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति मधुपानं च कुर्वन्ति।

बालकाः उद्याने खेलन्ति प्रभाते सायंकाले च।

जनाः उद्याने शान्तिम् अनुभवन्ति।

पुस्तकम्

एतद् मम पुस्तकम् अस्ति।

एतद् तव पुस्तकम् अस्ति।

एतानि सर्वाणि पुस्तकानि सन्ति।

मम पुस्तके चित्राणि सन्ति।

एतानि चित्राणि रम्याणि सन्ति।

रमणीयं चित्रं मम चित्तं आनन्दयति।

सचित्रं पुस्तकं मम प्रियम्।

अहं पाठशालां गच्छामि पुस्तकं नयामि च।

पुस्तकैः ज्ञानं लभ्यते।

पुस्तकानि अस्माकं मित्राणि सदृशानि भवन्ति।